हिन्दी दैनिक

रोजनामा इन्डो गल्फ

www.Newsindogulf.com@gmail.com

सच्चाई में है दम, सच लिखते हैं हम

पटना रविवार | 30 जून 2024 | वर्ष : 02 | अंक : 48 | पृष्ठ -12 | PRGI NO - BIHHIN/2023/86924 | मूल्य - ₹ 3 | पटना संस्करण

ब्रीफ न्यूज

मनी लॉन्ड्रिंग मामले में ईडी की कार्रवाई, माकपा की भूमि बैंक में पड़े 73 लाख जब्त किए

एजेंसी

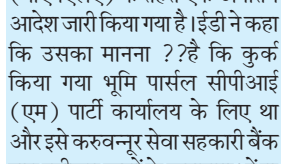

केरल: केरल में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के लिए मुसीबतें बढ़ाने वाले एक कदम में, प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने चल रही मनी लॉन्ड्रिंग जांच के तहत पार्टी से संबंधित 73 लाख रुपये के भूमि पार्सल और बैंक जमा पर हमला किया है। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार, करुवन्नूर सेवा सहकारी बैंक 'घोटाला'। उन्होंने कहा कि केरल के त्रिशूर जिले में 10 लाख रुपये की जमीन और पार्टी के पांच "अघोषित" बैंक खातों में रखी 63 लाख रुपये की बैंक जमा राशि जब्त करने के लिए धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत एक अनंतिम आदेश जारी किया गया है। ईडी ने कहा कि उसका मानना ??है कि कुर्क किया गया भूमि पार्सल सीपीआई (एम) पार्टी कार्यालय के लिए था और इसे करुवन्नूर सेवा सहकारी बैंक द्वारा स्वीकृत ऋणों के ऋणदाताओं या लाभार्थियों से कथित रिश्वत का उपयोग करके खरीदा गया था। यह मामले के अंतिम दो आरोपियों के "इकबालिया बयान" पर निर्भर था, जिन्होंने दावा किया था।

कार्यकारिणी बैठक में नीतीश कुमारने किया बड़ा ऐलान, कहा-

'अब हमेशा सत्तारुढ गठबंधन के साथ रहेंगे'

हम आपको बता दें कि दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में पार्टी के सभी सांसद, केंद्रीय मंत्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह तथा रामनाथ ठाकुर एवं बिहार और अन्य राज्यों के वरिष्ठ नेता शामिल हुए।

एजेंसी

नई दिल्ली: बिहार में सत्तारुढ़ गठबंधन का नेतृत्व कर रहे जनता दल युनाइटेड ने आज अपनी राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में कई अहम फैसले किये। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश और जनता दल यूनाइटेड (जदयू) के राष्ट्रीय अध्यक्ष नीतीश कुमार की अध्यक्षता में हुई पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक में सबसे बड़ा निर्णय यह लिया गया कि सांसद संजय झा पार्टी के कार्यकारी अध्यक्ष होंगे। इसके अलावा पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के समक्ष नीतीश कुमार ने घोषणा की कि वह अब हमेशा एनडीए गठबंधन का हिस्सा रहेंगे। माना जा रहा है कि नीतीश की इस घोषणा से उन अटकलों पर विराम लग गया है जिसके तहत अक्सर यह दावा कर दिया जाता है कि वह दोबारा इंडिया गठबंधन में लौटने की राह तलाश रहे हैं।खउञ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक के बाद पार्टी प्रवक्ता केसी त्यागी ने कहा, "..उन्होंने (उट नीतीश कुमार) राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सामने

घोषणा की है कि अब वे हमेशा ठऊअ गठबंधन का हिस्सा रहेंगे।" उन्होंने एक प्रश्न के उत्तर में कहा कि बिहार हाईकोर्ट द्वारा रोके गए आरक्षण को लेकर हम सुप्रीम कोर्ट जाएंगे। उन्होंने यह भी जानकारी दी कि राज्यसभा सांसद संजय झा को राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बनाया गया है। त्यागी ने साथ ही कहा कि पार्टी ने बिहार को विशेष दर्जा या विशेष वित्तीय पैकेज देने की केंद्र सरकार से मांग की है। इसके अलावा उन्होंने कहा कि जद (यू) ने प्रश्नपत्र लीक मामले के आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई किए जाने और परीक्षा में गड़बड़ी रोकने के लिए संसद में कठोर कानून पारित करने की मांग भी की है।हम आपको बता दें कि दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में पार्टी के सभी सांसद, केंद्रीय मंत्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह तथा रामनाथ ठाकुर एवं बिहार और अन्य राज्यों के वरिष्ठ नेता शामिल हुए। बताया जा रहा है कि इस बैठक में हाल में संपन्न हुए लोकसभा चुनावों के विश्लेषण के साथ ही 2025 में होने वाले विधानसभा चुनावों की रणनीति समेत कई अहम मुद्दों पर चर्चा की जा रही है। हम आपको बता दें कि दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में पार्टी के सभी सांसद, केंद्रीय मंत्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह तथा रामनाथ ठाकुर एवं बिहार और अन्य राज्यों के वरिष्ठ नेता शामिल हुए।

'स्पेशल पैकेज या विशेष राज्य का दर्जा, आरक्षण पर भी डिमांड'

नीतीश ने यूं बढ़ाई मोदी सरकार की टेंशन

एजेंसी

नई दिल्ली: जदयूकी बैठक में नीतीश कुमार के नेतृत्व वाली जनता दल-यूनाइटेड ने शनिवार को बिहार के लिए 'विशेष श्रेणी' का दर्जा देने की मांग करते हुए एक प्रस्ताव पारित किया।यह प्रस्ताव दिल्ली में पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक के दौरान लिया गया। बैठक में, बिहार के मुख्यमंत्री ने राज्य के लिए विशेष श्रेणी का दर्जा देने की वकालत करने का वादा किया, यह मांग पार्टी द्वारा पहले भी कई बार उठाई गई है। विशेष श्रेणी के दर्जे के लिए यह प्रयास विशेष रूप से उल्लेखनीय है क्योंकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की भाजपा केंद्र में सत्ता में बने रहने के लिए कुमार की जद (यू) के समर्थन पर निर्भर है, जिसके पास नवनिर्वाचित लोकसभा में 12 सीटें हैं। यह पिछले साल बिहार कैबिनेट द्वारा राज्य के लिए विशेष दर्जे की मांग का प्रस्ताव पारित करने के बाद आया है। सूत्रों से पता चला कि बैठक के दौरान पेश किए गए राजनीतिक प्रस्ताव में बिहार के लिए विशेष दर्जे की लंबे समय से चली आ रही मांग को दोहराया गया। विशेष दर्जा नहीं तो नीतीश कुमार की पार्टी की ओर से राज्य के लिए विशेष वित्तीय पैकेज की भी मांग की जा सकती है। पार्टी ने यह भी मांग की कि केंद्र सरकार अन्य पिछड़ा वर्ग, अत्यंत पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए उच्च आरक्षण को नौवीं अनुसूची में शामिल करे। यह मांग तब भी आई है जब पटना उच्च न्यायालय ने पिछड़े वर्गों के लिए 65 प्रतिशत कोटा लागू करने के बिहार सरकार के फैसले को अमान्य कर दिया था, जो राज्य के उद्घाटन जाति सर्वेक्षण पर आधारित था। जेडीयू की राष्ट्रीय बैठक वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य और 2025 में होने वाले आगामी बिहार विधानसभा चुनावों की तैयारियों की समीक्षा के लिए बुलाई गई थी। पार्टी ने कहा कि 2025 के चुनावों के लिए संगठन के सभी स्तरों पर पार्टी पदाधिकारियों के साथ त्रुटिहीन समन्वय और कार्यकर्ताओं के साथ निरंतर संवाद होना चाहिए, जिससे जदयू को लोकसभा चुनावों में भी बेहतर स्कोर करने में मदद मिली।

जजों की तुलना भगवान से करना सही नहीं है, अदालत और न्याय को लेकर CJI बड़ा बयान

एजेंसी

नई दिल्ली: भारत के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) डीवाई चंद्रचूड़ ने आज (29 जून) कहा कि भारत में न्यायाधीशों की तुलना भगवान से करने का चलन खतरनाक है क्योंकि न्यायाधीशों का काम जनहित की सेवा करना है। सीजेआई ने कहा कि जब उन्हें बताया जाता है कि अदालत न्याय का मंदिर है तो उन्हें अनिच्छा महसूस होती है क्योंकि मंदिर मानता है कि न्यायाधीश देवता की स्थिति में हैं। सीजेआई ने कहा कि बहुत बार, हमें ऑनर या लॉर्डशिप या लेडीशिप के रूप में संबोधित किया जाता है। बड़ा खतरा होता है जब लोग कहते हैं कि अदालत न्याय का मंदिर है. सीजेआई चंद्रचूड़ ने शनिवार सुबह कोलकाता में राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी के क्षेत्रीय सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा, यह एक गंभीर खतरा है कि हम खुद को उन मंदिरों में देवताओं के रूप में मानते हैं। मैं न्यायाधीश की भूमिका को लोगों के सर्वर के रूप में पुनः स्थापित करना चाहूँगा।

पूर्व उपराष्ट्रपति नायडू पर लिखी गई तीन पुस्तकों का विमोचन करेंगे प्रधानमंत्री मोदी

एजेंसी

नई दिल्ली:प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी रविवार को पूर्व उपराष्ट्रपति एम वेंकैया नायडू के 75वें जन्मदिन पर उन पर लिखी गई तीन पुस्तकों का विमोचन करेंगे। एक बयान में कहा गया कि यह कार्यक्रम हैदराबाद के गाचीबोवली स्थित ह्यअन्वया कन्वेंशन सेंटरह्ल में होगा और मोदी वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से पुस्तकों का विमोचन करेंगे। प्रधानमंत्री जिन पुस्तकों का विमोचन करेंगे उनमें पूर्व उपराष्ट्रपति की जीवनी ह्यवेंकैया नायडू - लाइफ इन सर्विसह्ल

शामिल है, जिसे ह्यद हिंदूह्ल के हैदराबाद संस्करण के पूर्व स्थानीय संपादक एस नागेश कुमार ने लिखा है। इसके अलावा ह्यसेलिब्रेटिंग भारत - द मिशन एंड मैसेज ऑफ श्री एम वेंकैया नायडू एज थर्टीथ वाइस

पूर्वी लद्दाख में नदी पार करने के दौरान सेना के पांच जवानों की मौत: राजनाथ

एजेंसी

नई दिल्ली: रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शनिवार को बताया कि पूर्वी लद्दाख में एक सीमावर्ती स्थान पर एक टैंक को नदी पार कराने की कोशिश के दौरान हुई दुर्घटना में सेना के पांच जवानों की मौत हो गई।सिंह ने इस हादसे के बाद, सोशल मीडिया मंच ह्यएक्सह्ल पर एक पोस्ट के जरिये शोक व्यक्त किया। उन्होंने कहा, ह्यह्यलद्दाख में एक टैंक को नदी पार कराते समय हुए दुर्भाग्यपूर्ण हादसे में भारतीय सेना के हमारे पांच बहादुर जवानों की जान जाने से मुझे गहरा दुख हुआ है।उन्होंने कहा, ह्यह्यहम अपने वीर जवानों द्वारा देश के

लिए की गई अनुकरणीय सेवा को कभी नहीं भूलेंगे। शोक संतप्त परिवारों के प्रति मेरी हार्दिक संवेदनाएं ह्लह्लसिंह ने कहा, ह्यह्यदुख की इस घड़ी में राष्ट्र उनके साथ खड़ा है।एक पोस्ट के जरिये शोक व्यक्त किया। उन्होंने कहा, ह्यह्यलद्दाख में एक टैंक को नदी पार कराते समय हुए दुर्भाग्यपूर्ण हादसे में भारतीय सेना के हमारे पांच बहादुर जवानों की जान जाने से मुझे गहरा दुख

प्रधानमंत्री मोदी पर सोनिया गांधी ने लगाया 'संविधान पर हमला' करने का आरोप, आपातकाल संबंधी टिप्पणी पर किया पलटवार

एजेंसी

नई दिल्ली: सोनिया गांधी ने आपातकाल संबंधी टिप्पणी को लेकर प्रधानमंत्री पर 'संविधान पर हमला' का आरोप लगाया। संसद के पहले सत्र में उपसभापति पद और एनईईटी मुद्दे पर सरकार और विपक्ष के बीच तीखी नोकझोंक के बीच कांग्रेस नेता सोनिया गांधी ने कहा कि इससे पता चलता है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 'टकराव को महत्व देते हैं', भले ही वे 'आम सहमति के मूल्य' का उपदेश देते हों।द हिंदू में एक संपादकीय में सोनिया गांधी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी अभी भी लोकसभा

चुनाव के नतीजों से उबर नहीं पाए हैं, जिसमें एनडीए कमजोर जनादेश के साथ सत्ता में वापस आया है।राज्यसभा सांसद ने कहा, "प्रधानमंत्री ऐसे काम कर रहे हैं, जैसे कुछ बदला ही नहीं है। वे आम सहमति के मूल्य का उपदेश देते हैं, लेकिन टकराव को महत्व देते हैं। उन्होंने आगे कहा, "दुखद रूप से 18वीं लोकसभा के पहले कुछ दिन उत्साहजनक नहीं रहे। कोई भी उम्मीद कि हम कोई बदलाव देखेंगे, धराशायी हो गई है।कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष ने कहा कि परंपरा के अनुसार लोकसभा में उपसभापति का पद विपक्ष को दिया जाना चाहिए था। उन्होंने कहा, "यह पूरी तरह से उचित अनुरोध उस शासन द्वारा अस्वीकार्य पाया गया, जिसने 17वीं लोकसभा में उपाध्यक्ष के संवैधानिक पद को नहीं भरा था।जबकि भाजपा की सहयोगी एआईएडीएमके के एम थम्बी दुरई एनडीए सरकार के पहले कार्यकाल में

जदयू की बैठक में नीतीश का बड़ा फैसला, संजय झा बनाए गए पार्टी के कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष

एजेंसी

नई दिल्ली: दिल्ली में जनता दल यूनाइटेड की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में बड़ा फैसला लिया गया है। नीतीश कुमार ने इस बैठक में राज्यसभा सांसद संजय झा को कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त किया है। आपको बता दें कि जब दिसंबर में जदयू की बैठक हुई थी तब ललन सिंह के जगह नीतीश कुमार एक बार फिर से अध्यक्ष बने थे। हालांकि, वह बिहार के मुख्यमंत्री भी हैं। ऐसे में उनके कामकाज के बोझ को कम करने के लिए इस बैठक में संजय झा को कार्यकारी अध्यक्ष

बनाने का फैसला लिया गया। इसके साथ ही इस बैठक में कई अहम प्रस्ताव भी पास हुए हैं। इस बैठक में बिहार को विशेष राज्य के दर्जे की मांग को लेकर भी प्रस्ताव पास हुआ। साथ ही जदयू की ओर से इस बात को लेकर भी प्रस्ताव पास हुआ है कि 2025 का चुनाव बिहार में एनडीए नीतीश कुमार के ही नेतृत्व में चुनाव लड़ेगा। हाल ही में संपन्न लोकसभा चुनावों में, जद-यू ने बिहार में जिन 16 सीटों पर चुनाव लड़ा था, उनमें से 12 पर जीत हासिल की। इसके अलावा, पार्टी को भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार के हिस्से के रूप में केंद्रीय मंत्रिमंडल में भी प्रतिनिधित्व मिला है।

महाराष्ट्र सरकार ने सभी धर्मों के वरिष्ठ नागरिकों के लिए तीर्थ दर्शन योजना की घोषणा

एजेंसी

महाराष्ट्र:महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने शनिवार को सभी धर्मों के वरिष्ठ नागरिकों के लिए मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना की घोषणा कर दी। मुख्यमंत्री ने कहा इस योजना से उन बुजुर्गों को मदद मिलेगी जो वित्तीय समस्याओं के कारण तीर्थ स्थलों पर नहीं जा पाते हैं।शिंदे ने राज्य विधानसभा में शिवसेना विधायक प्रताप सरनाईक के प्रस्ताव का जवाब देते हुए यह घोषणा की। मुख्यमंत्री ने कहा, ह्यह्यमुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना सभी धर्मों के वरिष्ठ नागरिकों के लिए होगी।उन्होंने कहा कि इस योजना के लिए नियम बनाए जाएंगे और सरकार सभी धर्मों के उन वरिष्ठ नागरिकों को तीर्थयात्रा की सुविधा प्रदान करेगी जो अपनी बदौलत यात्रा करने में असमर्थ हैं।अपनी मांग में सरनाईक ने कहा कि वरिष्ठ नागरिक वित्तीय समस्याओं के कारण तीर्थ यात्रा पर जाने का अपना सपना पूरा नहीं कर पाते हैं या उनके साथ जाने वाला कोई नहीं होता है और उन्हें इस बारे में कोई जानकारी भी नहीं होती है कि वे तीर्थ यात्रा पर कैसे जा जाएं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार को वरिष्ठ नागरिकों के लिए एक योजना शुरू करनी चाहिए और इसमें सभी धर्मों के तीर्थ स्थलों को शामिल करना चाहिए।

इस योजना के लिए नियम बनाए जाएंगे और सरकार सभी धर्मों के उन वरिष्ठ नागरिकों को तीर्थयात्रा की सुविधा प्रदान करेगी जो अपनी बदौलत यात्रा करने में असमर्थ हैं।

बिहार भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा का हुआ बैठक

संवाददाता

रोजनामा इंडो गल्फ,

पटना:-भाजपा प्रदेश कार्यालय पटना के कैलाशपति मिश्रा सभागार मे आज बिहार भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा मोर्चा द्वारा आयोजित बैठक मे 5 जुलाई को श्री कृष्ण मेमोरियल हॉल मे बिहार के सभी केंद्रीय मंत्रियो का अभिनन्दन समारोह की तैयारी एवं आगामी कार्यक्रम की बैठक माननीय प्रदेश अध्यक्ष जनाब कमरूजमा अंसारी साहब की अध्यक्षता में हुई।बैठक में बिहार प्रदेश के माननीय महामंत्री श्री मिथलेश तिवारी जी ,माननीय महामंत्री श्री राजेश वर्मा जी ने आगामी 5 जुलाई को होने वाले अभिनंदन समारोह की तैयारियों का जायजा लिया । बिहार भाजपा महामंत्री बड़े भाई सिवेश कुमार जी और महामंत्री माननीय जगन्नाथ ठाकुर जी ने भी इस बैठक में हिस्सा लिया और बिहार भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा के साथियों से

अपनी अपनी राय रखने को कहा । अल्पसंख्यक मोर्चा बिहार प्रदेश के महामंत्री बड़े भाई जनाब मोहिब्बूल हक साहब , उपाध्यक्ष जनाब नूर साहब , उपाध्यक्ष बड़े भाई राजन क्लैमेंट, उपाध्यक्ष जनाब फैयाज अली काजमी साहब, बिहार प्रदेश अल्पसंख्यक मोर्चा के आईटी एंड सोशल मीडिया संयोजक सैयद मोहम्मद अली साहब, भाजपा के वरिष्ठ नेता गया से आए बड़े भाई जनाब जेड एच खान साहब , सारण जिला के अध्यक्ष भाई मेराज अंसारी साहब और सभी लोगों ने अपनी बातों को बारी बारी से माननीयों के समक्ष रखा ।वहीं माले को छोड़ कर आए पटना ग्रामीण के भाई जनाब अहमद खान साहब को माननीय अध्यक्ष जनाब कमरूजमा साहब ने भाजपा की सदस्यता दिलाई और भाजपा परिवार में उनका स्वागत किया ।बैठक के बाद माननीय अध्यक्ष जी ने पूरे बिहार से आए हुए सभी ज़िलों के अध्यक्ष और साथियों का शुक्रिया अदा किया और 5 जुलाई 2024 को होने वाले अभिनंद समारोह को सफल बनाने की अपील की । बैठक का धन्यवाद ज्ञापन बड़े भाई महामंत्री बिहार भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा जनाब मोहिब्बुल हक साहब ने की ।

जय बिहार जय भाजपा

हिन्दी दैनिक

रोजनामा इन्डो गल्फ

www.Newsindogulf.com@gmail.com

सच्चाई में है दम, सच लिखते हैं हम

पटना,रविवार | 30 जून 2024 | वर्ष : 02 | अंक : 48 | पृष्ठ -12 | PRGI NO - BIHHIN/2023/86924 | मूल्य - ₹ 3 | पटना संस्करण

लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास बिहार प्रदेश द्वारा पार्टी के नव निर्वाचित सांसदों का अभिनन्दन समारोह सह

विशेष संवाददाता

लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास बिहार प्रदेश द्वारा पार्टी के नव निर्वाचित सांसदों का अभिनन्दन समारोह सह कार्यकर्ता सम्मान समारोह स्थानीय श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल में पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री राजू तिवारी जी की अध्यक्षता में आयोजित की गई। पार्टी के मुख्य प्रवक्ता राजेश भट्ट ने बताया कि कार्यक्रम में पार्टी के बिहार से जुड़े पार्टी के पांचों सांसद यथा श्रीमती वीणा देवी, श्रीमती शाम्भवी चौधरी, श्री अरूण भारती, श्री राजेश वर्मा समेत पार्टी के सभी राष्ट्रीय, प्रदेश के पदाधिकारी, सभी जिलों के पदाधिकारी, प्रखण्ड एवं पंचायत स्तर के पदाधिकारी शामिल हुयें। इस अवसर पर एक ओर जहां पार्टी के कार्यकताओं और सभी प्रदेश के नेताओं द्वारा सभी नव निर्वाचित पांचों सांसदों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री राजू तिवारी जी ने माननीय केन्द्रीय मंत्री श्री चिराग पासवान को चांदी का मुकुट, तलवार और शौल भेंट कर सम्मानित किया और उन्हें माला पहनाकर सभी सांसदों का स्वागत कियें। वहीं प्रदेश कमिटी द्वारा पार्टी के तीन हजार कार्यकताओं को अंगवस्त्र और प्रशस्ति पत्र देकर विगत लोकसभा चुनाव में समर्पित भाव से अपने दायित्व को निर्वहन करने के लिए सम्मानित किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केन्द्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री श्री चिराग पासवान जी ने विगत लोकसभा चुनाव में पार्टी के शानदार प्रदर्शन के लिए सभी नेताओं और कार्यकताओं के प्रति धन्यवाद ज्ञापित की और आभार जताया जिनके कड़ी मेहनत और अथक परिश्रम

के बदौलत पार्टी ने शानदार कृतिमान स्थापित किया है। जिसकी पूरे देश में चर्चा हो रही है। श्री चिराग ने आगे कहा कि विगत चुनाव में जहां पर विपक्ष ने साम दाम दंड भेद पूरी अपनी शक्ति लगा दी थी कि पूरी तरह एनडीए के प्रत्याशी को चुनाव हराया जाए। उन्होंने झूठ बोलने का काम किया गलत नॉरेटिव सेट करने का काम किया उन्होंने कभी आरक्षण को लेकर कभी संविधान को लेकर कभी लोकतंत्र को लेकर झूठी अफवाह फैलाने का काम किया ऐसा नहीं है कि कोई लोग उनकी बातों में नहीं गए कई ऐसी जगह है जहां उनकी इन बातों का असर हुआ उत्तर प्रदेश में जैसे जो प्रदर्शन की अपेक्षा थी वह प्रदर्शन नहीं हो सका मैं उन तमाम देश की जनता को आभार व्यक्त करूंगा जो झूठ को नकारते हुए एनडीए को विजय हासिल कराया। आगे श्री चिराग ने पार्टी के संस्थापक पद्म भुषण स्व0 रामविलास पासवान जी को स्मरण करते हुयें कहा कि सन 2000 से आज तक पार्टी का जब से गठन हुआ उन्होंने हमेशा अपने जीवन पर्यंत विपरीत परिस्थितियों से लड़ते रहे 2004 के लोकसभा चुनाव में पहली बार पार्टी ने लड़ने का काम किया चार सांसद उस समय हमारे जीत कर आयें। उसमें से एक सांसद रामा किशोर जी यहां मौजूद हैं तब से पार्टी ने कई विपरीत परिस्थितियों से गुजरते हुए 2014 में 7 में से 6 सांसद जीते उसके बाद लगातार पार्टी ने अपनी कंसंट्रेट कंसिस्टेंसी बरकरार रखी हम लोगों ने 2014 में साबित किया 2019 में और 2024 में पांचो की पांचों सांसद शत प्रतिशत स्ट्राइक रेट के साथ जीतकर साबित करने का काम किया 5 सीट पर लड़े और पांच की पांचों सीटों पर हमने जितने का काम किया कुछ दिनों पहले हमने भारतीय जनता पार्टी के सामने बात रखी कि अगर 5 सीट हमारी पार्टी को दिया गया। हमने जितने का काम किया अगर 10 सीट दिए गयें होते तो आज 10 सीट जीतकर आ जाता आज गठबंधन के भी साथी हम लोगों पर विश्वास करते हैं कि आज मुझे बहुत बेहद खुशी है कि लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास ने महिलाओं को युवाओं को आगे करने का काम किया है पूरा देश ने देखा कि यह पार्टी सिर्फ महिलाओं और युवाओं की सिर्फ बात नहीं करती बल्कि उन्हें उचित अधिकार भी देती है पार्टी ने लोकसभा चुनाव में 5 सीट में भी तीन युवा और दो महिलाओं को लड़ाने का प्रयास किया गया अब तक बिहार की चर्चा होती थी तो भ्रष्टाचार के लिए होता था अत्याचार के लिए होता था लुट के लिए होता था।

नई दिल्ली में दरभंगा सांसद गोपाल जी ठाकुर ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी से मुलाकात कर मिथिला परंपरा अनुसार पाग, चादर एवं मखान माला से सम्मानित किये तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने पर शुभकामना

संवाददाता
अबु बकर

दरभंगा : शुक्रवार को नई दिल्ली में दरभंगा सांसद गोपाल जी ठाकुर ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी से मुलाकात कर मिथिला परंपरा अनुसार पाग, चादर एवं मखान माला से सम्मानित किए और लगातार तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के लिए आठ करोड़ मिथिलावासी की ओर से बधाई एवं शुभकामना दिए। उन्होंने कहा कि पीएम से मुलाकात और संवाद हमेशा उन्हें एक नई प्रेरणा देता है। सांसद ने कीमती समय व मार्गदर्शन देने के लिए पीएम के प्रति आभार प्रकट किए। उन्होंने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी जी के बीते दस वर्ष के नेतृत्व में देश में अभूतपूर्व विकास हुआ है और यह अनवरत जारी है। सांसद ने कहा कि मोदी जी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार में दरभंगा सहित पूरे बिहार का भी कायाकल्प हो रहा है। 2014 से पहले की सरकार ने अधिकतर देशवासी को विकास का असली मतलब नहीं समझने दिया और देश को गर्त में धकेलने का कार्य किया था, परंतु नरेंद्र मोदी के सत्ता में आने के बाद आज प्रत्येक देशवासी राष्ट्रप्रेम की भाव से देश की तरक्की में योगदान दे रहा है। उन्होंने कहा कि दरभंगा सहित मिथिला क्षेत्र में लाखों करोड़ की राशि से सैकड़ों विकास परियोजना चल रही है। जिसमे दरभंगा एयरपोर्ट, दरभंगा एम्स, सुपर स्पेशलिटी अस्पताल, आईटी पार्क, आरओबी, लो कॉस्ट ओवरब्रिज, लाइट आरओबी, दरभंगा, सकरी एवं लहेरियासराय रेलवे स्टेशन का विश्वस्तरीय स्टेशन के रूप में पुनर्विकास, आमस - दरभंगा बिहार

भाजयुमो ने किया आगामी कार्यक्रमों के निमित्त बैठक

- भारतीय जनता युवा मोर्चा बिहार
- भाजयुमो ने किया आगामी कार्यक्रमों के निमित्त बैठक
- 5 जुलाई को भाजपा के अभिनंदन समारोह की तैयारियों में जुटा भाजयुमो

पटना: भारतीय जनता युवा मोर्चा बिहार प्रदेश अध्यक्ष भारतेंदु मिश्रा की अध्यक्षता में प्रदेश कार्यालय के अटल सभागार में प्रदेश पदाधिकारी एवं जिला अध्यक्षों की बैठक संपन्न हुई। बैठक में प्रदेश महामंत्री मिथिलेश तिवारी, राजेश वर्मा और शिवेश राम ने आगामी कार्यक्रम के निमित्त युवा मोर्चा पदाधिकारियों को संबोधित किया। बिहार भाजयुमो प्रदेश अध्यक्ष भारतेंदु मिश्रा ने सभी प्रदेश पदाधिकारी एवं जिलाध्यक्षों को सम्मानित कर उनका अभिनंदन किया और आगामी कार्यक्रमों की रूप रेखा साझा किया। एक पेड़ मां के नाम, मंडल सशक्तिकरण, सोशल मीडिया वॉरियर्स, आगामी 5 जुलाई को भाजपा का श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल में अभिनंदन समारोह जिसमे मोदी सरकार में बिहार से शामिल सभी एनडीए के मंत्रीगण और भाजपा के विजयी सांसदगण का

अभिनंदन किया जाएगा। इन सभी कार्यक्रमों को सफल बनाने हेतु युवा मोर्चा पदाधिकारियों के साथ रणनीति साझा किया।बिहार भाजपा प्रदेश महामंत्री मिथिलेश तिवारी ने युवा मोर्चा पदाधिकारियों का लोकसभा चुनाव में पूर्ण समर्पण के साथ काम करने के लिए अभिनंदन किया और आगामी विभिन्न कार्यक्रमों को सफल करने हेतु विस्तारपूर्वक चर्चा की।बिहार भाजपा प्रदेश महामंत्री राजेश वर्मा ने युवा मोर्चा के पदाधिकारियों को चुनाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए बधाई दिया और आगामी 2025 विधानसभा चुनाव में पार्टी को सुदृढ़ करने में युवा मोर्चा की भूमिका पर विशेष रूप से सभी का मार्गदर्शन किया।

SAHAYOG SECURITY SERVICES

बड़ी संख्या में आवश्यक्ता है

SJML HR SOLUTION SERVICES PRIVATE LIMITED

Trade Name : SAHAYOG SECURITY SERVICES

एसजेएमएल, एचआर, सोलुसन सर्विसेज प्राईवेट लिमिटेड को आवश्यक्ता है । दिल्ली, हरीयाणा, पंजाब, उत्तराखंड, तथा बिहार में गन मैन, सिविल गार्ड, बाउनसर, एवं सफाई कर्मचारी की सम्पर्क करें ।

सम्पर्क करें

मो0: 9472871824, 7366028884

ई–मेलः sjmlhrsolutionservices@gmail.com

समारोह पूर्वक धूमधाम से मनाई गई दानवीर भामाशाह जी की जयंती

वरिष्ठ संवाददाता
शकील हैदर

सारण जिला वैश्य महासभा, सारण के तत्वाधान में "नारायण पैलेस, दलदली बाजार छपरा में दानवीर भामाशाह जी की जयंती समारोह बड़े ही धूमधाम से सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में मनायी गयी। जिसकी अध्यक्षता वीरेंद्र साह मुखिया और संचालन विष्णु कुमार गुप्ता ने किया। शुरूआत दानवीर भामाशाह जी की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित कर एवं वैश्य गीत से हुआ। वक्ताओं ने भामाशाह द्वारा स्वदेश प्रेम और मेवाड़ के राजा महाराणा प्रताप से मित्रता और विश्वासपात्र सलाहकार रहने के चलते अपना सर्वस्व-- तन -मन-धन दान करने की वृतांत को अपने-अपने ढंग से अपनी-अपनी शैली में दर्शकों व श्रोताओं के सम्मुख रखा। सब ने माना कि अकबर से युद्ध के लिए व अपनीमातृ-भूमि के प्रति अगाध प्रेम और दानवीरता के चलते चित्तौड़ के नगर सेठ भामाशाह जी ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया था।उनका यह सुकृत्य इतिहास में सदा ही अमर रहेगा। उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए अध्यक्ष वीरेंद्र साह मुखिया ने कहा कि दानवीर भामाशाह जी बेमिसाल व्यक्तित्व के धनी एवं त्यागी पुरुष थे। वे एक धनी व्यक्ति के साथ-साथ प्रसिद्ध सेनापति, मंत्री और मित्रों के मित्र और दुश्मनों के दुश्मन थे।आत्मसम्मान और त्याग की यही भावना उनके स्वदेश, धर्म और संस्कृति की रक्षा करने वाले देश-भक्त के रूप में शिखर पर स्थापित कर देती है।

डॉ हरिओम प्रसाद ने भामाशाह जी को भारत माता का एक अनमोल हीरा तथा वैश्यों का आइकॉन बताया और कहा कि हमें ऐसे महापुरुष से प्रेरणा लेकर संग्रही बनने के बजाय परिग्रही बनना चाहिए।

माखनलाल चतुवेर्दी जी की दो पंक्तियों से उन्होंने समापन किया "मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ पर देना तुम फेंक, मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जाएं वीर अनेक"।

राज नारायण साह ने कहा कि जब तक भारतवर्ष रहेगा, चांद और सूरज रहेंगे भामाशाह जी का जीवन सभी लोगों के लिए सदा अनुकरणीय रहेगा। उनके जैसा समाज के हर धनी व्यक्ति को बनना चाहिए। जिससे कि हमारा देश और समाज अधिक सशक्त बन सके।

विपक्ष सिर्फ हंगामा खड़ा करने के लिए, सदन को बाधित करने के लिए सोच रखती है चिराग पासवान

संवाददाता

लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री चिराग पासवान ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि विपक्ष सिर्फ हंगामा खड़ा करने के लिए, सदन को बाधित करने के लिए सोच रखती है तो यह बिल्कुल गलत है। राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर जब धन्यवाद प्रस्ताव आता है तो, इसमें पूरी स्वतंत्रता है हर एक दल को, हर एक सांसद को होती है, कि वो इसमें किस विषय को उठाना चाहती है। माननीय स्पीकर साहब के द्वारा भी इस बात को स्पष्ट तौर से कहा गया कि अगर आप नीट के विषय को भी उठाना चाहते हैं, यह ऐसा विषय है जिसके लिए सरकार पूरी तरीके से गंभीर है। सरकार कतई भी नहीं चाहती है कि किसी भी छात्र के साथ अन्याय हो, उसके भविष्य के साथ कोई भी खिलवाड़ हो। जांच एजेंसी के द्वारा जांच की प्रक्रिया चल रही है। माननीय न्यायालय में भी यह मामला विचाराधीन है। ऐसे में तमाम पक्षों को मधयेनजर रखते हैं, सही समय पर सरकार जो उचित कदम होगा।

सारण पुलिस द्वारा चलाए गये विशेष धर-पकड़ अभियान में कुल 104 अभियुक्तो को किया गया गिरफ्तार

संवाददाता

पुलिस अधीक्षक, सारण द्वारा दिए गए निर्देश के आलोक में असमाजिक तत्वों / अपराधकर्मियों की गिरफतारी एवं शराब के सेवन/बिक्री/भंडारण/निर्माण/परिवहन आदि पर पूर्णरूप से पाबंदी लगाने तथा देशी शराब भ?ट्ठी ध्यस्त करने हेतु कार्रवाई को दृष्टिगत रखते हुए दिनांक-27.06.2024 की रात्रि में विशेष अभियान चलाया गया। इस अभियान में कुल 104 अभियुक्तों को गिरप?तार किया गया, जिसमें हत्या के कांड में-04 (1. निक्की कुमारी, 2. शंकर राय, 3. ब्रजकिशोर राय, 4. पुलिस राय), बलात्कार के कांड में-01 (रंजय कुमार सिंह) पुलिस पर हमला के कांड में-01, महिला उत्पीड़न के कांड में-06, आर्म्स अधि० के कांड में-05(1. आयुष राज, 2. अभि कुमार गुप्ता, 3. विजय कुमार साह 4. विकाश कुमार, 5. दिपक कुमार) हत्या के प्रयास के कांड में-11, अनु० जाति/जनजाति के कोड में-08, खनन के कांड में-01, अन्य अपहरण में-04, मद्यनिषेध में-28, बारंट में-25, अन्य कांड में गिरप?तारी 10 अभियुक्त शामिल है। जिलें में अपराध नियंत्रण एवं यातायात सुरक्षा के दृष्टिकोण से 31000 रू० जुमार्ना राशि वसूली गई। इस विशेष अभियान में हत्या, आर्म्स जैसे जघन्य अपराध के कांडो में विशेष रूची लेते हुए १. माँझी थाना द्वारा (02 अभियुक्त, 03 देशी कट्टा, 03 जिन्दा कारतूस, 02 मोबाईल एवं 01 मोटरसाईकिल), 2. तरैया थाना द्वारा (02 अभियुक्त. 01 देशी कट्टा, 03 जिंदा कारतूस एवं 01 मोटरसाईकिल), 3. अवतारनगर थाना द्वारा (02 अभियुक्त) को गिरफ्तारी एवं बरामदगी की गई है, जो सराहनीय उपलब्धि है। इसके लिए इन थानों को पुलिस अधीक्षक महोदय सारण द्वारा पुरस्कृत किया जायेगा।

दुबई से शव आते ही घर में मचा कोहराम

संवाददाता
मोहम्मद आरिफ

सिवान महराजगंज अनुमंडल दुरौंधा 28 जून शुक्रवार। दुरौंधा थाना क्षेत्र रुकुंदीपुर बीरा भगत के टोला मे एक मृत युवक खुदी राम के पुत्र मुगल राम 40 वर्ष का डेड बॉडी पहुंचते ही कोहराम मच गया और पुरे गांव मे मातमी छा गई। बता दे की 17 जून को ड्युटी करने के दौरान मुगल राम के सीने मे अचानक दर्द हुआ वहीं उनको अस्पताल मे भर्ती कराया गया जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। परिजनों के साथियो ने फोन कर सुचना दिए की अचानक सीने मे दर्द के कारण मौत हो गई है। मृतक दुबई मे वेल्डिंग का काम करता था। लगभग चार साल से दुबई कमाने के लिए गया था।

राजद नेत्री के भाई को अपराधियों ने मारी गोली

गोली लगने से व्यक्ति बुरी तरह हुआ जख्मी

वरिष्ठ संवाददाता

गोपालगंज - राजद नेत्री के भाई को अपराधियों ने मारी गोली। गोली लगने से व्यक्ति बुरी तरह हुआ जख्मी। आनन-फानन में घायल को स्थानीय अस्पताल में कराया गया भर्ती। प्राथमिक उपचार के बाद घायल को गोरखपुर किया गया रेफर। भोरे थाना क्षेत्र के खजूरहां गांव स्थित पेट्रोल पम्प के समीप की वारदात। राजद नेत्री सुनीता कुशवाहा के चचेरे भाई अरबिंद सिंह को मारी गई है गोली।

जिला पदाधिकारी के द्वारा लोक शिकायत द्वितीय अपील के 11 मामलों की सुनवाई करते हुए समाधान किया गया

वरिष्ठसंवाददाता
शकील हैदर

- बिहार लोक शिकायत निवारण अधिकार अधिनियम- 2015 का सफल क्रियान्वयन प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता; सभी पदाधिकारी इसके लिए सजग, संवेदनशील तथा सक्रिय रहें : जिला पदाधिकारी

दिनांक 28 जून, 2024

जिलाधिकारी, सारण अमन समीर के द्वारा आज कार्यालय कक्ष से बिहार लोक शिकायत निवारण अधिकार अधिनियम, 2015 के तहत द्वितीय अपील में शिकायतों की सुनवाई की गई और शिकायत का निवारण किया गया।

जिला पदाधिकारी द्वारा आज लोक शिकायत के कुल 11 मामलों की सुनवाई की गई जिसमें 06 मामलों पर अंतिम रूप से आदेश पारित किया गया तथा शेष 05 मामलों में पूर्ण प्रतिवेदन के साथ अगली तिथि पर लोक प्राधिकार को उपस्थित होने का निर्देश दिया गया। जिला पदाधिकारी अमन समीर ने कहा कि लोक शिकायतों का ससमय तथा गुणवत्तापूर्ण निवारण अत्यावश्यक है। लोक प्राधिकारों को तत्परता प्रदर्शित करनी होगी। उन्होंने कहा कि बिहार लोक शिकायत निवारण अधिकार अधिनियम, 2015 का सफल क्रियान्वयन प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। सभी पदाधिकारी इसके लिए सजग, संवेदनशील तथा सक्रिय रहें।

ईरा पत्रकार संगठन के वर्किंग प्रेसिडेंट एम. अली ने एसईसीएल के सीएमडी पीएस मिश्रा को 10 सूत्री मांग पत्र सौपा, मिला सकारात्मक आश्वासन

संवाददाता

- ईरा केंद्रीय अध्यक्ष एम. अली ने बताया कोयला क्षेत्र में पत्रकारों को कोल इंडिया की सभी कंपनी लाभ देने के लिए कारगर कदम उठाने वाली है, यह ऐतिहासिक होगा
- प्रबंधन के द्वारा केवल पत्रकार हित में खानापूर्ति किया जाता है, सुविधाएं देनी होगी- रविकांत
- फोटो 02 ईरा राष्ट्रीय कार्यकारिणी अध्यक्ष एम. अली एसईसीएल सीएमडी पीएस मिश्रा को मांग पत्र सौंपते हुए।

रायपुर (छत्तीसगढ़)। इंडियन रिपोर्टर्स एसोसिएशन पत्रकार संगठन (ईरा) के द्वारा कोयला व ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले पत्रकारों के अधिकार और हितों को लेकर लगातार आवाज बुलंद की जा रही है। इसे लेकर शुक्रवार को इंडियन रिपोर्टर्स एसोसिएशन (ईरा) के राष्ट्रीय कार्यकारिणी अध्यक्ष एम. अली ने राज्य छत्तीसगढ़ में स्थित एसईसीएल हेडक्वार्टर बिलासपुर में सीएमडी पीएस मिश्रा से मुलाकात कर पत्रकार हित से जुड़े 10 सूत्री मांग पत्र सौपा। इसे लेकर एसईसीएल सीएमडी पीएस मिश्रा ने हर्ष जताते हुए कहा कि कंपनी पत्रकारों को सुविधा देने को लेकर कारगर और ठोस कदम उठाएगी, जो भी सुविधाएं हैं हम इसके लिए सकारात्मक कदम उठाएंगे, वहीं ईरा के राष्ट्रीय कार्यकारिणी अध्यक्ष एम. अली ने बताया कि ईंडियन रिपोर्टर्स एसोसिएशन के बैनर तले सभी कोयला व इससे जुड़े ग्रामीण इलाको के पत्रकारों को सुविधा मुहैया करने को लेकर पत्र सौपा गया है, जो भविष्य में कारगर व ऐतिहासिक साबित होगा, अभी तक कोयला कंपनियों के द्वारा जो सुविधा पत्रकारों को नहीं उपलब्ध कराई जाती थी, वो मिलने के प्रबल आसार दिख रहे है, सुविधाएं सभी पत्रकारों का अधिकार है, इस पर सकारात्मक पहल होने के संकेत दिखाई पड़ रहे है। मांगो में पत्रकारों को अपने पुस्तकालय व कार्यालय के लिए आवास सुविधा मुहैया कराने, पत्रकारों को आउटडोर मेडिकल सुविधा देने, पत्रकारों व प्रबंधन के बीच मैत्री संबंध स्थापित कर बैठक करने, कोल इंडिया के इलाके में जो भी पत्रकार अपनी सेवा प्रबंधन को दे रहे हैं उन्हें आवास देने, सभी पत्रकारों को सीएसआर के तहत बीमा एवं अन्य मृत्यु लाभ उनके परिजनों को देने, कोल इंडिया के अधीन व अनुदानित विद्यालयों में पत्रकारों के बच्चों को निःशुल्क व आधे शुल्क पर शिक्षा प्रदान करने, उच्च शिक्षा में आर्थिक सहयोग देने, चौथे स्तंभ की कंमनी के साथ भागीदारी सुनिश्चित कर कंपनी व देश को आगे बढ़ाने में योगदान देने आदि शामिल है।

ब्रह्माकुमारी के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा माउंट आबू में सितंबर में होगा पांच दिवसीय यौगिक खेती प्रशिक्षण शिविर ।

संवाददाता
कफील एकबाल

मोतिहारी 28 जूनयौगिक खेती के अन्न सेवन से हो रही है काया निरोगी-बीके अबिता27 सितंबर से 1 अक्टूबर तक ब्रह्मकुमारी के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू में होने वाले यौगिक खेती प्रशिक्षण शिविर में दोनों चंपारण से एक सौ से अधिक किसान भाग लेंगे ।माउंट आबू के शांति वन- तपो वन में आयोजित ट्रेनर प्रशिक्षण कार्यक्रम में देशभर से चयनित किसान भाग लेगे। गौरतलब है कि रासायनिक खेती से उपजे अन्न गैस्ट्रिक एवं अन्य बीमारियों का मुख्य कारण बनता जा रहा है इसलिए सरकार इसके समाधान के लिए यौगिक खेती के लिए प्रयत्नशील है, और इसके लिए ब्रह्माकुमारी संस्था की सेवाये केंद्रीय सरकार लेना चाहती है जिसके लिए ट्रेनरो की सख्त जरूरत है और उसी को ध्यान में रखते हुए कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग ने पांच दिवसीय ट्रेनर प्रशिक्षण कार्यक्रम को रखा है। इस बाबत ग्राम विकास प्रभाग की बिहार प्रभारी बीके अबिता दीदी ने बताया कि प्रशिक्षण में मुख्य रूप से यौगिक खेती की विधि पर विशेषज्ञो द्वारा विस्तृत जानकारी दी जाएगी ।प्रशिक्षण मे कीटनाशक एवं यौगिक खाद निर्माण की विधि भी बताई जायेगी ।इसके अलावा फसलों को योग प्रतीकंपन देने की कामेंट्री विधि प्रयोगात्मक स्वरूप मे कराया जायेगा। योग विधि से ट्रेनरो में शक्ति भरी जायेगी ।बीके अबिता ने बताया कि उस अन्न का प्रभाव मन पर पडता है। जिससे शरीर स्वस्थ होता है। उन्होंने कहा कि चंपारण की भूमि अति उपजाऊ भूमि है और यहां की मुख्य फसल धान एवं गेहूं है ,यौगिक खेती प्रशिक्षण किसानों के लिए वरदान साबित होगा । रासायनिक खेती का दुष्परिणाम पूरा देश आज भुगत रहा है। घर-घर में गैस्टिक की बीमारी से लोग परेशान है ।उन्होंने बताया कि किसान ट्रेनर प्रशिक्षण कार्यक्रम में काफी संख्या में चंपारण के किसानो की भागीदारी होगी । वैसे तो पूरे बिहार से काफी किसान वहां पहुंच रहे हैं लेकिन चंपारण की भागीदारी महत्वपूर्ण मानी जा रही है। भारत सरकार चाहती है कि किसानो की आर्थिक स्थिति सुदृढ हो। यौगिक खेती विधि से उपजे अन्न, और सब्जी आम उपभोक्ताओं की पहली पसंद है।

माँ अन्नपूर्णा महिला मंच, जयनगर के द्वारा निःशुल्क प्रशिक्षण उपरांत सर्टिफिकेट का किया गया वितरण, कई गणमान्य रहे मौजूद

संवाददाता
अबु बकर

मधुबनी बिहार:मधुबनी जिला मे भारत-नेपाल सीमा पर अवस्तिथ जयनगर शहर के मैन रोड इस्तिथ दुर्गा आवास में माँ अन्नपूर्णा महिला मंच,जयनगर के द्वारा माँ अन्नपूर्णा महिला मंच के बैनर तले निःशुल्क प्रशिक्षण शिविर उपरांत सर्टिफिकेट वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया ।इस कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि नगर पंचायत के चेयरमैन कैलाश पासवान, विशिष्ट अतिथि सीतामढ़ी निवासी समाजसेवी अतुल कुमार, रिजर्व बैंक के रिटायर्ड अधिकारी सह समाजसेवी सुरेन्द्र प्रसाद, जयनगर चैम्बर ऑफ कॉमर्स के महासचिव अनिल बैरोलिआ, ॐ जय माता दी सेवा समिति के अध्यक्ष अरुण जैन, प्रोडजी स्कूल के डायरेक्टर कुमार आंनद, माँ अन्नपूर्णा रक्तरक्षक के अध्यक्ष ई. रोहन रंजन सिंह,माँ अन्नपूर्णा सेवा समिति के मुख्य संयोजक अमित राउत,माँ अन्नपूर्णा कम्युनिटी किचन के संरक्षक प्रवीर महासेठ,उपेंद्र नायक,राजेश गुप्ता,माँ अन्नपूर्णा महिला मंच की अध्यक्षा कामिनी साह ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया ।इस मौके पर आए हुए सभी अतिथियों को मिथिला के परम्परा के अनुसार पाग, दोपट्टा पहनाकर सम्मानित किया गया ।इस मौके पर सीतामढ़ी निवासी समाजसेवी अतुल कुमार ने कहा कि माँ अन्नपूर्णा सेवा समिति,जयनगर के द्वारा विभिन्न समाजिक क्षेत्रों में कई उल्लेखनीय एवं प्रशशनीय कार्य किए हैं। इस संस्था के द्वारा जो भी कार्य किया जा रहा है, वह सराहनीय प्रयास है।

मौके पर सभी वक्ताओं ने एक सुर में बताया की माँ अन्नपूर्णा सेवा समिति की कीर्ति मधुबनी जिले में ही नहीं देश कर हर कोने में फैल चुकी है। अब तो देश ही नहीं विदेशों में भी इस संस्था के फॉलोअर मौजूद हैं, जो इस संस्था से जुड़ चुके है। इसलिए जो लोग समाज सेवा में अपना मूल्यवान समय दे रहें हैं, उन लोगों को तन,मन और धन से सहयोग देकर समाज के अच्छे कार्यो को आगे बढ़ाएं ।इस कार्यक्रम में निःशुल्क प्रशिक्षण शिविर मे शामिल हुए महिलाओं एवं लड़कियों को प्रशिक्षण उपरांत सर्टिफिकेट का वितरण अतिथियों के द्वारा किया गया। वहीं, इस मौके पर पत्रकारों को भी मिथिला सम्मान देकर सम्मानित किया गया ।इस मौके पर संस्था के मुख्य संयोजक अमित कुमार राउत,संरक्षक प्रवीर महासेठ,उपेंद्र नायक,राजेश गुप्ता,गणेश कांस्यकार,परमानन्द ठाकुर,नायक जी,अध्यक्ष ई. रोहन रंजन सिंह,पप्पू पूर्वे,निरंजन यादव,विवेक सूरी,नवीन कुमार,प्रथम कुमार,हर्ष कुमार,संतोष शर्मा।

मधुबनी, जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा ने बालिका गृह, बाल गृह एवं विशिष्ट दत्तक ग्रहण संस्थान का किया गया औचक निरीक्षण

संवाददाता
अबु बकर

- मधुबनी जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा ने बालिका गृह, बाल गृह एवं विशिष्ट दत्तक ग्रहण संस्थान का किया गया औचक निरीक्षण।
- औचक निरीक्षण के क्रम में जिलधिकारी ने आधारभूत संरचना, उपलब्ध सुविधाऐं, साफ-सफाई, सुरक्षा व्यवस्था, भोजन का मेन्यू, नॉनभेज खाना आदि के सम्बंध में बच्चों से लिया फीडबैक।
- बालिका गृह, मधुबनी की बालिकाओं ने अपने द्वारा बनाये गये मधुबनी पेंटिंग्स जिलधिकारी को किया भेट।

मधुबनी : जिलाधिकारी, अरविंद कुमार वर्मा की अध्यक्षता में जिला निरीक्षण समिति, मधुबनी के द्वारा जिला अंतर्गत संचालित सभी बाल देखरेख संस्थान यथा- बालिका गृह, बाल गृह एवं विशिष्ट दत्तक ग्रहण संस्थान का निरीक्षण किया गया। इस क्रम में बालिका गृह, मधुबनी की बालिकाओं ने अपने द्वारा बनाये गये मधुबनी पेंटिंग जिला पदाधिकारी को भेंट की। निरीक्षण के क्रम में जिला पदाधिकारी द्वारा बालिका गृह में आवासित कुल बालिकाओं की संख्या, विशेष आवश्यकता वाली बालिकाओं की संख्या एवं गृह की क्षमता इत्यादि के संबंध में विस्तृत जानकारी ली गयी।साथ ही गृह के आधारभूत संरचना, उपलब्ध सुविधाऐं, भोजन का मेन्यू, नॉनभेज खाना इत्यादि के संबंध में बच्चों से जानकारी प्राप्त किया। भंडारगृह, रसोईघर, बच्चों के आवासन कक्ष इत्यादि का निरीक्षण किये तथा कमरे में एग्जास्ट फैन, टी0वी0, लगाने हेतु निदेशित किया गया। स्वास्थ्य विभाग के पदाधिकारी को ए0एन0एम0 की प्रतिनियुक्ति करने एवं पुलिस उपाध्यक्ष, मुख्यालय को और अधिक सुरक्षा बल प्रतिनियुक्त करने हेतु निदेशित किया गया। बालिकाओं की अत्यधिक संख्या को देखते हुये अन्य जिलों से समन्वय स्थापित करते हुये शीघ्र पुर्नवासन करने का भी निदेश दिये।निरीक्षण के दौरान गृह का साफ-सफाई एवं अन्य कार्यकलाप संतोषजनक पाया गया। बाल गृह एवं विशिष्ट दत्तक ग्रहण संस्थान का भी कार्यकलाप संतोषजनक पाया गया। निरीक्षण के क्रम में सहायक निदेशक, जिला बाल संरक्षण इकाई आशीष अमन, पुलिस उपाधीक्षक(मु0), सिविल सर्जन, स्वास्थ्य पदाधिकारी, जिला शिक्षा पदाधिकारी, अध्यक्ष, बाल कल्याण समिति, बाल संरक्षण पदाधिकारी एवं जिला बाल संरक्षण इकाई के कर्मी तथा गृह के सभी कर्मी/पदाधिकारी

कांग्रेस कमिटी के पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष, स्वतंत्रता सेनानी स्व0 मुंगेरी लाल जी की 23 पुण्यतिथि

प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय, सदाकत आश्रम में मनायी गयी। कार्यक्रम का शुभारंभ उनके तैल चित्र पर माल्यापर्ण कर किया

संवाददाता

बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी के पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष, स्वतंत्रता सेनानी स्व0 मुंगेरी लाल जी की 23 पुण्यतिथि आज प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय, सदाकत आश्रम में मनायी गयी। कार्यक्रम का शुभारंभ उनके तैल चित्र पर माल्यापर्ण कर किया गया। इस अवसर पर पूर्व विधान पार्षद लाल बाबू लाल ने कहा कि स्व0 मुंगेरी लाल उच्च कोटि के स्वतंत्रता सेनानी एवं समाज सुधारक थे। राज्य सरकार के मंत्री के रूप में उन्होंने दलितों के विकास की कई योजनाएँ चलायीं। पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने जो रिपोर्ट पेश की उसी के आधार पर आज तक बिहार में पिछड़ों एवं अति पिछड़ों के लिये आरक्षण की व्यवस्था है।मुंगेरी लाल की पुण्यतिथि के अवसर पर कांग्रेस पार्टी की ओर से 'ड्ढ२ ीिल्ल३ू उ/ल्लू ने स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया , जिसमें डा0 मृत्यंजय कुमार झा एवं डा0 जूही प्रशांत ने स्वास्थ्य शिविर में आये सैकड़ों मरीजो का इलाज किया एवं मुफ्त में दवाईयों का वितरण किया गया। प्रदेश कांग्रेस के कोषाध्यक्ष निर्मल वर्मा, ब्रजेश प्रसाद मुनन, ब्रजेश पाण्डेय, संजय यादव, राजकिशोर सिंह, शशिकांत तिवारी, प्रदुम्न यादव, उदय शंकर पटेल, रामाशंकर पाण्डेय, सुनील कुमार सिंह, उमेश कुमार राम, विमलेश तिवारी, जन्मोत्री ममता निषाद, मिथिलेश शर्मा मधुकर, विन्ध्वासिनी आनन्द, राहुल पासवान, निधि पाण्डेय, भूषण कुमार, प्रेरणा, कुमार गौरव, स्मिता कुमारी सहित अन्य कांग्रेसजनो ने स्वङ्ग मुंगेरी लाल के चित्र पर माल्यार्पण किया।

डीएम ने जनता दरबार में 25 लोगों की फरयादें सुनी

मो. सदरे आलम नोमानी

सीतामढ़ी :डीएम रिची पांडेय ने अपने कार्यालय कक्ष में आयोजित जनता दरबार कार्यक्रम में परिवादियों से मिलकर उनके समस्याओं को सुना। कुल 25 आवेदन प्राप्त हुए।जनता दरबार में अधिकांश मामले अतिक्रमण, भूमि विवाद, आपसी विवाद, सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, विद्युत इत्यादि इत्यादि से संबंधित थे। जनता दरबार कार्यक्रम में उपस्थित अधिकारियों को निर्देश दिया कि प्राप्त जन शिकायतों के निष्पादन की दिशा में पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य करना सुनिश्चित करें।इसमें किसी भी तरह की कोताही स्वीकार्य नहीं होगी।जिला पदाधिकारी द्वारा बिहार लोक शिकायत निवारण अधिकारी अधिनियम के तहत द्वितीय अपीलीय प्राधिकार की सुनवाई हुई।कुल 17 परिवादो की सुनवाई की गई जिसमें 5 वादों का निष्पादन किया गया।

माँ अन्नपूर्णा महिला मंच, जयनगर के द्वारा नि:शुल्क प्रशिक्षण उपरांत सर्टिफिकेट का किया गया वितरण, कई गणमान्य रहे मौजूद

संवाददाता
अबु बकर

मधुबनी जिला मे भारत-नेपाल सीमा पर अवस्तिथ जयनगर शहर के मैन रोड इस्तिथ दुर्गा आवास में माँ अन्नपूर्णा महिला मंच, जयनगर के द्वारा माँ अन्नपूर्णा महिला मंच के बैनर तले निःशुल्क प्रशिक्षण शिविर उपरांत सर्टिफिकेट वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि नगर पंचायत के चेयरमैन कैलाश पासवान, विशिष्ट अतिथि सीतामढ़ी निवासी समाजसेवी अतुल कुमार, रिजर्व बैंक के रिटायर्ड अधिकारी सह समाजसेवी सुरेन्द्र प्रसाद, जयनगर चैम्बर ऑफ कॉमर्स के महासचिव अनिल बैरोलिआ, ॐ जय माता दी सेवा समिति के अध्यक्ष अरुण जैन, प्रोडजी स्कूल के डायरेक्टर कुमार आंनद, माँ अन्नपूर्णा रक्तरक्षक के अध्यक्ष ई. रोहन रंजन सिंह, माँ अन्नपूर्णा सेवा समिति के मुख्य संयोजक अमित राउत, माँ अन्नपूर्णा कम्युनिटी किचन के संरक्षक प्रवीर महासेठ, उपेंद्र नायक, राजेश गुप्ता, माँ अन्नपूर्णा महिला मंच की अध्यक्षा कामिनी साह ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया।इस मौके पर आए

हुए सभी अतिथियों को मिथिला के परम्परा के अनुसार पाग, दोपट्टा पहनाकर सम्मानित किया गया।

इस मौके पर सीतामढ़ी निवासी समाजसेवी अतुल कुमार ने कहा कि माँ अन्नपूर्णा सेवा समिति, जयनगर के द्वारा विभिन्न समाजिक क्षेत्रों में कई उल्लेखनीय एवं प्रशशनीय कार्य किए हैं। इस संस्था के द्वारा जो भी कार्य किया जा रहा है, वह सराहनीय प्रयास है।मौके पर सभी वक्ताओं ने एक सुर में बताया की माँ अन्नपूर्णा सेवा समिति की कीर्ति मधुबनी जिले में ही नहीं देश कर हर कोने में फैल चुकी है। अब तो देश ही नहीं विदेशों में भी इस संस्था के फॉलोअर मौजूद हैं, जो इस संस्था से जुड़ चुके है। इसलिए जो लोग समाज सेवा में अपना मूल्यवान समय दे रहें हैं, उन लोगों को तन, मन और धन से सहयोग देकर समाज के अच्छे कार्यो को आगे बढ़ाएं।इस कार्यक्रम में निःशुल्क प्रशिक्षण शिविर मे शामिल हुए महिलाओं एवं लड़कियों को प्रशिक्षण उपरांत सर्टिफिकेट का वितरण अतिथियों के द्वारा किया गया।वहीँ, इस मौके पर पत्रकारों को भी मिथिला सम्मान देकर सम्मानित किया गया।इस मौके पर संस्था के मुख्य संयोजक अमित कुमार राउत, संरक्षक प्रवीर महासेठ, उपेंद्र नायक, राजेश गुप्ता, गणेश कांस्यकार, परमानन्द ठाकुर, नायक जी, अध्यक्ष ई. रोहन रंजन सिंह, पप्पू पूर्वे, निरंजन यादव, विवेक सूरी, नवीन कुमार, प्रथम कुमार, हर्ष कुमार, संतोष शर्मा, मानव सिंह, शंकर कुमार, आलोक झा, साथ ही महिला मंच से सरिता कॉंस्यकार, सुनीता कुमारी, मुन्नी देवी, रानी कुमारी, लक्ष्मी कुमारी, रूबी कुमारी, समेत अन्य कई सदस्य मौजूद थे।

* भूमिविवाद को लेकर सभी थानों में थानाध्यक्ष एवं सीओ द्वारा बैठक कर भूमि विवाद के कई मामलों का किया गया ऑन स्पॉट *निष्पादन...

संवाददाता
अबु बकर

भूमिविवाद को लेकर सभी थानों में थानाध्यक्ष एवं सीओ द्वारा बैठक कर भूमि विवाद के कई मामलों का किया गया ऑन स्पॉट निष्पादन.........भूमिविवाद प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता--डीएम..............।... ....

जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा के निर्देश के आलोक में आज जिले के सभी थानों में भूमि विवाद के मामलों पर त्वरित सुनवाई को लेकर अंचलाधिकारियों एवम थानाध्यक्षो द्वारा बैठक कर सुनवाई की गई, एवम कई मामलों का ऑन स्पॉट निष्पादन भी किया गया। गौरतलब हो जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा ने निर्देश दिया था कि भूमिविवाद प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिये।उन्होंने निर्देश दिया है कि सभी सीओ एवम थानाध्यक्ष प्रत्येक सप्ताह थाना दिवस पर अनिवार्य रूप से भूमिविवाद को लेकर बैठक कर मामलों का त्वरित निष्पादन करेंगे एव ससमय प्रतिवेदन भेजेंगे। जिलाधिकारी ने भूमि विवाद समीक्षा बैठक में कहा था कि भूमि विवाद को लेकर ही अपराध की ज्यादातर घटनाएं होती है, साथ ही कई बार विधिव्यवस्था की भी समस्या उत्पन्न हो जाती है। भूमि विवाद को लेकर आयोजित बैठक का सकरात्मक परिणाम भी नजर आने लगा है। अब तक जिले में भूमिविवाद को लेकर प्राप्त आवेदनों में कई आवेदनों का ऑन स्पॉट निपटारा किया जा चुका है। स्वयं डीएम-एसपी ने भूमि विवाद के कई मामलों की सुनवाई कर उसका त्वरित निष्पादन किया है।

।..................................

तरैया थानान्तर्गत चोरी व गृह भेदन के कांड में फरार चल रहे वांछित अपराधी छोटू राय को ग्रामीणों के सहयोग से किया गया गिरफ्तार

संवाददाता
अबु बकर

सारण जिलान्तर्गत अपराध के मुख्य शीर्ष में वांछित अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु लगातार अभियान चलाया जा रहा है।इसी क्रम में दिनांक- 28.06.2024 को तरैया थाना को सूचना प्राप्त हुई कि तरैया थानान्तर्गत ग्राम- डुमरी में ग्रामीणों ने चोरी व गृह भेदन के कांड में फरार चल रहे वांछित अपराधी छोटू राय को पकड़ कर रखा है उक्त सूचना पर तरैया थाना पुलिस दल द्वारा तुरंत मौके पर पहुंचकर वांछित अपराधी छोटू राय को विधिवत गिरफ्तार किया गया ग्रामीणों द्वारा अपराधी का 01 लोडेड देशी कट्टा व 01 लोहे का फाइटर पंच प्रस्तुत किया गया, जिसे विधिवत जप्त किया गया पकडाये अभियुक्त छोटू राय के विरुद्ध पूर्व से तरैया एवं मढ़ौरा थाना में चोरी व गृह भेदन के कई कांड दर्ज हैं गिरफ्तार अभियुक्त का नाम एवं पताः-1.

छोटू राय, पिता- स्व० विश्वनाथ राय, सा०- चकिया, थाना- तरैया, जिला- सारण

? छोटू राय का अबतक का ज्ञात आपराधिक इतिहास :-

1. मढ़ौरा थाना कांड सं0-477/15, धारा- 379 भा०द०वि०
2. तरैया थाना कांड सं0- 115/16, धारा- 414 भा०द०वि० एवं 47 उत्पाद अधि0
3. तरैया थाना कांड सं0- 307/17, धारा- 457/380 भा०द०वि०

? जप्त/बरामद सामानों की विवरणी :-

1. देशी कट्टा;- 01, 2.जिन्दा कारतूस :- 01, 3. लोहे का फाइटर पंच :- 01

? टीम में शामिल पुलिस पदाधिकारी :-

थानाध्यक्ष, तरैया थाना एवं थाना के अन्य कर्मी

काड्र्स संस्था द्वारा आपदा जोखिम न्यूनीकरण विषयक क्षमता वर्धन कार्यशाला आयोजित

संवाददाता
,कफील एकबाल

मोतिहारी ,29 जूनसदर प्रखंड के मधुबनी घाट पंचायत अंतर्गत अवस्थित बाढ़ आश्रय स्थल में काड्र्स स्वैच्छिक संस्था के द्वारा "आपदा जोखिम न्यूनीकरण" विषयक क्षमता वर्धन कार्यशाला का आयोजन किया गया ।कारयशाला में प्रशिक्षक श्री दीपक कुमार (वरीय शोध पदाधिकारी बिहार राज्य आपदा प्राधिकरण पटना) के द्वारा बाढ़ के दौरान तथा बाढ़ के बाद की तैयारी पर विशेष जानकारी दी गई ! साथ ही बताया कि आपदा कई प्रकार के होते हैं जैसे भूकंप, बाढ़, सुखाड़, आग लगी आदि जो प्राकृतिक एवं मानव जनित है, इसी मौके पर प्रशिक्षक गौरव श्रीवास्तव (यूनिसेफ) ने आपदा के दौरान विभिन्न हीत धारकों एवं आपदा मित्र की भूमिका समुदाय स्तर की तैयारी व आपदा संबंधित सरकार की विभिन्न योजनाओं पर प्रकाश डाला !कार्यशाला में मधुबनी घाट बदार्हा एवं टिकुलिया पंचायत के पंचायती राज प्रतिनिधि, नाविक, जीविका समूह की प्रतिनिधि, किशोरी समूह की प्रतिनिधि, काड्र्स के कार्यकताओं ने भाग लिया, विषय प्रवेश शशिनेकिया, कार्यक्रम मे, कृष्णा, सकलदेव, छाया, नीमा, रंजू, पप्पू, पूजा, लालू आदि का सराहनीय सहयोग रहा !

श्रीमति ममता राय, अध्यक्ष, ज़िला परिषद, पूर्वी चम्पारण की अध्यक्षता में हुई सामान्य बैठक।

संवाददाता
कफील एकबाल

मोतिहारी 29 जून ,जिला परिषद सभागार में आयोजित सामान्य बैठक की अध्यक्षता करते हुए जिला परिषद अध्यक्ष श्रीमती ममता राय ने बैठक में अनुपस्थित पदाधिकारियो एवं अनुपालन प्रतिवेदन नही उपलब्ध कराने वाले पदाधिकारियो से कारण पृच्छा करने का निदेश देते हुए कहा कि संबंधित पदाधिकारियो एवं विभागो के विरूद्ध कार्रवाई हेतु उनके मूल विभाग को सूचित करने का निर्णय हुआ ।माननीय अध्यक्ष के द्वारा बताया गया कि जिला परिषद् को आर्थिक रूप से सुदृढ़ के निमित सैरातो की निलामी हेतु अखबारो एवं सोसल मीडिया के माध्यम से काफी प्रचार प्रसार कराया जिससे हमे एक करोड़ चौदह लाख

अड़सठ हजार छः सौ पचास रुपए की प्राप्ति हुई तथा जिला परिषदीय बकायादारो आवंटयो पर सख्ती कर एक करोड़ एक्कीस लाख पचीस हजार दो सौ उन्तालीस रुपए की वसूली हुई जो एक बड़ी उपलब्धी है। जिला परिषद् के जिन दुकान आवंटियो के यहा किराया बाकी है उन्हे शीध्र जमा कराने तथा जिनका एकरारनामा नही हुआ है उन्हे शीध्र कार्यालय में सम्पर्क कर एकरारनामा कराने हेतु हिदायत दिया गया साथ ही अगर बकायादार बकाया नही चुकाते है तथा एकरारनामा नही करते है तो उनके आवंटन को रद्द करने का निदेश मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी जिला परिषद् को दिया गया ।मा0 अध्यक्ष ने चिन्ता प्रकट करते हुए कहा कि जिले के विद्यालयो में बेंच-डेस्क के आपूर्ति एवं विद्यालयो की मरम्मति, शौचालय, एवं चापाकल में हुई घोर अनियमितता तथा समग्र विद्यालय अनुदान में ली गई योजनाओं में बड़े पैमाने पर गड़बड़ी एवं सरकारी राशि के दुरूपयोग पर जॉच टीम बनाकर जॉच करानें का निदेश मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी को दिया गया ।सदर अस्पताल की व्यवस्था, आंगनबाड़ी केन्द्रों का संचालन, सही ढंग से नहीं होने के संबंध में तथा मनरेगा में हो रहे गड़बड़ी के विषय में भी चिन्ता प्रकट करते हुए जिलाधिकारी एवं विभाग को सूचित करने का निर्णय लिया गया। साथ ही मनरेगा योजना का संचालन जिला परिषद् से कराने का निदेश मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी को दिया गया। साथ ही किसानो को पटवन हेतु नहर विभाग के पदाधिकारियो से कहा गया कि नहरो में आरंभ से अंत तक पानी पाहुंचाने, पी0एस0ई0डी0 के अधिकारियो को बरसात से पूर्व चापाकलो की मरमति तथा आपदा विभाग के पदाधिकारियो को बाढ़ से पूर्व तैयारियो की जायजा लेकर व्यवस्था कराने के साथ ही ग्रामीण कार्य विभाग के पदधिकारियो को बरसारत से पूर्व टुटे हुए सड़को को तुरन्त ठीक कराने का निदेश दिया गया।

डाक्टर वीरेंद्र नाथ पाण्डेय मेमोरियल ट्रस्ट अंतरराष्ट्रीय गायिका डॉक्टर नीतू कुमारी नीतू को करेगा सम्मानित

संवाददाता
कफील एकबाल

मोतिहारी,29 जूनडाक्टर वीरेंद्र नाथ पाण्डेय मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा आगामी 6 जुलाई को नगर के एम एस कॉलेज सभागार मे आयोजित डा नीतू कुमारी नूतन अभिनंदन सह सम्मान समारोह मे डाक्टर नूतन को विशेष सम्मान से सम्मानित किया जायेगा।उक्त अवसर पर नगर के सात वैसे महत्वपूर्ण व्यक्तित्व को भी सम्मानित किया जायेगा जो अलग अलग विधाओं में विशेष सेवा कार्य कर जिले का मान बढ़ाया है।कार्यक्रम का उद्घाटनकर्ता सह मुख्य अतिथि पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं सांसद राधा मोहन सिंह होंगे।

गौरतलब है कि चंपारण की बेटी डॉक्टर नीतू कुमारी नूतन चंपारण से निकलकर विश्व के कई देशों में अपनी सुरीली आवाज की खुशबू बिखेर रही है और देश के कई बडे -बडे मंचो पर वाहवाही लूट चुकी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के हाथों आप सम्मानित भी हो चुकी है। डॉ वीरेंद्र नाथ पांडे मेमोरियल ट्रस्ट के संयोजक जिले के मशहूर तबला वादक संजय पांडे ने बताया कि डॉक्टर नीतू कुमारी नूतन ने हमेशा ही अपने गीत को स्तरीय रखा है। उनका प्रथम रिलीज कैसेट भक्ति एवं आरती आधारित था। लोक धून आधारित इनकी गायकी की खूशबू आज विश्व मे फैल चूकी है।ट्रस्ट इन्हे सम्मानित कर खूद गौरवांवित होगा।श्री पाण्डेय ने बताया कि उक्त अवसर पर शिक्षा ,साहित्य, कला, समाज सेवा के क्षेत्र में विशेष योगदान देने वाले जिले के अन्य सात विभूतियों को भी सम्मानित किया जाएगा।

सीवान 29 जून 24 वार्ता डॉ विजय कुमार पाण्डेय

हत्यारोपी को उम्र कैद की सजा, 15 हजार रुपए के अर्थ दंड का भी आदेश

संवाददाता
मोहम्मद आरिफ

अपर जिला एवम सत्र न्यायाधीश शशि भूषण कुमार की अदालत ने हत्याकांड के नामजद आरोपी शेरा माझी को हत्या का दोषी पाते हुए उम्र कैद की सजा सुनाई है। अदालत ने अभियुक्त पर अतिरिक्त ?15000 अर्थ दंड की सजा भी निर्धारित किया है ।अर्थ दंड की राशि भुगतान नहीं करने पर अभियुक्त को अतिरिक्त 6 माह सश्रम कारावास की सजा भुगतनी पड़ेगी। बताया जाता है कि बड़हरिया थाना अंतर्गत पकवालिया गांव निवासी मदन शर्मा जब 16 अक्टूबर 2014 को शौच से लौट कर घर वापस आ रहे थे।इस बीच पड़ोसी रामानंद माझी एवं शेरा माझी उससे उलझ गए। मदन शर्मा को बचाने आए पुत्र संदीप शर्मा पर पिता पुत्र रामानंद माझी एवं शेरा माझी ने भुजाली से वार कर दिया ।जिससे उसके गर्दन पर गंभीर चोट आई और इलाज के क्रम में उसका मृत्यु हो गया। मदन शर्मा के बयान पर पिता पुत्र रामानंद माझी एवं शेरा माझी के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कराई गई थी। रामानंद माझी को इसी मामले में 6 वर्ष पूर्व आजीवन कारावास की सजा हो चुकी है ।एक मात्र आरोपी अभियुक्त शेरा मांझी को अदालत ने भादवि की धारा 302 के अंतर्गत उम्र कैद के अलावा भादवी की धारा 307 के अंतर्गत 7 साल एवं 324 के अंतर्गत 2 साल की भी सजा सुनाई है। उपरोक्त सभी सजाऐं साथ-साथ चलेगी।

राजपुर सीओ के आवेदन पर बिडिसी सदस्य गिरफ्तार

बक्सर। के बारूपुर पंचायत समिति सदस्य अली शेर को राजपुर सीओ से मारपीट और सरकारी कार्य में बाधा डालने के मामले में पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। राजपुर थाना द्वारा सीओ के द्वारा दिए गए आवेदन पर एफआइआर दर्ज कर पंचायत समिति सदस्य अली शेर की गिरफ्तारी के लिए लगातार छापेमारी किया जा रहा था। जिसे गिरफ्तार करने में गुरुवार की शाम सफलता मिली ही।जिसकी जानकारी राजपुर थाना प्रभारी द्वारा दिया गया है।हालांकि राजपुर के बिडिसी सदस्यो द्वारा डीएम को आवेदन देकर सीओ के आरोप को बेबुनियाद बता न्याय की गुहार भी लगाया गया था। घटना 13 जून की है। गाली-गलौज और मारपीट का लगाया आरोप बारूपुर पंचायत समिति सदस्य अलीशेर साह के खिलाफ राजपुर अंचल पदाधिकारी शोभा कुमारी ने राजपुर थाना में आवेदन दे यह आरोप लगाया था की बीडीसी सदस्य अलीशेर साह द्वारा कार्यालय में पहुंचकर धमकी दिया गया। जिसके बाद अभद्रता करने के साथ ही सरकारी कामकाज में बाधा पैदा करने और गाली देने के अलावा मारपीट की गई है। जिसके आधार पर एफआइआर दर्ज कर लिया गया और पुलिस उसकी तलाश में जुटी थी। बताया गया की अली शेर की जब सीओ से लेकर बहस हुआ था तो उस दौरान बहुत सारे कर्मी भी उपस्थित थे। जबकि, पंचायत समिति सदस्य अली शेरशाह ने बताया कि वह अपने पंचायत के एक व्यक्ति के कार्य के लिए गुहार लगाने सीओ के पास गया था। जिस पर अंचल अधिकारी द्वारा कार्यालय से बाहर निकलने की धमकी दी गई और झूठा मुकदमा भी दर्ज कराया गया है। जिसके बाद 15 जून को राजपुर प्रखंड के एक दर्जन से अधिक पंचायत समिति के सदस्यों ने डीएम और एसपी को लिखित आवेदन देकर इस मामले में न्याय की गुहार लगाई गई थी।

एग्जाम पास कीजिए या नौकरी छोड़ दीजिए

बिहार। 85 हजार नियोजित शिक्षकों को सुप्रीम कोर्ट से बड़ा झटका लगा है। कोर्ट ने बिहार के प्रारंभित शिक्षक संघों की सक्षमता परीक्षा को रद्द करने की मांग वाली याचिका को खारिज कर दिया है। इससे पहले पटना हाईकोर्ट से भी इस मामले में नियोजित शिक्षकों को झटका लगा था। सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने सख्त लहजे में कहा कि सरकार के नियमों के मुताबिक, उन्हें सक्षमता परीक्षा देनी ही होगी, अगर परीक्षा नहीं दे सकते तो उन्हें नौकरी छोड़ देनी चाहिए।बिहार प्रारंभिक शिक्षक संघ और परिवर्तनकारी प्रारंभिक शिक्षक संघ ने बिहार सरकार के उस फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी, जिसमें सरकार ने नियोजित शिक्षकों को स्थायी करने के लिए सक्षमता परीक्षा आयोजित करने का फैसला लिया था। सुप्रीम कोर्ट ने दोनों शिक्षक संघों की याचिका पर सुनवाई करते हुए कहा कि शिक्षक राष्ट्र के निर्माण में अहम भूमिका निभाते हैं और उन्हें अपने कौशल को और भी बेहतर करने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। नियोजित शिक्षकों की याचिका को खारिज करते हुए अदालत ने गुरुवार को कहा कि अगर सरकार शिक्षकों को बेहतर बनाने के लिए कोई कदम उठा रही है तो उसका समर्थन करना चाहिए। अगर आप इस तरह की परीक्षाओं का सामना नहीं कर सकते तो नौकरी छोड़ देनी चाहिए।

छोला-भटूरा और ऑटो रिपेयर दुकान से 2 बाल श्रमिक मुक्त

मधुबनी। मधुबनी के राजनगर प्रखंड में बाल श्रमिकों की विमुक्ति के लिए धावा दल के द्वारा विभिन्न दुकानों एवं प्रतिष्ठानों में सघन जांच अभियान चलाया गया। निरीक्षण के क्रम में छोला भटूरा की दुकान रांटी चौक से एक बाल श्रमिक एवं शत्रुध्न ऑटो रिपेयर नरकटिया चौक से एक बाल श्रमिक को विमुक्त कराया गया। विमुक्त बाल श्रमिकों को बाल कल्याण समिति, मधुबनी के समक्ष उपस्थापित कर निदेर्शानुसार उन्हें बाल गृह में रखा गया है। बाल एवं किशोर श्रम (प्रतिषेध एवं विनियमन) अधिनियम 1986 के तहत नियोजक के विरुद्ध संबंधित थाने में प्राथमिकी दर्ज करने की कार्रवाई की जा रही है।धावा दल में श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी राजनगर, श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी रहिका एवम श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी आंध्रठाढी शामिल थे। श्रम अधीक्षक राकेश रंजन ने बताया कि बाल श्रमिकों से किसी भी दुकान या प्रतिष्ठान में कार्य कराना बाल एवं किशोर श्रम (प्रतिषेध एवं विनियमन) अधिनियम 1986 के अंतर्गत गैरकानूनी है। बाल श्रमिकों से कार्य कराने वाले व्यक्तियों को ₹20000 से ₹50000 तक का जुमार्ना और 2 वर्षों तक के कारावास का प्रावधान है। इसके अतिरिक्त सर्वोच्च न्यायालय के द्वारा एम सी मेहता बनाम तमिलनाडु सरकार 1996 में दिए गए आदेश के आलोक में नियोजकों से ₹20000 प्रति बाल श्रमिक की दर से अलग से राशि की वसूली की जाएगी।

इसे जिलाधिकारी के पदनाम से संधारित जिला बाल श्रमिक पुनर्वास सह कल्याण कोष में जमा किया जाएगा।

पति की प्रेमिका ने पत्नी की जहर देकर कराई हत्या

गया। गया में पति ने अपनी प्रेमिका के साथ मिलकर पत्नी की हत्या कर दी। वारदात मुफस्सिल थाना क्षेत्र की है। आरोपी पति ने बताया कि उसका उसकी प्रेमिका से 8 साल से प्रेम संबंध था। कोर्ट में शादी भी कर ली थी, उससे एक बच्चा भी था। इधर, प्रेमिका ने उसे पत्नी को छोड़ने का दबाव डाला। महिला नहीं मानी तो मारने का प्लान किया। सिग्नोफ्लैक्स नाम के पेन किलर कैप्सूल में सल्फास मिलाकर पत्नी को खिलाया जिससे उसकी मौत हो गई। पुलिस ने 24 घंटे में खुलासा करते हुए पति, प्रेमिका और एक झोलाछाप डॉक्टर को गिरफ्तार किया है। बताया गया कि प्रेमिका के कहने पर डॉक्टर ने महिला को कैप्सूल के अंदर जहर दिया था। पति ने उसे दवा बताकर पत्नी को खिला दिया जिससे उसकी जान चली गई। मृतक की पहचान पूजा के रूप में हुई थी। पहले मामला खुदकुशी का बताया गया था। आरोपी विक्की, पूनम और डॉक्टर ओमप्रकाश से पुलिस ने सख्ती से पूछताछ की जिसके बाद मामले का खुलासा हुआ। वजीरगंज एसडीपीओ सुनील कुमार पांडेय ने बताया कि झोलाछाप डॉक्टर ने पूनम से इस काम के लिए 50 हजार में सौदा तय किया था। 50 हजार रुपए काम हो जाने के बाद पूनम को देने थे। एडवांस में एक हजार रुपए मिले थे। सुनील कुमार पांडे बताया कि बुधवार को एक महिला द्वारा आत्महत्या किए जाने का मामला प्रकाश में आया था। शव का पोस्टमार्टम भी कराया गया था। इस बीच पूजा के भाई राजा कुमार ने थाने में बताया कि उसकी बहन की हत्या जहर देकर की गई है।

4 साल पहले बड़ी ढाई महीने पहले छोटी बेटी लापता

पूर्णिया। के रुपौली थाना क्षेत्र का बिरौली बाजार में करीब ढाई महीने पहले एक 12 साल की बच्ची संदिग्ध तरीके से गायब हो गई। परिजनों ने काफी खोजबीन की, लेकिन गुमशुदगी के बाद अब तक प्रीति कुमारी की कोई खबर नहीं है। इतना ही नहीं चार साल पहले प्रीति की बड़ी बहन सोनी कुमारी भी ऐसे ही घर से खेलने के लिए निकली, लेकिन अभी तक लौट कर नहीं आई। उस समय उसकी उम्र 15 साल थी। मां रेखा देवी का कहना है कि प्रीति को आखिरी बार गांव के ही कैलू महलदार की साइकिल पर जाते हुए देखा था। मां ने उसका पीछा किया फिर आंखों के सामने से दोनों गायब हो गए। परिजन रोज थाने से लेकर जनप्रतिनिधि के दरवाजे तक का चक्कर काट रहे हैं, लेकिन हर जगह निराशा ही हाथ लग रही। प्रीति और सोनी कहां है, इसका जवाब किसी के पास नहीं है। परिजनों ने गांव में ही रहने वाले रंजीत कुमार ठाकुर, विविप ठाकुर, संजय ठाकुर और सकलदेव ठाकुर पर आरोप लगाया है। मां का कहना है कि इन लोगों के साथ एक कट्ठा जमीन को लेकर विवाद चल रहा है। इनके ही इशारों पर कैलू महलदार ने मेरी बेटी को किडनैप किया है। बड़ी बहन सोनी की गुमशुदगी की पहेली पुलिस सुलझा भी नहीं पाई और अब प्रीति के लापता होने की खबर ने पुलिस की टेंशन बढ़ा दी है। रहस्यमयी तरीके से गायब दोनों बहनें कहां गई या किसी ने किडनैप कर लिया..पूर्णिया पुलिस के पास इसका कोई जवाब नहीं है। पुलिस अब तक इस मिस्ट्री को सुलझा नहीं पाई है। पुलिस-प्रशासन, नेताओं से गुहार लगा रहा परिवार छठी कक्षा में पढ़ने वाली प्रीति चार बहनों में सबसे छोटी और घर की लाडली थी। प्रीति को गायब हुए ढाई महीने हो गए। इन ढाई महीनों में अब न तो रिश्तेदार साथ दे रहे, न स्थानीय थाना और न ही जिले के जनप्रतिनिधि।

आकाशीय बिजली की चपेट में आने से दो चचेरे भाईयों की मौत, जबकि तीन लोग बुरी तरह जख्मी

हमीरपुर। उत्तर प्रदेश के हमीरपुर के राठ कोतवाली क्षेत्र के बहगांव में आकाशीय बिजली गिरने से दो चचेरे भाईयों की मौत हो गई,जबकि तीन लोग बुरी तरह झुलस गये ,जिन्हें इलाज के लिये अस्पताल में एडमिट कराया गया है। घटना की जानकारी मिलते ही आला अधिकारियों ने मौके पर पहुँचकर मृतकों और पीड़ित के परिवारों से मिलकर शासन प्रशासन से मिलने वाली हर सम्भव मदद दिलाने का वादा किया जबकि राठ पुलिस ने मौके पर पहुँच कर शवों को कब्जे में लेकर पंचायतनामा भरने के बाद पोस्टमार्टम के लिए लिये भेज दिया गया है।

बदमाशों ने वृद्ध को मारी गोली, गंभीर

लखीसराय। के सूर्यगढ़ा थाना क्षेत्र के सुंदरपुर बिंद टोली गांव में गुरुवार देर शाम वृद्ध को गोली मारकर जख्मी करने का मामला सामने आया है। जिन्हें सूर्यगढ़ा सीएचसी से प्राथमिक उपचार के बाद सदर अस्पताल रेफर किया गया है। पीड़ित की पहचान सुंदरपुर बिंद टोली निवासी गुदरी बिंद के पुत्र देवनंदन बिंद(55) के रूप में हुई है। घटना की जानकारी देते हुए पीड़ित की पत्नी ने बताया कि वह अपने घर के दरवाजे पर बैठा था। जहां चार की संख्या में आए अपराधी ने पहले उनके साथ वाद-विवाद किया। फिर उसे गोली मारकर फरार हो गए। गोली पीड़ित के पेट में नाभि के नीचे लगा जो फिलहाल अंदर ही बताया जा रहा है।

सुख-समृद्धि के कारक शुक्र ग्रह का आज होगा उदय

पटना। शुक्र ग्रह 29 अप्रैल को पूर्व दिशा में अस्त हो गए थे, जो आज 28 जून शुक्रवार की शाम 5 बजे पश्चिम दिशा में उदय होंगे। शुक्र ग्रह का उदय आषाढ़ कृष्ण सप्तमी को बुध की राशि मिथुन में हो रहा है। इस राशि परिवर्तन का प्रभाव सभी राशियों पर होगा। इस पक्ष में दो तिथि के क्षय होने से लग्न-मुहूर्त शुरू नहीं हो पाएगा। शुक्रोदय के पूरे दस दिन बाद ही शहनाई की गूंज सुनाई देगी। इसके बाद हिंदुओ के सभी शुभ और मांगलिक कार्य शुरू हो जाएंगे। मिथिला में 3 तो बनारसी पंचांग में 7 मुहूर्त ज्योतिषाचार्य पंडित राकेश झा ने पंचांगों के हवाले से बताया कि शुक्र ग्रह के उदय होने के बाद सनातन धर्मावलंबियों के शादी-विवाह का शुभ मुहूर्त 15 जुलाई तक ही है। मांगलिक कार्य के लिए 9 जुलाई से 15 जुलाई तक मिथिला पंचांग के अनुसार तीन तो बनारसी पंचांग के मुताबिक सात शुभ लग्न मुहूर्त है। इसके बाद चातुर्मास शुरू हो जाएगा।

पूर्व मंत्री की बहू ने मुझपर चलवाई गोली मुजफ्फरपुर में घायल महिला

मुजफ्फरपुर। के बेला में महिला कंप्यूटर ऑपरेटर संस्कृति वर्मा को मंगलवार को अपराधियों ने 3 गोली मारी थी। फायरिंग तब हुई थी जब वो अपने ऑफिस के लिए निकली थी। ये केस अब हाई प्रोफाइल बनता जा रहा है। घायल महिला ने पुलिस को बताया है कि उस पर पूर्व मंत्री सुरेश शर्मा की बहू ने फायरिंग करवाई है। रुपा शर्मा का शहर में गाड़ी का शोरूम है। उसके पति रुपा शर्मा के शोरूम में ही काम करते थे, लेकिन वहां से जॉब छोड़ने के बाद लगातार रुपा फिर से जॉइन करने का दबाव बना रही थी। इन्हीं बातों को लेकर पिछले कुछ दिनों से पूर्व मंत्री की बहू से विवाद चल रहा था। पुलिस को दिए बयान में घायल संस्कृति ने यह बात कही है। फायरिंग में वाहन शो-रूम संचालिका का नाम सामने आने पर पुलिस पुख्ता सबूत जुटाने में लगी है। पुलिस की मुताबिक रुपा से पूछताछ करने की कोशिश की गई लेकिन वो पता चला वो शहर से बाहर है। एफआईआर में संस्कृति वर्मा ने बताया है कि 25 जून की सुबह 10:10 बजे स्कूटी से भारत माता चौक स्थित आवास से बेला फेज वन स्थित आभा इंजीनियरिंग

फैक्ट्री जा रही थी। गोपाल मसाला फैक्ट्री के पास पहुंची थी, तभी पीछे से तीन युवक काली पल्सर बाइक से आए और घेर लिया।बाइक पर बीच में बैठे युवक ने पिस्टल से तीन गोली चलाई। एक गोली बाएं कंधे, दूसरी गोली पीछे कमर के नीचे और तीसरी गोली पेट में लगी। जाते-जाते पीछे बैठे युवक ने भी गोली चलाई, लेकिन वो नहीं लगी। बाइक पर पीछे और बीच में बैठे युवकों के पास एक-एक पिस्टल थी। तीनों की उम्र 25-26 के बीच रही होगी। कुछ दिन पहले भी बाइक सवार दो युवकों ने घेरकर मारपीट की थी।इस केस की जांच की जिम्मेदारी सब इंस्पेक्टर ज्योति कुमारी को दी गई है। सीसीटीवी फुटेज में कैद बाइक के नंबर प्लेट के आधार पर पुलिस अपराधियों तक पहुंचने में जुटी है।

पुलिस वाहन शो-रूम संचालिका और जख्मी महिला के पति समेत कई अन्य की कॉल डिटेल खंगाल रही है।

इधर, सिटी एसपी अवधेश सरोज दीक्षित ने बताया कि गोली से घायल महिला की हालत अभी स्थिर है। ऑपरेशन कर उसके शरीर में लगी तीनों गोली निकल दी गई है।

अब वह थोड़ी बातचीत भी कर रही है।

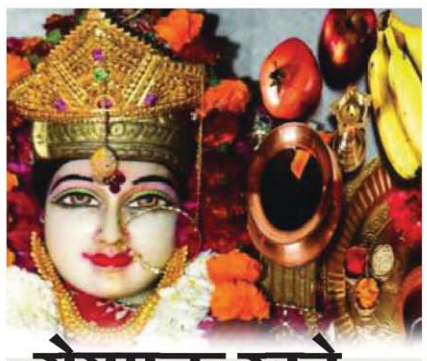

रोगमुक्त रहने के लिए ऐसे करें की शीतला अष्टमी पूजा

29 जून, शनिवार को शीतला अष्टमी मनाई जाएगी. शीतला देवी की पूजा सूर्योदय से पूर्व करना चाहिए, क्योंकि माता शीतलता का प्रतीक हैं. शीतला अष्टमी की पूजा में देवी को ठंडी बाजी चीजों का भोग लगाया जाता है. देवी शीतला का भोग व्रत से एक दिन पहले यानी सप्तमी की रात को ही बना लिया जाता है. शास्त्रों के अनुसार शीतला अष्टमी संतान की खुशहाली, सलामती और सफलता के विशेष फलदायी माना गया है. जानें शीतला अष्टमी का शुभ मुहूर्त, पूजा विधि और नियम.

शीतला अष्टमी की पूजा विधि

- शीतला अष्टमी के दिन सूर्योदय से पूर्व स्नान कर लें और फिर स्वच्छ वस्त्र पहनें.
- पूजा की थाली तैयार करें - थाली में दही, पुआ, रोटी, बाजरा, सप्तमी को बने मीठे चावल, नमक पारे और मठरी रखें। वहीं दूसरी थाली में आटे से बना दीपक, रोली, वस्त्र, अक्षत, मोली, होली वाली बड़कुले की माला, सिक्के और मेहंदी रखें और साथ में ठंडे पानी का लोटा रखें.
- अब शीतला माता की मूर्ति पर जल अर्पित करें. देवी पर चढ़ाया जल थोड़ा सा इक्ठ्ठा कर लें पूजा के बाद इसे आंखों पर लगाएं. इससे आरोग्य मिलता है.
- अब नीम के पेड़ पर भी जल चढ़ाएं. देवी को कुमकुम, हल्दी, मेहंद, अक्षत, कलावा चढ़ाएं. देवी को बासी हलवा, पूड़ी, बाजरे की रोटी, पुए, राबड़ी, आदि का भोग लगाएं.
- अब घी का दीपक बिना जलाए ही देवी की मूर्ति के सामने रख दें. शीतला अष्टमी व्रत की कथा करें, शीतलाष्टक स्तोत्र का पाठ भी करना अच्छा होता है.
- अब हल्दी को गिला कर हाथ में लगाएं और इसे घर के मुख्य द्वार या रसोई की दीवार पर छापे दें.इसके ऊपर कुमकुम और चावल लगाएं
- इस दिन देवी के भोग के लिए बनाए पकवान ही परिवार सहित ग्रहण करें.

शीतला अष्टमी पूजा मंत्र

वन्देहं शीतलां देवीं रासभस्थां दिगम्बराम।
मार्जनीकलशोपेतां शूर्पालङ्कृतमस्तकाम।।

शीतला अष्टमी पर क्या न करें

- शीतला अष्टमी से एक दिन पहले यानी सप्तमी की रात को स्नान कर स्वच्छता के साथ भोग बनाएं.
- शीतला अष्टमी के दिन नए कपड़े या काले कपड़े न पहनें.
- कहते हैं शीतला अष्टमी के दिन सुई में धागा नहीं डालना चाहिए और न ही सिलाई करनी चाहिए.
- शीतला अष्टमी के दिन चूल्हा नहीं जलाया जाता

योगिनी एकादशी व्रत का पारण कब है?

हिंदू धर्म में एकादशी व्रत का विशेष महत्व माना गया है. आषाढ़ महीने के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि के दिन योगिनी एकादशी का व्रत किया जाता है. इस साल 2 जुलाई को योगिनी एकादशी का व्रत रखा जाएगा. एकादशी तिथि व्रत भगवान विष्णु को समर्पित होती है. इस दिन व्रत रखने और भगवान विष्णु की पूजा करने से घर में सुख, सौभाग्य और समृद्धि की प्राप्ति होती है.

योगिनी एकादशी का व्रत निर्जला एकादशी के बाद और देवशयनी एकादशी से पहले रखा जाता है. शास्त्रों की मानें तो एकादशी व्रत रखने से व्यक्ति के जीवन में आ रही सभी परेशानियां दूर हो जाती हैं और व्यक्ति को पुण्य के बराबर फल प्राप्त होता है. मान्यता है कि योगिनी एकादशी के दिन भगवान विष्णु की उपासना और व्रत रखने से व्यक्ति को मृत्यु के बाद 'श्रीहरि' के चरणों में स्थान प्राप्त होता है. एकादशी व्रत का पारण अगले दिन द्वादशी तिथि के दिन किया जाता है. ऐसे में अगर आप योगिनी एकादशी का व्रत रखने जा रहे हैं तो आपको बताते हैं योगिनी एकादशी व्रत पारण का समय और कुछ जरूरी नियम.

योगिनी एकादशी व्रत तिथि

हिंदू पंचांग के अनुसार, आषाढ़ माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि शुरू - 1 जुलाई को सुबह 10 बजकर 26 मिनट पर. आषाढ़ माह कृष्ण पक्ष एकादशी तिथि समाप्त 2 जुलाई को सुबह 8 बजकर 34 पर. ऐसे में उदयातिथि को मानते हुए योगिनी एकादशी का व्रत 2 जुलाई 2024 को रखा जाएगा.

योगिनी एकादशी 2024 व्रत पारण कब है?

योगिनी एकादशी व्रत का पारण अगले दिन द्वादशी तिथि पर किया जाता है. ऐसे में 3 जुलाई सुबह 5.28 मिनट से लेकर सुबह 7.10 मिनट के बीच योगिनी एकादशी व्रत का पारण किया जाएगा.

एकादशी का पारण द्वादशी तिथि के दौरान ही करना शुभ माना गया है. द्वादशी तिथि का समापन 3 जुलाई को सुबह 7 बजकर 10 मिनट पर होगा.

योगिनी एकादशी व्रत का महत्व

धार्मिक मान्यता के अनुसार, योगिनी एकादशी का व्रत करने से व्यक्ति के द्वारा जाने-अनजाने में किए गए सारे पाप मिट जाते हैं और घर में खुशहाली बनी रहती है. ऐसा कहा जाता है कि योगिनी एकादशी का व्रत करना 88 हजार ब्राह्मणों को भोजन कराने के बराबर का फल देता है.

योगिनी एकादशी व्रत पारण नियम

- शास्त्रों के अनुसार, एकादशी व्रत का पारण हरि वासर समय समाप्त होने के बाद ही करना चाहिए.
- एकादशी व्रत तोड़ने के लिए सबसे सही समय प्रातः काल का माना जाता है.
- लोग एकादशी व्रत कर रहे हैं उन्हें मध्याह्न यानी दोपहर के समय व्रत का पारण नहीं करना चाहिए.
- अगर सुबह ऐसा नहीं कर पाएं, तो दोपहर के बाद पारण करना चाहिए.
- एकादशी व्रत पारण के समय भोजन में मूली, बैंगन, साग, मसूर दाल, लहसुन या प्याज आदि का भूलकर भी इस्तेमाल न करें.
- एकादशी व्रत पारण का पारण सात्विक भोजन से करें और उस भोजन में चावल को जरूर शामिल करें.
- द्वादशी के दिन एकादशी व्रत पारण के समय चावल खाना शुभ माना जाता है.

योगिनी एकादशी का महत्व

योगिनी एकादशी निर्जला एकादशी के बाद और देवशयनी एकादशी से पहले की जाती है। मान्यता है कि इस व्रत को करने से आपके घर में धन, संपत्ति, वैभव आता है और आपको सुख समृद्धि प्राप्त होती है। भगवान विष्णु के योग निद्रा में जाने से पहले इस एकादशी पर पूजा करने और भजन कीर्तन करने का खास महत्व होता है। ऐसा मानते हैं कि इस दिन ईश्वर की कृपा आपको प्राप्त होती है और पूरे परिवार पर आपकी कृपा बनी रहती है।

योगिनी एकादशी पर बने हैं ये शुभ योग

योगिनी एकादशी पर अबकी बार त्रिपुष्कर योग और सर्वार्थ सिद्धि योग बन रहा है। 2 जुलाई को सर्वार्थ सिद्धि योग सुबह 5 बजकर 27 मिनट से अगले दिन सुबह 3 जुलाई को 4 बजकर 40 मिनट तक रहेगा। इसके अलावा त्रिपुष्कर योग 2 जुलाई को सुबह 8 बजकर 42 मिनट से अगले दिन 3 जुलाई को सुबह 4 बजकर 40 मिनट तक रहेगा।

योगिनी एकादशी के उपाय

पीपल में जल अर्पित करें

इस दिन कर्ज से मुक्ति के लिए पीपल वृक्ष में जल अर्पित करके उसकी विधिवत पूजा करें।

लक्ष्मी प्राप्ति

इस दिन धन-धान्य तथा लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए घर में भगवान श्री विष्णु तथा माता लक्ष्मी का केसर मिले जल से अभिषेक करें।

घी का दीया

एकादशी तिथि पर पीपल में मीठा जल चढ़ाने तथा शाम के समय पीपल की जड़ में घी का दीया लगाना बहुत ही शुभ माना जाता है।

तुलसी पूजन

एकादशी के दिन सायं के समय तुलसी के सामने गाय के घी का दीपक जलाकर ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नमः का जाप करते हुए तुलसी जी की 11 परिक्रमा करें, इस उपाय से घर के समस्त संकट और आने वाली परेशानियां भी दूर जाती हैं।

दान-पुण्य

एकादशी के दिन उपवास के पश्चात द्वादशी तिथि पर पारण से पूर्व ब्राह्मणों को मिठाई, दक्षिणा तथा गरीबों को खाद्य सामग्री देने के पश्चात ही खुद पारणा करना लाभकारी होता है।

जाप मंत्र

एकादशी के दिन सुबह घर की सफाई करके मुख्य द्वार पर हल्दीयुक्त जल या गंगा जल का छिड़काव करके मंत्र- ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नमः का 108 बार जाप करें। जाप में तुलसी की माला को उपयोग में लाएं।

स्थायी धन प्राप्ति

स्थायी धन की प्राप्ति के लिए पूजा स्थान में 11 गौमती चक्र रखकर स्फटिक की माला से श्री महालक्ष्म्यै श्रीयें नमः मंत्र का 11 माला जाप करके उन्हें लाल वस्त्र में बांधकर तिजोरी में धन वाले स्थान पर रख दें।

रुपए का दान

इस दिन अपने सामर्थ्य के अनुसार वस्त्र और रुपया-पैसे का दान अवश्य करना चाहिए।

आषाढ़ अमावस्या कब है, पितर पूजन के लिए खास मानी जाती है यह तिथि

आषाढ़ अमावस्या का धार्मिक और पौराणिक महत्व बहुत खास माना जाता है। इस साल आषाढ़ अमावस्या 5 जुलाई दिन शुक्रवार को है। इस दिन जरूरतमंद लोगों की मदद करने और जरूरत की वस्तुएं दान करने से मां लक्ष्मी आपसे प्रसन्न होती है और आपको सदैव सुखी और संपन्न रखती हैं। आइए जानते हैं आषाढ़ अमावस्या का महत्व और इस दिन क्या करें और क्या नहीं।

आषाढ़ मास की अमावस्या का महत्व धार्मिक रूप से बहुत खास माना गया है। आषाढ़ अमावस्या इस बार 5 जुलाई को है। मान्यताओं के अनुसार इस दिन स्नान दान और पूजापाठ करने का खास महत्व होता है। कहते हैं कि हर महीने की अमावस्या को पितर धरती पर अपने परिजनों को देखने आते हैं। यदि इस दिन उनके नाम से दान पुण्य के कार्य किए जाएं तो आपको बहुत ही शुभ फल की प्राप्ति होती है। पितर अमावस्या की तरह ही आषाढ़ अमावस्या का महत्व शास्त्रों में बहुत खास माना गया है। आइए आपको इस बारे में विस्तार से बताते हैं और जानते हैं कुछ और खास बातें।

आषाढ़ अमावस्या कब से कब तक

हिंदू पंचांग के अनुसार आषाढ़ अमावस्या 5 जुलाई शुक्रवार को सुबह 4 बजकर 57 मिनट से लेकर अगले दिन 6 जुलाई को सुबह 4 बजकर 26 मिनट तक रहेगी। इसलिए उदया तिथि के आधार पर आषाढ़ अमावस्या का व्रत 5 जुलाई शुक्रवार को रखा जाएगा।

आषाढ़ अमावस्या पर क्या करें

आषाढ़ अमावस्या का महत्व शास्त्रों में बहुत ही खास माना जाता है। इस दिन सुबह स्नान करने के बाद पितरों का तर्पण करना सबसे शुभ माना जाता है। इसके बाद पितरों के नाम से दान पुण्य करना चाहिए। इस दिन जरूरतमंद लोगों को वस्त्र और अनाज का दान करना चाहिए। पितरों का तर्पण करने के लिए कुश, काले तिल और सफेद फूल का प्रयोग करना सबसे अच्छा माना जाता है।

आषाढ़ अमावस्या की शाम को पीपल के पेड़ पर सरसों के तेल का दीपक जरूर जलाना चाहिए। कहते हैं पीपल के पेड़ पर पितरों का वास होता है। इसके अलावा अमावस्या तिथि पर आपको शाम के वक्त दक्षिण दिशा में सरसों के तेल का दीपक जरूर जलाकर रखना चाहिए। अमावस्या के दिन आटा दान करना बहुत अच्छा माना जाता है। इसके साथ ही इस दिन नमक और चीनी का दान भी जरूर करें।

आषाढ़ अमावस्या पर क्या न करें

अमावस्या तिथि को शास्त्रों में बहुत ही नियम संयम का पालन करने वाला दिन माना जाता है। इस दिन भूलकर भी किसी बुजुर्ग का अपमान न करें और किसी के साथ विवादों में पड़ने से बचें। अमावस्या तिथि पर मांस मदिरा का सेवन भूलकर भी न करें और द्वार पर आए किसी भिक्षुक को खाली हाथ न जाने दें।

दक्षिण दिशा में है आपके घर का मुख्य दरवाजा, तो इन उपायों से टालें अनहोनी का खतरा

वास्तु शास्त्र के अनुसार अगर आपके घर का मुख्य दरवाजा दक्षिण दिशा की तरफ है, तो आपको कुछ उपाय करके घर में आने वाली ऊर्जा को सकारात्मक बनाए रखने के लिए कुछ उपाय जरूर करने चाहिए। आइए, जानते हैं वास्तु शास्त्र के अनुसार घर का मुख्य दरवाजा दक्षिण दिशा में होने पर क्या करना चाहिए।

वास्तु शास्त्र के अनुसार घर में आने वाली सकारात्मक और नकारात्मक ऊर्जा घर की छोटी-छोटी चीजों पर भी निर्भर करती है। जैसे, अगर वास्तु शास्त्र के अनुसार अगर आपके घर का दरवाजा दक्षिण दिशा की तरफ होता है, तो आपके घर में अनहोनी या भी नकारात्मक घटनाएं होने की आशंका काफी बढ़ जाती है क्योंकि मान्यता है कि दक्षिण दिशा यमराज की दिशा होती है, इसलिए दक्षिण दिशा में मुख्य द्वार नहीं बनाए जाते, लेकिन जानकारी की कमी के चलते कई लोग दक्षिण दिशा में मुख द्वार बनवा लेते हैं। ऐसे में इसे शुभ नहीं माना जाता है। आइए, जानते हैं कि अगर किसी कारणवश आपके घर का मेन गेट दक्षिण दिशा की तरफ है, तो आपको कौन-से उपाय करने चाहिए।

दक्षिण दिशा में रखें गणेश जी की प्रतिमा

आपके घर का दरवाजा अगर दक्षिण दिशा की तरफ है, तो आपको दक्षिण दिशा में गणेश जी की प्रतिमा जरूर लगानी चाहिए। इससे भी दक्षिण दिशा में घर का मुख्य दरवाजा होने के अशुभ प्रभाव कम हो जाते हैं। गणेश जी प्रतिमा को रोजाना साफ जरूर करें। याद रखें कि आपको घर की दक्षिण दिशा में भगवान की मूर्ति तब ही रखनी चाहिए, जब आपके घर का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में हो।

दक्षिण दिशा की दीवार पर बनाएं स्वास्तिक

घर से नकारात्मक ऊर्जा दूर करने के लिए आपको दक्षिण दिशा की दीवार पर स्वास्तिक का निशान बनाना चाहिए। इससे भी घर में बनी नकारात्मक ऊर्जा बाहर हो जाती है और घर में सुख-समृद्धि का वास होता है। शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आपको रोजाना रोली से दीवार पर स्वास्तिक बनाना चाहिए।

दक्षिण दिशा में लगाएं हनुमान जी फोटो

आपको दक्षिण दिशा में हनुमान जी की आशीर्वाद देने वाली मुद्रा में तस्वीर जरूर लगानी चाहिए। इसके अलावा आप दक्षिण दिशा में पंचमुखी हनुमान जी की तस्वीर भी दक्षिण दिशा में लगा सकते हैं। इससे हनुमान जी आपके घर में कृपा बनाकर रखेंगे और आपकी सारी पीड़ाएं दूर कर देंगे।

दक्षिण दिशा में रखें कैक्टस

घर में कैक्टस का पौधा लगाना शुभ नहीं माना जाता लेकिन अगर आप घर का दरवाजा दक्षिण दिशा में होने की वजह से उपाय के तौर पर कैक्टस लगाते हैं, तो इसके अशुभ प्रभाव खत्म हो जाते हैं। घर में कैक्टस यानी नागफनी का पौधा लगाने से नकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश घर में नहीं होता।

दक्षिण दिशा में लगाएं बड़ा-सा शीशा

आपके घर का दरवाजा अगर दक्षिण दिशा में है, तो आपको दक्षिण दिशा में दरवाजे के ठीक सीधी पड़ने वाली दीवार पर एक बड़ा-सा शीशा जरूर लगाना चाहिए, इससे दरवाजा खुलते ही घर में आई नकरात्मक ऊर्जा शीशे से टकराकर वापस चली जाएगी।

रूसी हैकरों ने उम्मीद से ज्यादा चुराए थे ग्राहकों के ईमेल्स

- चार महीने बाद माइक्रोसॉफ्ट ग्राहकों को फिर क्यों भेज रही नोटिफिकेशन

नई दिल्ली ।

माइक्रोसॉफ्ट कॉर्पोरेशन अब और ग्राहकों को सूचना भेज रही है कि उनके द्वारा आपस में भेजे गए ईमेल को रूसी हैकरों द्वारा एक्सेस किए गए थे। ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट के मुताबिक हैकिंग की संख्या इतनी ज्यादा थी कि पहले रिपोर्ट किए गए राज्य-प्रायोजित डेटा उल्लंघन से कहीं ज्यादा प्रभाव इस बार पड़ा है।

एक रिपोर्ट में बताया गया कि इस साल की शुरुआत में माइक्रोसॉफ्ट के सिस्टम में सेंध लगाने और कर्मचारियों के इनबॉक्स की जासूसी करने वाले रूसी हैकरों ने इसके ग्राहकों के ईमेल भी चुराए थे। कंपनी ने यह जानकारी पहली बार घुसपैठ का खुलासा करने के लगभग छह महीने बाद दी है। जनवरी में माइक्रोसॉफ्ट ने खुलासा किया था कि हैकरों ने सीनियर नेताओं के ईमेल चुरा लिए थे, जिन्हें वे ग्राहकों की बातचीत में सेंध लगाने की कोशिश में उपयोग कर रहे थे, इनमें सरकारी एजेंसियां भी शामिल थीं। माइक्रोसॉफ्ट ने इस हमले का आरोप एक समूह पर लगाया, जिसे वह मिडनाइट ब्लिजार्ड कहती है। अमेरिकी और इंगलैंड के अधिकारियों ने इसे रूसी विदेशी खुफिया सर्विस का हिस्सा कहा है। जनवरी में दुनिया की सबसे बड़ी सॉफ्टवेयर कंपनी ने कहा था कि मिडनाइट ब्लिजार्ड ने कंपनी के कॉर्पोरेट ईमेल खातों का बहुत छोटा प्रतिशत एक्सेस किया था। चार महीने बाद उसने कहा कि वे हैकर्स अभी भी सेंध लगाने की कोशिश कर रहे हैं, जिससे उसके कई सुरक्षा उद्योग के साथी और ग्राहक चिंतित हो गए, जिन्होंने सवाल किया कि माइक्रोसॉफ्ट के सिस्टम असुरक्षित क्यों बने हुए हैं। प्रवक्ता ने कहा कि माइक्रोसॉफ्ट के अधिकारियों के ईमेल को खंगालते समय हैकर्स को अन्य कंपनियों और ऑर्गेनाइजेशंस के साथ भेजे गए मैसेज मिले और माइक्रोसॉफ्ट अब ग्राहकों को इसके बारे में नोटिफाई कर रहा है कि हैकरों मे उनके कौन से ईमेल को एक्सेस किया था। हालांकि कंपनी ने यह बताने से इनकार कर दिया कि किन ग्राहकों को नोटिस भेजे जा रहे हैं।

कई राज्यों में सस्ता हुआ पेट्रोल और डीजल

नई दिल्ली ।

भारत में पेट्रोल-डीजल की कीमतें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल के दाम पर आधारित होती हैं। आपको बता दें कि भारतीय ऑयल मार्केटिंग कंपनियां अंतरराष्ट्रीय बाजार में क्रूड ऑयल के आधार पर कीमतों की समीक्षा के बाद रोज पेट्रोल और डीजल के भाव तय करती हैं। जिसके बाद हर सुबह 6 बजे सरकारी तेल कंपनियों पेट्रोल और डीजल का नए भाव जारी करती है। ऐसे ही तेल कंपनियों ने शुक्रवार को पेट्रोल-डीजल की नई दरें जारी कर दी है। जिसके मुताबिक देश के कुछ राज्यों में पेट्रोल-डीजल महंगा हो गया है। जबकि कुछ राज्यों में इसकी कीमतें घटी भी हैं। अगर वही राज्य स्तर की बात करें तो आज बिहार में पेट्रोल 9 पैसे घटकर 107.21 रुपये प्रति लीटर और डीजल 9 पैसे घटकर 93.92 रुपये प्रति लीटर मिल रहा है। इसके अलावा छत्तीसगढ़, हिमाचल प्रदेश, केरल, नागालैंड, ओडिशा,पंजाब, राजस्थान और तामिलनाडु में पेट्रोल डीजल की कीमतों में कटौती की गई है। तो वही महाराष्ट्र में पेट्रोल-डीजल की कीमतों में बढ़ोतरी देकने को मिली है। यहां पेट्रोल के दाम 37 पैसे बढ़कर 104.56 रुपये प्रति लीटर और डीजल 35 पैसे बढ़कर 91.08 रुपये प्रति लीटर मिल रहा है। इसके अलावा, हरियाणा, मध्य प्रदेश, मिजोरम, पुडुचेरी और तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, गोवा, गुजरात में पेट्रोल डीजल के भाव बढ़ गए हैं। वहीं दिल्ली में पेट्रोल की कीमत 94.72 रुपये और डीजल 87.62 रुपये प्रति लीटर, मुंबई में पेट्रोल की कीमत 104.21 रुपये और डीजल 92.15 रुपये प्रति लीटर, कोलकाता में पेट्रोल की कीमत 103.94 रुपये और डीजल 90.76 रुपये प्रति लीटर और चेन्नई में पेट्रोल की कीमत 100.75 रुपये और डीजल 92.34 रुपये प्रति लीटर है।

जियो के प्रीपेड और पोस्टपेड प्लान हुए महंगे

नई दिल्ली ।

रिलायंस जियो ने अपने प्रीपेड और पोस्टपेड प्लान्स की कीमतों में 12 से 25 फीसदी तक की बढ़ोतरी कर दी है। नए टैरिफ प्लान 3 जुलाई से लागू होंगे। टैरिफ में वृद्धि करने की घोषणा के साथ ही जियो ने दो नए ऐप भी लॉन्च किए। नए एआई-पावर्ड ऐप, जियोसेफ और जियो ट्रांसलेट एक साल तक जियो यूजर्स को फ्री मिलेंगे। इसके बाद जियो सेफ के लिए यूजर्स को 199 रुपये प्रति महीना और जियो ट्रांसलेट के लिए 99 रुपये महीना शुल्क देना होगा। ये नए ऐप उन्नत तकनीकी समाधानों के माध्यम से यूजर्स एक्सपीरियंस को बढ़ाने के लिए जियो के समर्पण को रेखांकित करते हैं। जियोसेफ के जरिए कंपनी क्वांटम सिक्योर वॉइस कॉलिंग, मैसेजिंग, टेक्स्ट, इमेज और फाइल ट्रांसफर की सुविधा देगी। इसके लिए हर महीने 99 रुपए का चार्ज लगेगा लेकिन जियो यूजर्स को एक साल के लिए यह फ्री में मिलेगा। यह एप्लिकेशन व्यक्तिगत और बिजनेस कम्यूनिकेशन को सुरक्षा प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह उपयोगकर्ताओं के डेटा की सुरक्षा किसी भी संभावित साइबर खतरे से सुरक्षित करेगा। जियो सेफ की क्वांटम एन्क्रिप्शन तकनीक डिजिटल सुरक्षा की अगली पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती है। कम्यूनिकेशन में प्राइवेसी और डेटा इंटिग्रिटी को प्राथमिकता देने वाले यूजर्स के लिए जियोसेफ किसी तोहफे से कम नहीं है। सबसे कम रिचार्ज की कीमत बढ़ाकर 19 रुपये की जा रही है। यह एक जीबी डाटा 'ऐड-ऑन-पैक' पैक है, जिसकी कीमत 15 रुपये थी। यह लगभग 25 प्रतिशत अधिक है।

कंपनी ने बताया कि 75 जीबी पोस्टपेड डेटा प्लान की कीमत अब 399 रुपये से बढ़कर 449 रुपये हो जाएगी। जियो ने 84 दिन की वैधता वाले लोकप्रिय 666 रुपये वाले अनलिमिटेड प्लान की कीमत भी लगभग 20 प्रतिशत बढ़ाकर 799 रुपये कर दी है।

सोने का भाव गिरा, चांदी की चमक बढ़ी

- सोने के वायदा भाव 71,500, चांदी लगभग 87,200 रुपए

नई दिल्ली ।

सोने के वायदा भाव में शुक्रवार को नरमी देखने को मिल रही है, जबकि चांदी के वायदा भाव में तेजी देखी जा रही है। सोने के वायदा भाव 71,500 रुपये के करीब, जबकि चांदी के वायदा भाव 87,200 रुपये के करीब कारोबार कर रहे थे। वैश्विक बाजार में सोने व चांदी के वायदा भाव की शुरुआत तेजी के साथ हुई। लेकिन बाद में सोने के भाव में नरमी देखी जाने लगी। सोने के वायदा भाव की शुरुआत आज गिरावट के साथ हुई। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोने का बेंचमार्क अगस्त कॉन्ट्रेक्ट 150 रुपये की गिरावट के साथ 71,422 रुपये के भाव पर खुला। इस समय यह 123 रुपये की गिरावट के साथ 71,449 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। चांदी के वायदा भाव की शुरूआत तेज रही। एमसीएक्स पर चांदी का बेंचमार्क जुलाई कॉन्ट्रेक्ट 168 रुपये की तेजी के साथ 87,216 रुपये पर खुला। इस समय यह 142 रुपये की तेजी के साथ 87,190 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने चांदी के वायदा भाव की शुरुआत तेज रही। लेकिन बाद में सोने के भाव गिर गए। कॉमेक्स पर सोना 2,338.60 डॉलर प्रति औंस के भाव पर खुला। पिछला बंद भाव 2,336.60 डॉलर प्रति औंस था। इस समय यह 5.10 डॉलर की गिरावट के साथ 2,331.50 डॉलर प्रति औंस के भाव पर कारोबार कर रहा था। कॉमेक्स पर चांदी के वायदा भाव 29.28 डॉलर के भाव पर खुले, पिछला बंद भाव 29.25 डॉलर था। इस समय यह 0.10 डॉलर की तेजी के साथ 29.35 डॉलर प्रति औंस के भाव पर कारोबार कर रहा था।

टाटा समूह फिर बना देश का सबसे कीमती ब्रांड

- इंफोसिस नंबर दो तो एचडीएफसी समूह तीसरे नंबर पर

मुंबई ।

टाटा समूह 28.6 अरब डॉलर की ब्रांड वैल्यू के साथ एक बार फिर से भारत का सबसे मूल्यवान ब्रांड बन गया है। ब्रांड फाइनेंस ने 2024 की अपनी रिपोर्ट में देश के प्रतिष्ठित टाटा समूह को नंबर एक, सूचना तकनीक क्षेत्र की कंपनी इंफोसिस को नंबर दो और बैंकिंग व फाइनेंस क्षेत्र की एचडीएफसी समूह को तीसरे नंबर पर रखा है। रिपोर्ट में कहा गया है कि टाटा समूह की ब्रांड वैल्यू पिछले साल के मुकाबले इस बार 9 फीसदी बढ़ी है। पहली बार भारत की किसी कंपनी का ब्रांड मूल्य 30 अरब डॉलर के करीब पहुंचा है। यह भारतीय अर्थव्यवस्था में लोगों की उम्मीद को दिखाता है। रिपोर्ट के अनुसार इन्फोसिस की ब्रांड वैल्यू में भी 9 फीसदी की वृद्धि हुई है। खास बात यह है कि पूरी दुनिया में आईटी क्षेत्र में गिरावट के बावजूद इन्फोसिस ने यह उछाल दर्ज की है। उसका ब्रांड मूल्य 14.2 अरब डॉलर है। एचडीएफसी समूह को अपने बैंकिंग और फाइनेंस कंपनियों के एकीकरण का फायदा हुआ है और ब्रांड मूल्यांकन के मामले में 10.4 अरब डॉलर मूल्य के साथ यह तीसरे स्थान पर है। वैसे देश में अन्य बैंकों के ब्रांड मूल्य में भी जोरदार उछाल आया है। इस सेक्टर ने कुल मिलाकर 26 फीसदी से अधिक की वृद्धि दर्ज की है और इसमें भी इंडियन बैंक, इंडसइंड बैंक व यूनियन बैंक का प्रदर्शन जोरदार रहा है। रिपोर्ट के अनुसार सबसे अधिक 61 फीसदी की वृद्धि टेलीकॉम सेक्टर की कंपनियों ने दर्ज की है और 26 फीसदी के साथ बैंकिंग दूसरे जबकि खनन, लोहा व इस्पात क्षेत्र ने 16 फीसदी की वृद्धि दर्ज की। टेलीकॉम क्षेत्र की दिग्गज कंपनियों जियो, एयरटेल व वीआई ने उपभोक्ताओं के उपभोग पैटर्न को ध्यान में रखकर अपने ग्रोथ को गति दी है। इसी प्रकार बैंकिंग क्षेत्र में नियामकीय सुधार ने ब्रांड वैल्यू बढ़ाने में मदद की है।

रुपया आठ पैसे बढ़कर 83.37 डॉलर पर

मुंबई । घरेलू शेयर बाजारों में सकारात्मक रुख और विदेशी कोषों की लिवाली की वजह से रुपया शुक्रवार को शुरुआती कारोबार में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले आठ पैसे बढ़कर 83.37 पर पहुंच गया। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने कहा कि अन्य बाजारों में डॉलर की मजबूती और कच्चे तेल की ऊंची कीमतों ने स्थानीय इकाई पर दबाव डाला और रुपये की बढ़त को सीमित किया। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 83.42 पर खुला और शुरुआती सौदों में डॉलर के मुकाबले 83.37 पर पहुंच गया। इस तरह रुपये ने पिछले बंद स्तर से आठ पैसे की वृद्धि दर्ज की। रुपया बृहस्पतिवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 12 पैसे बढ़कर 83.45 पर बंद हुआ था। इस बीच छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.15 प्रतिशत बढ़कर 106.06 पर था।

निफ्टी दिसंबर तक छू सकता है 25200 का स्तर

नई दिल्ली । बाजार के विशेषज्ञों का कहना है कि दिसंबर 2024 तक निफ्टी 25,200 के स्तर को छू सकता है। अब तक के चुनावी सालों में शेयर बाजार का कारोबार अच्छा रहा है, इस हिसाब से बाजार के जानकारों ने कहा है कि निफ्टी दिसंबर 2024 में 25,200 के स्तर पर पहुंच सकता है जबकि इसे 22,200 पर मजबूती हासिल है। उन्होंने कहा है कि 1999 के बाद से चुनावी साल में निफ्टी में 21 फीसदी की तेजी दर्ज की जाती है। हर बार आम चुनाव होने के बाद साल के आखिर तक निफ्टी कम से कम 21 फ़ीसदी की तेजी जरूर देखता है। बाजार के जानकारों ने कहा है कि जून 2022 से निफ्टी में 10 फ़ीसदी करेक्शन अगले 6 महीने में 20 फीसदी रैली के संकेत दे रहा है। चुनावी नतीजे के दिन निफ्टी में कमजोरी देखी गई थी जिसके बाद से इसमें बंपर तेजी देखी जा रही है। एक रिपोर्ट में यह कहा गया है कि ग्लोबल सेटअप शेयर बाजार में तेजी की तरफ इशारा कर रहे हैं। पिछले पांच चुनावी सालों में अमेरिकी बाजार में जून से नवंबर के बीच औसतन 9 फ़ीसदी की वृद्धि हुई है। निफ्टी में साल 2008 को छोड़कर हर चुनावी साल में जून से दिसंबर के बीच 20 फ़ीसदी की तेजी देखी गई है।

रिलायंस कंपनी का मार्केट कैप 21 लाख करोड़ के पार

मुंबई । रिलायंस इंडस्ट्रीज का मार्केट कैप पहली बार 21 लाख करोड़ रुपए के पार पहुंच गया है। शुक्रवार को रिलायंस के शेयरों में 1.90 फीसदी की तेजी आई और यह 3,129 के अपने ऑल टाइम हाई पर पहुंच गया। रिलायंस इंडस्ट्रीज पर कवरेज करने वाले 35 विश्लेषकों में से 28 ने इसे बीयूवाय की सिफारिश की है, उनमें से पांच ने इसे होल्ड करने की सलाह दी है, जबकि दो ने इसे सेल रेटिंग दी है। ग्लोबल ब्रोकरेज हाउस जेफरीज ने रिलायंस पर अपने टार्गेट प्राइस को पहले के 3,380 से बढ़ाकर 3,580 प्रति शेयर कर दिया है यानी आने वाले दिनों में करीब 17 फीसदी चढ़ सकता है। ब्रोकरेज ने रिलायंस इंडस्ट्रीज के शेयर पर अपनी बीयूवाय सिफारिश को भी बनाए रखा है। इसमें कहा गया है कि जियो वित्त वर्ष 2024 और वित्त वर्ष 2027 के बीच 18 फीसदी की रेवेन्यू में चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर और टैक्स के बाद लाभ में 26 फीसदी बढ़ने की संभावना है।मॉर्गन स्टेनली ने रिलायंस पर ओवरवेट रेटिंग बनाए रखी है। इसका टार्गेट प्राइस 3,046 प्रति शेयर है। मॉर्गन स्टेनली को वित्त वर्ष 27 तक टैरिफ में कोई और बढ़ोतरी की उम्मीद नहीं है, लेकिन उसने कहा कि अगले साल टैरिफ में लगभग 20 फीसदी की बढ़ोतरी से आय में 10 से 15 फीसदी की वृद्धि हो सकती है।

शेयर बाजार गिरावट पर बंद

सेंसेक्स 210 , निफ्टी 33 अंक नीचे आया

मुम्बई ।

घरेलू शेयर बाजार शुक्रवार को गिरावट पर बंद हुआ। सप्ताह के अंतिम कारोबारी दिन बाजार में ये गिरावट दुनिया भर से मिले अच्छे संकेतों के बाद भी बैंकिंग और आईटी शेयरों में बिकवाली से आई हैं। इससे पिछले दिनों से जारी बाजार की तेजी रुक गयी। दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों पर आधारित मानक सूचकांक सेंसेक्स अंत में 210.45 अंक करीब 0.27 फीसदी नीचे आकर 79,032.73 अंक पर बंद हुआ। वहीं दूसरी ओर पचास शेयरों वाला नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी 33.90 अंक तकरीबन 0.14 फीसदी नीचे आकर अंत में 24,010.60 अंक पर बंद हुआ।

आज कारोबार के दौरान सेंसेक्स के करीब 10 शेयर लाभ के साथ ही ऊपर आये। इसमें रिलायंस, टाटा मोटर्स, एशियन पेंट्स, नेस्ले इंडिया और टाइटन के शेयरों को सबसे अधिक लाभ हुआ। वहीं एसबीआई , एचयूएल, एनटीपसी, सन फार्मा और एचसीएल टेक के शेयर ऊपर आये।

दूसरी ओर सेंसेक्स के 20 शेयर गिरावट पर बंद हुए। इसमें इंडसइंड बैंक, एक्सिस बैंक, भारती एयरटेल, आईसीआईसीआई बैंक और कोटक बैंक जैसे शेयर शामिल रहे। इसके अलावा, जेएसडब्ल्यू स्टील, मारुति, एचडीएफसी बैंक, बजाज फिनसर्व, टीसीएस, बजाज फाइनेंस, एमएंडएम, अल्ट्राटेक सीमेंट, अदाणी पोर्ट्स, एलएंडटी, इंफोसिस, पावर ग्रिड, टेक महिंद्रा, टाटा स्टील और आईटीसी के शेयर गिरावट पर बंद हुए। इससे पहले गत दिवस बाजार रिकार्ड उछाल पर बंद हुआ था।

इससे पहले आज सुबह वैश्विक बाजारों से मिले अच्छे संकेतों की वजह से शुरुआती कारोबार में इक्विटी बेंचमार्क इंडेक्स ने नए रिकॉर्ड उच्च स्तर को छू लिया, जिसमें रिलायंस और भारती एयरटेल में 2 फीसदी की बढ़त रही। रिलायंस जियो द्वारा टैरिफ में 25 फीसदी तक की वृद्धि के बाद वोडाफोन आइडिया के शेयर भी 3 फीसदी बढ़ गए। एसएंडपी बीएसई सेंसेक्स 79,546 के उच्चतम स्तर पर पहुंचा और 207 अंकों की बढ़त के साथ 79,435 पर देखा गया। एनएसई निफ्टी 24,100 के स्तर को पार कर गया और 54 अंकों की बढ़त के साथ कारोबार करता दिखा

वहीं एशिया-प्रशांत क्षेत्र के बाजार सकारात्मक रुख में ट्रेड करते दिखे। जापान का निक्केई 0.9 फीसदी बढ़ा। ऑस्ट्रेलिया के इक्विटी बेंचमार्क एसएंडपी एएसएक्स 200 और ऑल ऑर्डिनरीज़ में 0.4 फीसदी तक की बढ़त दर्ज की गई। कोस्पी और ताइवान के बाजारों में भी 0.1 फीसदी की बढ़त रही।

वित्तीय प्रणाली में संचालन व्यवस्था को पहले प्राथमिकता दें- दास

मुंबई । भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर शक्तिकांत दास ने वित्तीय प्रणाली के सभी हितधारकों से कहा कि वे संचालन व्यवस्था को सबसे पहले प्राथमिकता दें। केंद्रीय बैंक की छमाही वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट (एफएसआर) की प्रस्तावना में दास ने कहा कि वैश्विक चुनौतियों के बीच मजबूत वृहद ओ र्थिक बुनियादी ढांचे के साथ भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूती दिखा रही है। दास ने कहा कि आरबीआई के दबाव परीक्षणों से पता चलता है कि गंभीर दबाव की स्थिति में भी बैंकों और गैर-बैंकों के बफर न्यूनतम विनियामक पूंजी स्तर से ऊपर रहेंगे। उन्होंने कहा कि आरबीआई साइबर खतरों, जलवायु परिवर्तन और वैश्विक चुनौतियों से उत्पन्न होने वाले खतरों के प्रति सतर्क है। दास ने सभी पक्षों से संचालन व्यवस्था पर ध्यान केन्द्रित करने को कहा।

गुवाहाटी हवाई अड्डे का नया टर्मिनल अप्रैल 2025 में तैयार होगा

नई दिल्ली । गुवाहाटी में अदाणी समूह द्वारा संचालित गोपीनाथ बोरदोलोई अंतरराष्ट्रीय (एलजीबीआई) हवाई अड्डे का नया टर्मिनल अप्रैल 2025 तक बन जाएगा। एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि 2,000 करोड़ रुपये से अधिक की कुल लागत से बनाए जा रहे टर्मिनल को पहले दिसंबर 2024 में पूरा करने का लक्ष्य रखा गया था, लेकिन डिजाइन में बदलाव के कारण इसमें करीब चार महीने की देरी हो गई। उन्होंने कहा कि हमारा नया टर्मिनल अप्रैल 2025 तक बनकर तैयार हो जाएगा। इमारत में और अधिक सुविधाएं शामिल करने के लिए डिजाइन में किए बदलाव से थोड़ी देरी हुई है। हम इसे देश का सबसे प्रभावी टर्मिनल बनाना चाहते हैं। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने अगस्त 2020 में अदाणी एंटरप्राइजेज को संचालन, प्रबंधन तथा विकास के लिए गुवाहाटी हवाई अड्डे को 50 वर्षों के लिए पट्टे पर देने की मंजूरी दी थी। अक्टूबर 2021 में प्रबंधन को गुजरात स्थित इकाई को हस्तांतरित करने से पहले भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (एएआई) नए टर्मिनल का विकास कर रहा था। नया टर्मिनल प्रति वर्ष 1.31 करोड़ यात्रियों का प्रबंधन कर पाएगा, जबकि मौजूदा टर्मिनल केवल 34 लाख यात्रियों का प्रबंधन कर पाता है। इसमें 2,000 करोड़ रुपये से अधिक खर्च किए जा रहे हैं। इसमें से करीब 1,600 करोड़ रुपये टर्मिनल भवन में निवेश किए जा रहे हैं, जबकि शेष राशि का इस्तेमाल एक नया टैक्सीवे बनाने और रनवे का विस्तार करने में किया जाएगा।

भारत ने चीन के कई उत्पादों पर लगाया डंपिंग रोधी शुल्क

नई दिल्ली ।

केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीआईटीसी) ने चीन तथा कुछ अन्य देशों के कई उत्पादों पर डंपिग रोधी शुल्क लगाया है। बोर्ड द्वारा जारी` किए गए नोटिफिकेशन में इन शुल्कों की घोषणा की गई है। चीन में बने या चीन से निर्यात किये गये सोडियम सायनाइड पर 554 डॉलर प्रति टन तक का और यूरोपीय संघ में बने या वहां से निर्यात सोडियम सायनाइड पर 230 डॉलर प्रति टन, जापान में बने या वहां से निर्यात किये गये सोडियम सायनाइड पर 447 डॉलर और दक्षिण कोरिया में बने या वहां से निर्यात किये गये सोडियम सायनाइड पर 413 डॉलर प्रति टन का डंपिंग रोधी शुल्क लगाया गया है। इसी तरह चीन में बने या वहां से निर्यात होने वाले चिजेल टूल और रॉक ब्रेकर्स पर 162.5 प्रतिशत तक और दक्षिण कोरिया में बने या वहां से निर्यात होने वाले चिजेल टूल और रॉक ब्रेकर्स पर 52.77 प्रतिशत तक डंपिंग रोधी शुल्क लगाया गया है। चीन में बने या वहां से निर्यात होने वाले टिन प्लेट पर 741 डॉलर प्रति एक लाख पीस का डंपिंग रोधी शुल्क लगाया गया है। इस तीनों मामलों में ये शुल्क पांच-पांच साल के लिए लगाये गये हैं। चीन में बने या वहां से निर्यात होने वाले टेलीस्कोपिक चैनल ड्रॉअर स्लाइडर पर 614 डॉलर प्रति टन का डंपिंग रोधी शुल्क लगाया गया है। यह छह महीने तक प्रभावी रहेगा। उल्लेखनीय है कि जब किसी देश को लगता है कि कोई दूसरा देश हमारे उद्योग को नुकसान पहुंचाने के लिए लागत से भी कम कीमत पर किसी वस्तु का हमें निर्यात कर रहा है, तो उस पर डंपिंग रोधी शुल्क लगाया जाता है।

वर्ल्ड टीवी प्रीमियर में 'घूमर' हौसले और जज्बे की शानदार कहानी

मुंबई : ज़िंदगी जब मुंह पे दरवाजा बंद करती है, तब उसे खोलना नहीं, तोड़ना पड़ता है - जी सिनेमा पर घूमर के प्रीमियर के साथ इंसानी हौसले और अटूट जज्बे की सच्ची मिसाल। अभिषेक बच्चन और सैयामी खेर अभिनीत, यह फिल्म एक युवा क्रिकेट स्टार अनीना के सफर की कहानी है, जिसकी ज़िंदगी उसकी एक बड़ी अंतरराष्ट्रीय शुरूआत से ठीक पहले पूरी तरह बदल जाती है और फिर कैसे वो विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए उनसे पार पाती है। आर. बाल्की द्वारा निर्देशित घूमर फिल्म एक स्पोर्ट्स सर्वाइवल ड्रामा है। जिसमें दो इंसान - गुरू और शिष्या का सफर है। रविवार, 30 जून को रात 8 बजे सिर्फ.जी सिनेमा पर।

50 साल पहला आपातकाल याद रहा लेकिन मणिपुर और किसानों पर ज्यादती भूल गई राष्ट्रपति !

श्रीगोपाल नारसन

लोकसभा के पहले सत्र के दौरान जब राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने अपने अभिभाषण के दौरान आपातकाल का मुद्द उठाया तो विपक्ष के सदस्य आक्रोशित हो गए। ऐसा उस समय भी हुआ था,जब लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कुर्सी संभालते ही अपने पहले भाषण में आपातकाल का मुद्दा उठाकर स्वयं विवाद को जन्म दे दिया।वही राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने जैसे ही आपातकाल का जिक्र किया, संसद में हंगामा मच गया।

राष्ट्रपति को 50 साल पहला आपातकाल तो याद रहा लेकिन मणिपुर और किसानों पर हुई ज्यादती ,चरम पर व्याप्त मंहगाई तथा रोजगार को तरस रहे युवाओं की पीड़ा अपने अभिभाषण में याद नही आई।अपने अभिभाषण के रूप में केंद्र की मोदी सरकार का महिमा मंडन तो हुआ ही ,साथ ही राजशाही का प्रतीक राजदण्ड का संसद में हुआ प्रदर्शन भी दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र को चिढ़ाता रहा।इन सब मुद्दों पर विपक्ष ने आवाज भी उठाई लेकिन सत्ता पक्ष वह सब करता रहा जिसमे उसे राजनीतिक फायदा नजर आ रहा था।

लोकसभा के पहले सत्र के दौरान जब राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने अपने अभिभाषण के दौरान आपातकाल का मुद्दा उठाया तो विपक्ष के सदस्य आक्रोशित हो गए। ऐसा उस समय भी हुआ था,जब लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कुर्सी संभालते ही अपने पहले भाषण में आपातकाल का मुद्दा उठाकर स्वयं विवाद को जन्म दे दिया।वही राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने जैसे ही आपातकाल का जिक्र किया, संसद में हंगामा मच गया। हर तरफ विपक्ष के हंगामे की आवाज गूंजने लगी। राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा कि आज 27 जून है, 25 जून 1975 को लागू हुआ आपातकाल,जो संविधान पर बड़े और सीधे हमले का काला अध्याय था।उस दौरान पूरे देश में हाहाकार मच गया था। लेकिन ऐसी असंवैधानिक ताकतों पर देश ने जीत हासिल करके दिखाई है क्यों कि भारत के मूल्य में गणतंत्र की परंपराएं रही हैं। राष्ट्रपति के ऐसा बोलते ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मेज थपथपाकर उनकी इस बात का समर्थन किया। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि दो साल तक देश में आपातकाल लागू रहा, इस दौरान लोगों के सभी अधिकार छीन लिए गए थे, उन्होंने कहा कि हम सभी संविधान की रक्षा करने का संकल्प लेते हैं। उनके इतना बोलते ही भड़के विपक्ष के सदस्यों ने हंगामा शुरू कर दिया। विपक्ष का हंगामा तब भी हुआ था,जब लोकसभा अध्यक्ष

ओम बिरला ने आपातकाल का जिक्र अपने भाषण में किया था । विपक्ष इतना भड़क गया कि मल्लिकार्जुन खरगे समेत अन्य नेताओं ने यहां तक कह दिया कि पिछले 10 सालों का मोदी सरकार का शासन अघोषित आपातकाल ही है। राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा कि आज लोकतंत्र पर हमले किए जा रहे हैं,इसे लांछित करने वाले आरोप लगाए जा रहे हैं।उन्होंने ईवीएम की निष्पक्षता का भी मुद्दा उठाया और कहा कि ईवीएम जनता की कसौटी पर खरा उतरने में सफल रही है। उन्होंने कहा कि कुछ दशक पहले तो मतदान के दौरान बैलेट पेपर ही लूट लिए जाते थे,इस तरह से राष्ट्रपति के अभिभाषण के जरिए सरकार ने विपक्ष को संविधान के मुद्दे पर घेरने की कोशिश की। विपक्ष ने सरकार पर संविधान को बदलने का गंभीर आरोप लगाया था ।राष्ट्रपति ने बताया कि कैसे केंद्र सरकार समाज के सभी लोगों के हितों को प्राथमिकता में रखकर काम कर रही है। अपने अभिभाषण की शुरूआत करने से पहले राष्ट्रपति ने सभी नवनिर्वाचित सांसदों को बधाई दी।उन्होंने हाल ही में लोकसभा चुनाव संपन्न कराने को लेकर निर्वाचन आयोग की भी तारीफ की,जिसकी निष्पक्षता पर विपक्ष उंगली उठाता रहा है। उन्होंने जम्मू-कश्मीर को लेकर कहा कि इस बार घाटी में दशकों का रिकॉर्ड टूटा है।काफी संख्या में लोगों ने वहां मतदान किया है।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने 18वीं लोकसभा में दोनों सदनों की संयुक्त बैठक में मोदी सरकार के अगले 5 वर्षों का विजन सामने रखा।राष्ट्रपति का अभिभाषण सरकार की उपलब्धियों का रिपोर्ट कार्ड और वर्क प्लान ही कहा जा सकता है। राष्ट्रपति के जरिए संसद में रखे गए मोदी सरकार की कार्य योजना में महिलाओं, युवाओं, रक्षा, विदेश, खेती-किसानी के प्रति सरकार की सोच का संकेत मिलता है।उन्होंने अपने अभिभाषण में कहा कि आज का भारत, दुनिया की चुनौतियां बढ़ाने के लिए नहीं बल्कि दुनिया को समाधान देने के लिए जाना जाता है।विश्व-बंधु के तौर पर भारत ने अनेक वैश्विक समस्याओं के समाधान को लेकर पहल की है।जलवायु परिवर्तन से लेकर खाद्य सुरक्षा तक, पोषण से लेकर सस्टेनबल एग्रीकल्चर तक हम अनेक समाधान दे रहे हैं।हमारे मोटे अनाज श्री अन्न की पहुंच सुपरफूड के तौर पर दुनिया के कोने-कोने में हो, इसके लिए भी अभियान चल रहा है।भारत की पहल पर, पूरी दुनिया ने वर्ष 2023 में इंटरनेशनल मिलेट्स इयर मनाया है।आपने देखा है, हाल ही में पूरी दुनिया ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस भी मनाया है।भारत की इस महान परंपरा की प्रतिष्ठा विश्व में लगातार बढ़ रही है।योग और आयुष को बढ़ावा देकर भारत एक स्वस्थ विश्व के निर्माण में मदद कर रहा है।द्रौपदी मुर्मू ने स्पष्ट किया कि मेरी सरकार ने रिन्यूएबल एनर्जी की क्षमता भी कई गुना बढ़ाई है।हम जलवायु से जुड़े लक्ष्यों को निर्धारित समय से पहले प्राप्त करके दिखा रहे हैं।नेट जीरो के लिए आज भारत के प्रयास कई दूसरे देशों को प्रेरित कर रहे हैं।इंटरनेशनल सोलर अलायंस जैसी पहल पर आज रिकॉर्ड संख्या में दुनिया के देश हमारे साथ जुड़े हैं।उन्होंने भरोसा दिया कि भारत की विकास गति को तेज किया जाएगा। जिसके लिए आने वाले बजट में ऐतिहासिक कदम दिखेंगे। उन्होंने किसानों को ज्यादा से ज्यादा आत्मनिर्भर बनाने की बात भी कही।कुलमिलाकर राष्ट्रपति का अभिभाषण मोदी सरकार की कार्यशैली का प्रतिबिंब कहा जा सकता है।

संपादकीय

राहुल की दोहरी भूमिका

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी 18वीं लोक सभा में विपक्ष के नेता हो गए हैं। वह करीब दो दशक से सक्रिय राजनीति में हैं। पहली बार उन्हें संवैधानिक पद की जिम्मेदारी संभालने का अवसर मिला है। राजनीति उन्हें विरासत में मिली है। वह आजादी की विरासत वाली राजनीतिक पार्टी कांग्रेस के अध्यक्ष जैसा महत्वपूर्ण पद संभाल चुके हैं, लेकिन 2019 के लोक सभा चुनाव में पार्टी की हार के बाद उन्होंने इस पद को त्याग दिया था। इसके बाद से उन्होंने पार्टी के किसी भी पद को संभालने में दिलचस्पी नहीं दिखाई। कहा जा रहा है कि विपक्ष का नेता पद संभालने के लिए वह तैयार नहीं थे। लेकिन अंततः पार्टी के वरिष्ठ नेताओं और कार्यकताओं के दबाव में उन्हें यह पद स्वीकारना पड़ा। नेता प्रतिपक्ष की जिम्मेदारी संभालने के बाद राहुल के बारे में बनाई गई यह धारणा टूट गई कि वह बड़ी जिम्मेदारी को संभालने से डरते हैं। राहुल ने नेता प्रतिपक्ष बनने के बाद अपने पहले संबोधन में ही संकेत दे दिया कि भाजपा की अगुवाई वाली एनडीए सरकार को संसद से सड़क तक विपक्ष की कड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। राहुल ने ओम बिरला को दूसरी बार लोक सभा अध्यक्ष चुने जाने पर कहा कि निस्संदेह सरकार के पास राजनीतिक सत्ता की शक्ति है लेकिन विपक्ष भी भारत के लोगों की आवाज का प्रतिनिधित्व करता है। राजनीति में राहुल 'एंगरी यंगमैन' की भूमिका का निवर्हन करते दिखाई देते हैं। नेता प्रतिपक्ष सीबीआई निदेशक, मुख्य चुनाव आयुक्त और अन्य चुनाव आयुक्त, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष आदि को चुनने वाली समितियों का हिस्सा होता है। राहुल के आक्रामक तेवरों को देखते हुए कहा जा सकता है कि इन नियुक्तियों में प्रधानमंत्री मोदी को राहुल के साथ तालमेल बैठाने में परेशानियों का सामना करना पड़.सकता है। राहुल ने हाल के दिनों में कुछ काम ऐसे किए हैं। देश में हजारों किलोमीटर की पदयात्राएं कीं और इस दौरान जनता के साथ सीधे संवाद कायम किया। नेता प्रतिपक्ष बनने के बाद राहुल गांधी को सदन में विपक्षी नेता के साथ-साथ विपक्षी दलों के गठबंधन को एकजुट रखने की जिम्मेदारी का निवर्हन भी करना है। अपेक्षा की जाती है कि वह इस दोहरी भूमिका का सही से निवर्हन करेंगे। सदन में सरकार के साथ सार्थक संवाद होगा और हर बात पर सदन का बहिष्कार करने के चलन पर रोक लगेगी।

भगवान श्री राम को राजनीति में घसीटना ठीक नहीं है

संजय गोस्वामी

आज अयोध्या को लेकर चुनाव जितने पर जय श्री राम बोलने पर जय अवधेश बोलना गलत है क्योंकि भगवान श्री राम अयोध्या में नहीं बल्कि पूर्ण संसार में एक मात्र ईश्वर स्वरूप है जिसे स्वामी विवेकानंद ने भी ईश्वर का दर्जा दिया है चुनाव आएंगे जायेंगे लेकिन प्रभु राम अनंत शक्ति और पूर्ण संसार का एक मात्र मालिक है क्योंकि उनका जीवन संघर्ष से भरा रहा कभी महलो में पालने वाले प्रभु राम को 14साल जंगल में बिताना पड़ा और राम मंदिर पर सियासत करना सही नहीं नहीं तो आपके मन में त्याग के बदले रावण रूपी विचारों का प्रवेश हो जायेगा यदि कोई भगवान राम से बड़ा मानता है तो उसकी भयंकर भूल है इन सब बातों से ऊपर उठते हुए एक आदर्श व्यक्तित्व हमारे सामने नजर आते और वे है प्रभु श्री राम के रूप में जब बात आदर्श की हो तब सबको भगवान श्री राम ही दिखते हैं। ऐसा कोई पुरुष नहीं हुआ जो अपने आज परिवारों में भाई से भाई का प्रेम कही नजर नहीं आ रहा। श्री राम से यहां हम सीख सकते हैं कि किस प्रकार उन्होंने व उनके भाइयों ने अपने संपूर्ण जीवन में अपने आपसी बंधुत्व का परिचय दिया।भगवान राम भगवान विष्णु के अवतार थे भागवत कथा के अनुसार विष्णु ने इन्द्र का देवलोक में अधिकार पुनः स्थापित करने के लिए यह अवतार लिया। देवलोक असुर राजा बलि ने हड़प लिया था। बलि विरोचन के पुत्र तथा विष्णु भक्त प्रह्लाद के पौत्र थे और एक दयालु असुर राजा के रूप में जाने जाते थे। यह भी कहा जाता है कि अपनी तपस्या तथा शक्ति के माध्यम से बलि ने त्रिलोक पर आधिपत्य पा लिया था।वामन, एक बौने ब्राह्मण के वेष में बलि के पास गये और उनसे अपने रहने के लिए तीन पग भूमि देने का आग्रह किया। उनके हाथ में एक लकड़ी का छत्र (छाता) था। गुरु शुक्राचार्य के चेताने पर भी बलि ने वामन को वचन दे डाला।राजा बलि से जल स्वीकारते हुए भगवान वामन ने अपना आकार इतना बढ़ा लिया कि पहले ही पग में पूरा भूलोक (पृथ्वी) नाप लिया। दूसरे पग में देवलोक नाप लिया। इसके पश्चात ब्रह्मा ने अपने कमण्डल के जल से वामन के पाँव धोये। इसी जल से गंगा उत्पन्न हुयीं। तीसरे पग के लिए कोई भूमि बची ही नहीं। वचन के पक्के बली ने तब वामन को तीसरा पग रखने के लिए अपना सिर प्रस्तुत कर दिया। वामन बलि की वचनबद्धता से अति प्रसन्न हुये अतः जो पूर्ण ब्रह्माण्ड पर नियंत्रण है अतः जो पूर्ण पृथ्वी को नाप सकता है वो पूर्ण ब्रम्ह का स्वामी है ऐ तो बहुत प्राचीन बातें हैं लेकिन यदि 500-600साल पीछे जाते हैं जब हिन्दू धर्म पर अत्याचार हो रहें थे तो उसे बचाने के लिए गुरुनानक जी आएं और धर्म की रक्षा की ओर अग्रसर किया जब मुगलों का अत्याचार बढ़ता जा रहा था उसी कड़ी में सिखों के दसमें गुरू श्री गुरुगोविन्द सिंह भगवान श्री राम के अवतार में अवतरित हुए जो पटना साहिब के कंगन घाट गुरूद्वारा में ऊपर ही चित्रित किया हैजी हाँ धर्म की रक्षा हेतु सिखों के दसमें गुरु गोविन्द सिंह भगवान श्री राम के रूप में अवतरित हुए थे नहीं यकीन होता तो आप पटना सिटी के कंगन घाट पर जाए वहाँ ये इतिहासीक घटना घटी थी जब बालक गोविन्द पटना सिटी के कंगन घाट हमेशा नहाने के लिए जाते थे वही पंडित शिवदत्त भगवान राम की पूजन में प्रसाद चढ़ाया करता था लेकिन हर दिन ध्यान लगाने के क्रम में प्रसाद गायब हो जाता था एक दिन जब बालक गोबिंद जब गुरूजी की आयु महज 5वर्ष थी गुरु जी पंडित शिवदत्त के पास प्रसाद लेने गए थे तो जैसे ही प्रसाद उठाने लगे तो पंडित शिवदत्त ने कहा आप प्रसाद क्यों उठा लेते हो तब गुरु गोविन्द सिंह ने कहा आप प्रसाद किसे चढ़ाते हो उन्होंने कहा भगवान राम को तब बालक गोविन्द ने उत्तर दिया मैं आपका प्रसाद गरीबों को बाँट देता हूँ फिर उन्होंने पंडित शिव दत्त को बालक गोविन्द ने आँखे बन्द कर भगवान राम का ध्यान करने को कहा जैसे उन्होंने आंखे खोली उन्हें बालक गोविन्द भगवान राम के रूप में दिखी और फिर वो उनके भक्त हो गए गुरु गोविन्द सिंह सिक्खों के दसवें और अन्तिम गुरु थे। उनका जन्म पौष, सुदी सप्तमी, संवत 1723 विक्रमी, तदनुसार सन 1666 ई० में पटना (बिहार) में हुआ था। उनके पिता सिक्खों के नवें गुरु तेगबहादुर तथा माता गूजरी थीं। उनका आरंभिक नाम गोविन्दराय था। उनकी शिक्षा-दीक्षा पटना में ही हुई। माँ ने गुरुमुखी और पिता गुरु तेग बहादुर ने उन्हें शस्त्र-शास्त्र दोनों की शिक्षा प्रदान की। भगवान श्री राम हैं दया के सागर थे और गुरु गोविन्द सिंह जी भी भगवान राम सभी मयार्दा का पालन किया गुरु ने भी सभी मयार्दा का पालन किया भगवान राम महान तीरंदाज थे वही प्रतिभा गुरु गोविंद सिंह जी में भी थी गुरु गोविन्द सिंह में बचपन से ही अलौकिकता दिखायी देती थी। कश्मीरी पण्डितों को औरंगजेब ने जब मुसलमान बनाना चाहा, तो सब मिलकर गुरु तेगबहादुर के पास आनन्दपुर गये और उन्हें अपनी करुण कहानी सुनायी। उनकी बातों से गुरु तेगबहादुर मौन, उदास और दुखी हो गये। उसी समय नववर्षीय गोविन्दराय उनके पास आये। उन्होंने पिता से उनकी उदासी का कारण पूछा। पिता ने बताया, ह्मपण्डितों पर घोर संकट है। औरंगजेब उन्हें मुसलमान बनाना चाहता है। गोविन्दराय ने पूछा, इससे बचने का उपाय क्या है।? गुरु तेगबहुदर ने उत्तर दिया, औरगजेब की प्रचण्ड धर्म की द्वेषाग्नि में किसी महान् धर्मात्मा की आहुति ही इससे बचने का उपाय है। गोविन्दराय तुरन्त बोल उठे, आपसे बढ़कर कौन धर्मात्मा भारतवर्ष में होगा? आप ही उस अग्नि की आहुति बनिए। गुरु तेगबहादुर ने समझ लिया कि मेरा पुत्र मेरे न रहने पर गुरु-गद्दी का भार वहन कर लेगा। 1775 ई० में गुरु तेगबहादुर हँसते-हँसने दिल्ली में शहीद हुए। भगवान श्री राम जैसे आसक्त मन वाला होना गुरू गोविन्द में दिखती है। क्योंकि त्याग और बलिदान की भावना जो भगवान राम में थी वही गुरु गोविन्द सिंह जी में भी थी और बन्दा वैरागी उनके हनुमान थे जब भी गुरू पर संकट आता बन्दा वैरागी उसका हल तुरंत कर देते थे वो भी आध्यात्मिक थे बीजेपी को इस चुनाव में मुद्दा नहीं बनाना चाहिए था क्योंकि भगवान श्री राम बिन बोले सब कुछ जानते है जिसे अन्तर्यामी भी कहते हैं चुनाव में हुआ कुछ इस तरह कि मैंने राम मंदिर बनाया अतः मुझे वोट दीजियेगा लेकिन एक बात गौर करने वाला है दिए को जलाने बस एक चिंगारी बहुत है और वातावरण में ऑक्सीजन के कारण जल उठता है लेकिन आप पंखा चला देंगे तो बुझ जाता है यानि प्राकृतिक में जरूरत से ज्यादा हवा देने पर बुझ जाता है यहीं चुनाव में हुआ जहाँ शांत रहकर दीपक को जलते देना चाहिए वहाँ आपने अपना हवा चला दिया जो जल रह था वो बुझ गया लेकिन यदि आप अपने इतिहास पर नजर डालेंगे तो भारत में जितने भी महात्मा हुए वो सभी भगवान श्री राम को भज भज कर अंतःकरण को शुद्ध किया और शांति में ही राम की कृपा से महान पुरुष बने यदि किसी नेताओं को ऐ लगता है मैं ही सबकुछ हूँ तो यह उसके अज्ञानता के कारण है उसे इतना भी मालूम नहीं कि भगवान श्री राम ने पत्थर की अहिल्या को जीवित कर दिया था यदि आप ऐसा कर पाते हैं तो नामुमकिन है जो राम का असली भक्त है वो सभी मयार्दा को पालन करता है केवल राम का नाम लेकर नेता होटलो क्लबों या किसी आलीशान बंगले में नजर आते हैं और वे ही बर्षाति मेढकों की तरह टर्र टर्र करते नजर आएंगे जो सच्चा भक्त होगा वो माता पिता की सेवा करते नजर आएंगे इतना होने के बाद भी लोग यह भी नहीं जानते कि अंत में राम नाम सत्य होने वाला है ऐ चिंता की बात है।..

चिंतन-मनन

जीवन में दर्द अस्थायी होता है

एक राजा ने अपने सभी सलाहकारों को बुलाया और कहा, मैं चाहता हूं कि मैं अंदर से स्थिर बना रहूं। जीवन के उतार-चढ़ाव मेरा संतुलन बिगाड़ देते हैं। तुम कोई ऐसी चीज बताओ जिससे दुख की अवस्था से गुजरते हुए मैं खुशी पा सपूं और जब मैं आनंद की अवस्था में होऊं, तो वह चीज मुझे दुखों की याद दिलाती रहे। ऐसी चीज खोजो जो मैं अपने पास रख सपूं ताकि मेरे चारों ओर कुछ भी घटता रहे, पर मैं शांत-स्थिर रह सपूं। सभी सलाहकार मिलकर बैठे और उन्होंने विचार-विमर्श किया। अंत में वे एक बक्सा लेकर राजा के पास गए- महाराज, आप इस बक्से को खोलें। राजा ने उसे खोला तो उसमें एक छोटी अंगूठी मिली। उन्होंने राजा से कहा, इस पर जो लिखा है,उसे पढ़ें। अंगूठी पर लिखा था- यह समय भी बीत जाएगा। इन पांच सादे लफ्जों से राजा को बड़ी मदद मिली। हमें भी संतुलन बनाए रखने में इनसे मदद मिल सकती है। जब हम बहुत आनंद में हों, तब याद रखने की जरूरत है कि चीजें हर समय ऐसी नहीं रहेंगी और जब खुशहाल वक्ति गुजर जाए तो हमें निराश या हतोत्साहित नहीं होना चाहिए। हमें ये पांच सादे लफ्ज याद दिला सकते हैं कि दर्द अस्थायी है और खुशहाली फिर लौट आएगी। सभी जीवन में उतार-चढ़ाव का सामना करते हैं। ये जीवन के अभिन्न अंग हैं। इनसे बचा नहीं जा सकता। प्रश्न यह है कि जीवन-पथ पर जब हम ऊंच-नीच का सामना करेंगे तो क्या हम मन की शांति खोकर अस्थिर हो जाना चाहेंगे ? अगर हम खुद को जिंदगी में घटने वाली हर घटना से प्रभावित होने देंगे तो हम आनंद की ऊंचाइयों से घोर निराशा की गहराइयों में पहुंच जाएंगे लेकिन अगले ही क्षण वापस आनंद की अवस्था में होंगे। इस लगातार बदलाव से अक्सर भय, तनाव और आतंक पैदा होता है क्योंकि हमें कभी यह पता नहीं होता कि आगे क्या होगा। समय के साथ, भय और तनाव की यह अवस्था हमारे स्वभाव का हिस्सा बन जाती है और हम शांत या तनाव रहित नहीं हो पाते। ध्यान और प्रार्थना के द्वारा हम शांत स्थान पर पहुंच सकते हैं। हमारे अंतर में समस्त दैवी खजाने हैं। हम मात्र शरीर और मन नहीं हैं, बल्कि हम आत्मा हैं। आत्मा ज्योति, प्रेम और आनंद से भरपूर है। यह हर समय प्रभु से जुड़ी रहती है। सृजनात्मक शक्ति यानी प्रभु और आत्मा एक ही तत्त्व के बने हैं। अगर हम प्रतिदिन अपना कुछ समय अंतरात्मा की शांति में व्यतीत करें तो हम आनंद के एक स्थान से जुड़ जाएंगे। तब बाहरी परिस्थितियां प्रभावित नहीं करेंगी। अगली बार हमें दुख-दर्द हो तो हम याद रखें, यह समय भी बीत जाएगा।

मुद्दा: संसद में बेमतलब के नारे

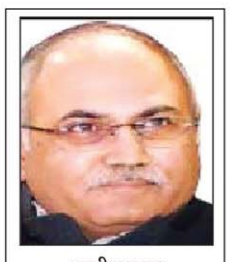

रजनीश कपूर

लोकसभा की सदस्यता की शपथ लेते समय हैदराबाद के सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने एक ऐसा नारा लगाया जिस पर पूरा देश चौंक गया। उन्होंने 'जय भीम', 'जय मीम', 'जय तेलंगाना' और 'जय फिलिस्तीन' का नारा लगाया। जहां तक 'जय भीम' और 'जय तेलंगाना' जैसे नारों की बात है तो ये देश की सीमाओं के दायरे में आते हैं। पर एक दूसरे देश की जयकार बोलना, वो भी संसद के भीतर, किसी के गले नहीं उतरा। ओवैसी ने बहुत ही गलत परंपरा की शुरू आत की है। आने वाले वर्षों में कोई सांसद 'जय अमेरिका', 'जय पाकिस्तान' या 'जय चीन' का भी नारा लगा सकता है। इसलिए इस खतरनाक प्रवृत्ति पर लोक सभा और राज्य सभा के अध्यक्षों को फौरन रोक लगानी चाहिए।

सब जानते और मानते हैं कि भारत धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है। धर्मनिरपेक्ष का मतलब नास्तिक होना नहीं है, बल्कि इसका भाव है, सर्व धर्म समभाव, यानी हर धर्म के प्रति सम्मान का भाव। पर देखने में आया है कि भारत में रहने वाले मुसलमानों और हिन्दुओं के कुछ नेता सांप्रदायिकता को भड़काने के उद्देश्य से धार्मिक उन्माद बढ़ाने वाले नारे लगवाते हैं ताकि उनके वोटों का ध्रुवीकरण हो सके। जहां एक तरफ बरसों से मुसलमानों को अल्पसंख्यक बता कर उनके पक्ष में ऐसे काम किए गए जो संविधान की मूल भावना के विरोद्ध थे। जैसे रमजान में सरकारी स्तर पर इफ्तार की दावतें आयोजित करना। ऐसी दावतें अन्य धर्मों के उत्सवों पर भी की जातीं तो किसी को बुरा नहीं लगता। पर ऐसा नहीं हुआ। नतीजा यह हुआ कि हिन्दुत्व की राजनीति करने वालों को अपने समर्थकों को उकसाने का आधार मिल गया। शायद इसी का परिणाम है कि पिछले दस वर्षों में भाजपा के सांसदों और विधायकों ने संसद और विधानसभाओं में जोर-जोर से और सामूहिक रूप से धार्मिक नारे लगाना शुरू कर दिया। इसका परिणाम यह हो रहा है कि अब मुसलमानों के बीच भी उत्तेजना और आक्रामकता पहले से कहीं ज्यादा बढ़ गई है जबकि यह खतरनाक प्रवृत्ति है, जिसे सख्ती से रोका जाना चाहिए वरना समाज में गतिरोध और हिंसा बढ़ेगी।

वैसे इस तरह का वातावरण असली मुद्दों से ध्यान हटाने के लिए भी तैयार किया जाता है। इसलिए समझदार हिन्दू और मुसलमान अपने धर्म के प्रति आस्थावान होते हुए भी इस हवा में नहीं बहते। हिन्दुत्व का समर्थक कोई पाठक मुझसे तर्क कर सकता है कि हिन्दुस्तान में भाजपा के सांसदों और विधायकों को हिन्दुवादी नारे लगाने से रोका जाएगा तो क्या हम फिलिस्तीन में जा कर ये नारे लगाएंगे? मेरा उत्तर है कि मैं सनातनधर्मी हूं और मेरा परिवार और पूर्वज शुरू से ही आरएसएस से जुड़े रहे हैं। लेकिन पिछले 30 वर्षों में हिन्दुत्व की राजनीति का जो चेहरा मैंने देखा है उससे मन में कई सवाल खड़े हो गए हैं। जब देश की आबादी 141 करोड़ है, इनमें से 97 करोड़ वोटर हैं। उसमें से 36.6 प्रतिशत वोटरों ने ही इस चुनाव में भाजपा को वोट दिया है। मतलब यह कि कुल 111 करोड़ हिन्दुओं में से केवल 35 करोड़ हिंदुओं ने बीजेपी को वोट दिया। तो भाजपा सारे हिन्दू समाज के प्रतिनिधित्व का दावा कैसे कर सकती है? चूंकि देश की आबादी में 78.9 प्रतिशत हिन्दू हैं, और उनमें से एक छोटे से हिस्से ने बीजेपी को वोट दिया है। मतलब बहुसंख्यक हिन्दू भाजपा की नीतियों से सहमत नहीं हैं। हम सब मानते हैं कि हमारा धर्म सनातन धर्म है, जिसका आधार हैं वेद, पुराण, गीता, भागवत, रामायण आदि ग्रंथ। क्या भाजपा इनमें से किसी भी ग्रंथ के अनुसार आचरण करती है? अगर नहीं तो कैसे हिन्दू धर्म के पुरोधा होने का दावा करती है?

हमारे धर्म के चार स्तंभ हैं-चारों पीठों के शंकराचार्य जिन्हें आदि शंकराचार्य जी ने सदियों पहले भारत के चार कोनों में स्थापित किया था। क्या भाजपा चारों शंकराचार्यों को यथोचित सम्मान देती है और इनके ही मार्गनिर्देशन में अपनी धार्मिक नीति बनाती है? अगर नहीं तो फिर बीजेपी हिन्दू धर्म की पुरोधा कैसे हुई? सनातन धर्म में साकार और निराकारङ्क दोनों ब्रह्म की उपासना स्वीकृत हैं। इस तरह उपासना के अनेक मार्ग और अधिकृत संप्रदाय हैं। इसलिए पूरे देश में व्याप्त सनातन धर्म का कोई एक झंडा या जयघोष नहीं होता। जैसे 'जय श्री राम' किसी अधिकृत संप्रदाय का जयघोष नहीं है। प्रभु श्री राम को लोग 'जय सिया राम', 'राम-राम' 'जय रामजी की' आदि अनेक संबोधनों से पुकारते हैं। 'जाकी रही भावना जैसी हरि मूरत देखी तिन तैसी'। फिर केवल 'जय श्री राम' धार्मिक उदघोष कैसे हुआ? ऐसी तमाम अन्य बातों को भी देख-सुन कर स्पष्ट होता है कि भाजपा का हिन्दुत्व सनातन धर्म नहीं है। यह इनकी राजनीति के लिए अस्त्र मात्र है। इसका अर्थ हुआ कि संसद में चाहे 'श्री राम' का नारा लगे और चाहे 'अल्लाह हो अकबर' का, दोनों ही राजनैतिक उद्देश्य से लगाए जाने वाले नारे हैं, जिनका उद्घोष संसद में नहीं होना चाहिए। जय फिलिस्तीन का नारा तो और भी खतरनाक प्रवृत्ति है। संसद के दोनों सदनों के अध्यक्ष गंभीरता से विचार करके संविधान और संसद की गरिमा बचाने का काम करें।

स्वामी, प्रकाशक और मुद्रक डा0 सरवर जमाल ने आर0 डी0 प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स प्रा0 लि0 प्लाट नं0 16-17 पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, रोड नं0 झ्र 09 पटना झ्र 800013 से छपवाकर कार्यालय 203 बी, ब्लाक रंजीत रेसीडेंसीज, साकेतपुरी, मछली गली, राजा बाजार पटना- 800014 से प्रकाशित किया ।सम्पादक: श्रीमती शबाना प्रवीन पी0 आर0 बी0 एक्ट के तहत खबरों की जिम्मेवार। मैनेजिंग एडिटर: डा0 राजीव कुमार, स्थानीय सम्पादक: डा0 नूतन कुमारी, उप सम्पादक: तबस्सुम नवाज PRGI NO:- BIHHIN/2023/86924 E-mail- Newsindogulf730@gmail.com,Mob-9472871824/8544031786 समस्त विवादों का निवारण पटना न्यायालय के अधीन ही होंगे।

अक्षय कुमार की फिल्म सरफिरा का दूसरा गाना खुदाया हुआ रिलीज़

अक्षय कुमार की फिल्म सरफिरा इस समय चर्चा का विषय बना हुआ है ऐसे में , जंगली म्यूजिक और प्रोडूसर - केप ऑफ गुड फिल्म्स, और 2डी एंटरटेनमेंट लोगों के उत्साह को बरक़रार रखते हुए खुदाया गाना रिलीज़ किया है , यह एवोकेटिव क़व्वाली है जो उनके प्यार और स्ट्रगलर्स को बखूबी दर्शाता है , अक्षय कुमार और राधिका मदन का यह सोलफुल ट्रैक है निश्चितरूप से आपके दिलों को छू लेगा। खुदाया अब सारे स्ट्रीमिंग प्लेटफार्म पर उपलब्ध है। सुहित अभ्यंकर, सागर भाटिया और नीति मोहन की शानदार तिकड़ी द्वारा गाया गया और सुहित अभ्यंकर द्वारा रचित, खुदाया फिल्मों में कव्वाली की एक शानदार वापसी है। यह गाना प्रेम की शक्ति को रेखांकित करता है। श्रोताओं को याद दिलाता है कि सच्चा प्यार सभी परीक्षणों और क्लेशों का सामना करता है।

उनका सामंजस्यपूर्ण मिश्रण एक ऐसा संगीतमय अनुभव बनाता है जो सामान्य से परे है, जो इसे एल्बम का सबसे अलग ट्रैक बनाता है। खुदाया भावनात्मक गहराई और कथात्मक समृद्धि की एक झलक है जिसे सरफिरा में समाहित किया गया है। अक्षय कुमार और राधिका मदन ने इस गाने को और भी आकर्षक बना दिया है। नीति मोहन ने गीत के बारे में अपने विचार साझा करते हुए कहा कि , खुदाया गाना मेरे लिए अविश्वसनीय रूप से बहुत ही खास अनुभव रहा है।गाने के शानदार बोल और मंत्रमुग्ध कर देने वाली धुन वास्तव में स्थायी प्रेम के सार को दर्शाता है ।

मैं बेहद उत्साहित हूँ की इस कव्वाली में डाली गई भावनाओं को लोग निश्चित रूप से महसूस करेंगे। सुहित अभ्यंकर का मानना है कि ,खुदाया सॉन्ग की कम्पोजिंग एंड सिंगिंग मेरे लिए एक डीप इमोशनल जर्नी रही है , यह कव्वाली मेरे दिल में स्पेशल जगह रखती है और मुझे उम्मीद है की यह दर्शको के साथ भी रिलेट करेगी जितनी मुझे इसे क्रिएट करते हुए हुयी थी।

नवंबर में नहीं होगी

नानी की हिट 3 की शूटिंग !

नानी की नई फिल्म हिट 3 का निर्देशन सैलेश कोलानू करेंगे। इस फिल्म को लेकर ताजा जानकारी यह है कि अभी तक निर्देशक ने इसकी फाइनल स्क्रिप्ट नानी को नहीं सुनाई है। नैचुरल स्टार नानी का करियर सातवें आसमान पर है। वो लगातार हिट फिल्में दे रहे हैं। ऐसे में उनके प्रशंसक उनकी हर नई फिल्म का इंतजार कर रहे हैं। इन दिनों नानी सारिपोधा सानिवारम की शूटिंग में व्यस्त चल रहे हैं। इसके अलावा एक और फिल्म है, जिसकी वजह से नानी चर्चा में हैं और उस फिल्म का नाम है- हिट 3। हिट 3 का निर्देशन सैलेश कोलानू करेंगे। इस फिल्म को लेकर तरह-तरह की खबरें चल रही हैं। जैसे- एक खबर यह चल रही थी कि फिल्म की शूटिंग 2024 के नवंबर महीने में शुरु हो जाएगी। अब तेलुगु 123 की एक रिपोर्ट में कहा जा रहा है कि यह खबर झूठी है और असल बात तो कुछ और ही है, जिसे सुनकर आप चौंक भी सकते हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि निर्देशक सैलेश ने तो अभी नानी को फाइनल स्क्रिप्ट ही नहीं सुनाई है। हिट 3 की कहानी को सुनने के बाद ही नानी यह तय करेंगे कि फिल्म की शूटिंग कब शुरू करनी है।

अपनी फिटनेस से कोई समझौता नहीं करती हैं शरवरी वाघ

शरवरी वाघ इन दिनों अपनी फिल्म मुंजा को लेकर चर्चा में बनी हुई हैं। बॉक्स ऑफिस पर शरवरी वाघ की फिल्म अच्छा प्रदर्शन कर रही है। वहीं शरवरी वाघ को आज जिम से निकलते हुए स्पॉट किया गया। शरवरी वाघ कैजुअल लुक में काफी प्यारी लग रही थीं। शरवरी वाघ ने अपने लुक को पूरा करने के लिए बालों को हाई पोनी अंदाज में बांधा था।

वरुण धवन ने बेबी जॉन में खुद ही किए खतरनाक स्टंट

बॉलीवुड एक्टर वरुण धवन अपनी आगामी फिल्म बेबी जॉन को लेकर चर्चा में है। यह फिल्म इस साल की बहुचर्चित फिल्मों में से एक है। सूत्रों के मुताबिक वरुण ने फिल्म में खतरनाक स्टंट खुद ही किए हैं।

एक सूत्र ने कहा, यह क्रिसमस बेबी जॉन के साथ बेहतरीन एक्शन एंटरटेनर होने वाला है। फिल्म में ज्यादातर स्टंट वरुण ने खुद ही किए हैं, जो आपको चौंका देंगे। फिल्म में दमदार एक्शन इसे साल की सबसे बड़ी एक्शन एंटरटेनर मूवीज में से एक बनाते हैं। हाल ही में फिल्म को नई रिलीज डेट मिली। यह फिल्म पहले 31 मई को रिलीज होने वाली थी, लेकिन बाद में इसे टाल दिया गया। मेकर्स ने अपडेट जारी करते हुए बताया कि यह फिल्म क्रिसमस के मौके पर 25 दिसंबर को रिलीज होगी।

वरुण ने इंस्टाग्राम पर फिल्म का एक नया पोस्टर शेयर किया। पोस्टर में उन्होंने हाथ में चाकू पकड़ा हुआ है। उनके चेहरे पर गुस्सा साफ नजर आ रहा है और वह हथियार लिए कई लोगों से घिरे हुए हैं।

इस पोस्ट को शेयर करते हुए उन्होंने कैप्शन में लिखा, इस साल क्रिसमस और भी मजेदार होने वाला है। 25 दिसंबर को बेबी जॉन की रिलीज के लिए तैयार हो जाइए।इस फिल्म के जरिए कीर्ति सुरेश हिंदी सिनेमा में डेब्यू कर रही हैं। इसके अलावा, इस फिल्म में वामिका गब्बी भी अहम रोल में दिखेंगी। इसके अलावा फिल्म में जैकी श्रॉफ और राजपाल यादव भी नजर आएंगे। फिल्म का संगीत एस थमन ने दिया है। फिल्म का निर्माण एटली के ए फॉर एप्पल स्टूडियोज, सिने1 स्टूडियोज और जियो स्टूडियोज के बैनर तले हो रहा है। इसे प्रिया एटली, मुराद खेतानी और ज्योति देशपांडे ने मिलकर प्रोड्यूस किया है।

वरुण धवन को अब से पहले नितेश तिवारी द्वारा निर्देशित रोमांटिक ड्रामा बवालमें देखा गया था, इसमें जाह्नवी कपूर मुख्य भूमिका में थीं। यह फिल्म बीते साल 21 जुलाई को अमेजन प्राइम वीडियो पर रिलीज हुई थी। उन्होंने हॉरर कॉमेडी मुंज्या में भी कैमियो किया।

मर्लिन मुनरो के घर को मिली ऐतिहासिक सांस्कृतिक स्मारक के रूप में मंजूरी

लॉस एंजिल्स । लॉस एंजिल्स के ब्रेंटवुड में दिवंगत हॉलीवुड आइकन मर्लिन मुनरो के घर को लॉस एंजिल्स सिटी काउंसिल ने ऐतिहासिक सांस्कृतिक स्मारक के रूप में मंजूरी दे दी है। मंजूरी मिलने के चलते अब इसे तोड़ा नहीं जाएगा। लॉस एंजिल्स कंजर्वेंसी ने एक्स पोस्ट पर लिखा, ब्रेंटवुड में मर्लिन मुनरो का घर अब एक ऐतिहासिक सांस्कृतिक स्मारक है! आज, लॉस एंजिल्स सिटी काउंसिल ने मर्लिन मुनरो के घर के लिए नामांकन को सर्वसम्मति से मंजूरी दे दी। समर्थन देने वाले सभी लोगों का धन्यवाद, और काउंसिल वुमन ट्रेसी पार्क और टीम का बहुत-बहुत धन्यवाद!

लव सॉन्ग धीरे धीरे के लिए

साथ आए पारस और मन्नारा

एक्टर पारस कलनावत और मन्नारा चोपड़ा पहली बार लव सॉन्ग धीरे-धीरे के लिए एक साथ आए हैं। यह सॉन्ग दर्शकों को रोमांस और शांति की दुनिया में ले जाएगा। दो मिनट 46 सेकंड के इस म्यूजिक वीडियो को पायल देव और आदित्य देव ने अपनी आवाज दी है।

जैसे - जैसे गाना आगे बढ़ता है, पायल और आदित्य की मधुर आवाज रोमांस की दुनिया में ले जाती है। संगीतकार आदित्य द्वारा तैयार किए गए इस गाने में कुणाल वर्मा के दिल को छू लेने वाले बोल हैं। लव सॉन्ग धीरे धीरे अपने अंतिम नोट तक भी दर्शकों को बांधे रखता है। दिब्या चटर्जी द्वारा निर्देशित यह म्यूजिक वीडियो गाने के सार को बहुत ही खूबसूरती के साथ पर्दे पर दिखाती है। गाने के बारे में बात करते हुए मन्नारा चोपड़ा ने कहा, पारस के साथ धीरे धीरे का हिस्सा बनना बहुत ही खुशी की बात है। गाने को बहुत ही खूबसूरती के साथ तैयार किया गया है और इसके दिल छू लेने वाले बोल इसे एक यादगार गीत बनाते हैं। जब मैंने ट्रैक की कुछ पंक्तियां सुनीं, तो मुझे इससे प्यार हो गया। मैं यह देखने के लिए उत्साहित हूं कि दर्शक इसे किस तरह से पसंद करते हैं।

तलाक के अफवाहों के बीच

बेन एफ्लेक के ऑफिस में दिखीं जेनिफर, फैंस बोले- ये प्यार है या व्यापार !

हॉलीवुड की मशहूर गायिका और अभिनेत्री जेनिफर लोपेज और अभिनेता बेन एफ्लेक पिछले कुछ दिनों से लगातार सुर्खियों में बने हुए हैं। अफवाहों का बाजार गर्म है कि दोनों के बीच सबकुछ ठीक नहीं चल रहा है। बेन और जेनिफर अब अलग-अलग घरों में रह रहे हैं। वहीं मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो कल जेनिफर लोपेज बेन एफ्लेक के ऑफिस में स्पॉट की गईं। दोनों के फैंस अब जानने की कोशिश कर रहे हैं कि आखिर माजरा क्या है।

जेनिफर हुए बेन ने साथ बिताया समय

जेनिफर लोपेज पिछले दिनों अकेले यूरोप में छुट्टियां मनाती नजर आई थीं। अपनी छुट्टी से लौटने के बाद गायिका को बुधवार को लॉस एंजिल्स में बेन एफ्लेक के प्रोडक्शन कार्यालय में स्पॉट किया गया। सूत्रों की मानें तो इस दौरान वे एफ्लेक के ऑफिस में सुबह करीब 10 बजे सूट पहनकर और कंधे पर डफेल बैग लेकर पहुंची थी। दोनों ने ऑफिस में काफी समय एक साथ बिताया। इस खबर के बाद दोनों की जोड़ी को पसंद करने वाले फैंस समझना चाह रहे हैं कि क्या बेन और जेनी में सब ठीक हो गया है।

प्यार या बिजनेस मीटिंग

जेनिफर लोपेज और बेन एफ्लेक हॉलीवुड की मशहूर जोड़ियों में से एक हैं। दोनों की जोड़ी को लाखों लोग पसंद करते हैं। जेनिफर ऑफिस अकेले आई थीं। गौरतलब है कि मीटिंग खत्म होने के बाद पहले बेन एफ्लेक ऑफिस से निकले और बाद में जेनिफर को निकलते देखा गया। वहीं अब फैंस कयास लगा रहे हैं कि ये बिजनेस मीटिंग थी या दोनों कुछ समय साथ में बिताना चाह रहे थे।

फिर से वेडिंग रिंग के साथ स्पॉट हुए बेन एफ्लेक

हॉलीवुड ए-लिस्टर्स जेनिफर लोपेज और बेन एफ्लेक ने साल 2022 में शादी की थी। सूत्रों को मानें तो इन दिनों वे वैवाहिक समस्याओं से गुजर रहे हैं और अपनी शादी को बचाने की कोशिश में जुटे हैं। अफवाहों के बावजूद जेन और बेन कई मौकों पर एक साथ स्पॉट किए जाते रहे हैं। पिछले दिनों एक आउटिंग के दौरान बिना शादी की अंगूठी के नजर आए थे वहीं जेनिफर से मुलाकात के बाद वे वेडिंग रिंग पहन कर ऑफिस से निकलते दिखे।

राजनीति के लिए फिल्मों से ब्रेक नहीं लेंगी कंगना रनोट

एक्ट्रेस और सांसद कंगना रनोट ने लोकसभा सदस्य के तौर पर शपथ ले ही है। पुराने इंटरव्यू में कंगना ने कहा था कि अगर वो चुनाव जीतती हैं, तो फिल्म इंडस्ट्री छोड़ देंगी, हालांकि वह आगे फिल्मी पारी भी जारी रखेंगी। उनके करीबियों ने इस पर कन्फर्मेशन दे दी है। उन्होंने कंगना की अपकमिंग रिलीज 'इमरजेंसी' से जुड़ी अहम जानकारी दी है। फिल्म तो 'चंदू चैंपियन' के साथ ही रिलीज होनी थी पर चुनावी व्यस्तताओं के चलते उस डेट पर फिल्म नहीं आ सकी। हालांकि फिल्म को जल्द ही रिलीज करने की तैयारियां चल रही हैं।

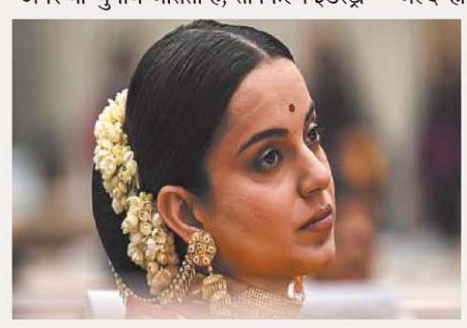

राजनीतिक और फिल्मी करियर में बैठाएंगी तालमेल

कंगना से जुड़े करीबी सूत्रों ने कहा, 'एक बार संसद सत्र खत्म हो जाए तो फिल्म रिलीज पर तस्वीर स्पष्ट हो सकेगी। कोशिश तो फिल्म को 25 जून को ही रिलीज करने की थी, क्योंकि उसी डेट को 1975 में इमरजेंसी लगाई गई थी। हालांकि वह डेट भी टल गई। अब ये 6 सितंबर को रिलीज होगी। कंगना राजनीति के मैदान में अपनी पहली पारी के साथ ही फिल्मी जर्नी को भी जारी रखेंगी।

आमिर ने मुंबई में खरीदा लग्जरी अपार्टमेंट

आमिर खान ने मुंबई के पॉश इलाके पाली हिल में एक लग्जरी प्रॉपर्टी खरीदी है, जिसकी चर्चा हो रही है। एक्टर ने पाली हिल एरिया की एक बिल्डिंग में एक अपार्टमेंट खरीदा है। इसकी कीमत 9 करोड़ से अधिक बताई जा रही है। आमिर के इस नए अपार्टमेंट के कागजात हैं, जिनमें बताया गया है कि अपार्टमेंट की कीमत 9.75 करोड़ रुपये है। यह अपार्टमेंट पहले से ही तैयार है और 1,027 स्क्वायर फीट है। यह डील 25 जून को फाइनल हुई, जिसके लिए Aamir Khan ने 30 हजार रुपये की रजिस्ट्रेशन फीस और 58.5 लाख की स्टांप ड्यूटी चुकाई। आमिर का यह नया अपार्टमेंट पाली हिल एरिया की बेला विस्ता अपार्टमेंट्स नाम की अप-स्केल बिल्डिंग में है।

अंजना सिंह के लिए मनोज टाइगर ने बनाया होटल रूम को किचन

भोजपुरी एक्ट्रेस अंजना सिंह इन दिनों एक फिल्म की शूटिंग में व्यस्त हैं, और उनके साथ मनोज टाइगर भी इसी फिल्म का हिस्सा हैं. खाली वक्त में जब मनोज होटल के कमरे में थे, तो उन्होंने अंजना सिंह की रिक्वेस्ट पर होटल रूम में ही किचन सेट अप किया. इस वीडियो में आप देख सकते हैं कि कैसे मनोज नेनुआ (तोरई) की सब्जी बना रहे हैं. मनोज बता रहे हैं कि वे खैराबाद में फिल्म की शूटिंग कर रहे हैं और अंजना ने उनसे नेनुआ की सब्जी खाने की इच्छा जाहिर की थी, तो वे उसी बहाने सब्जी बना रहे हैं. टेबल पर तोरई, प्याज, इंडक्शन कोयला सभी रखे हैं और मनोज देसी घी में छोटा खाया कर तोरई की सब्जी बनाने की कोशिश में लगे हैं. बर्तन में घी डालने के बाद मनोज ने बर्तन में प्याज डाला और फिर मसाला भूनकर तोरई बनाने के लिए रख दी. इसके बाद मनोज ने मिलेट की खिचड़ी भी बनाई थी जो वे अंजना सिंह के लिए खास रूप से बनाई थी.

टी-20 वर्ल्डकप

रोहित-सूर्या का तूफान... फिर गेंदबाजों का कहर

भारत के आगे इंग्लैंड का सरेंडर

गुयाना, एजेंसी। टीम इंडिया ने आईसीसी मेन्स टी20 वर्ल्ड कप 2024 के फाइनल में जगह बना ली है. 27 जून (गुरुवार) को गुयाना के प्रोविडेंस स्टेडियम में खेले गए सेमीफाइनल मुकाबले में भारत ने इंग्लैंड को 68 रनों से हरा दिया. सेमीफाइनल मुकाबले में इंग्लैंड को जीत के लिए 172 रनों का टारगेट मिला था, लेकिन उसकी पूरी टीम 16.4 ओवर्स में 103 रनों पर ढेर हो गई. अब फाइनल मैच में भारत का सामना साउथ अफ्रीका से होगा. बता दें कि साउथ अफ्रीका ने अफगानिस्तान को 9 विकेट से हराकर फाइनल में जगह बनाई. फाइनल मुकाबला 29 जून को ब्रिजटाउन (बारबाडोस) में खेला जाएगा.

भारतीय टीम तीसरी बार टी20 वर्ल्ड कप के फाइनल में पहुंची है. इससे पहले उसने 2007 और 2014 के संस्करण के भी फाइनल में जगह बनाई थी. 2007 के संस्करण में तो भारतीय टीम खिताब जीतने में भी कामयाब रही थी. अब भारत के पास दूसरी बार टी20 वर्ल्ड कप खिताब जीतने का मौका है. यदि भारतीय टीम खिताब जीतती है तो 11 सालों का सूखा भी खत्म हो जाएगा. भारतीय टीम ने आखिरी बार 2013 में आईसीसी खिताब जीता था. तब महेंद्र सिंह धोनी की अगुवाई में भारत ने इंग्लैंड को हराकर चैम्पियंस ट्रॉफी अपने नाम किया था.

सेमीफाइनल मुकाबले में टारगेट का पीछा करते हुए इंग्लैंड के बल्लेबाज भारतीय स्पिनर्स के सामने बेबस नजर आए. चाइनामैन गेंदबाज कुलदीप यादव और बाएं हाथ के स्पिनर अक्षर पटेल की धांसू गेंदबाजी ने अंग्रेजों के होश उड़ा दिए. इंग्लैंड की ओर से केवल हैरी ब्रूक (25 रन), जोस बटलर (23 रन), जोफ्रा आर्चर (21 रन) और लियाम लिविंगस्टोन (11 रन) ही दोहरे अंकों तक पहुंच सके. भारत के लिए कुलदीप यादव और अक्षर पटेल ने तीन-तीन विकेट लिए. वहीं जसप्रीत बुमराह को दो विकेट हासिल हुए. जबकि इंग्लैंड के दो खिलाड़ी रन आउट हुए.

सूर्या-रोहित ने भारत को संकट से निकाला

इससे पहले टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए भारत ने सात विकेट पर 171 रन बनाए थे. मैच में भारतीय टीम की शुरुआत खराब रही. भारत ने पावरप्ले में ही दो विकेट खो दिए. पहले विराट कोहली (9) को रीस टॉप्ली ने बोल्ड किया. फिर ऋषभ पंत (4) को सैम करन ने पवेलियन भेज दिया. 40 रनों पर दो विकेट गिरने के बाद कप्तान रोहित शर्मा और सूर्यकुमार यादव ने पारी को संभाला. रोहित-सूर्यकुमार के बीच तीसरे विकेट के लिए 73 रनों की साझेदारी हुई. इस साझेदारी के चलते ही भारतीय टीम अच्छे स्कोर तक पहुंचने में सफल रही.

रोहित शर्मा ने 39 गेंदों पर 57 रन बनाए, जिसमें छह चौके और दो छक्के शामिल रहे.

भारत के लिए टी20 वर्ल्ड कप सीजन में सर्वाधिक विकेट

15- अर्शदीप सिंह (2024)
13- जसप्रीत बुमराह (2024)
12- आरपी सिंह (2007)
11- रविचंद्रन अश्विन (2014)

टी20 वर्ल्ड कप में भारत की सबसे बड़ी जीत का अंतर

90 रन VS इंग्लैंड, कोलंबो, 2012
73 रन VS ऑस्ट्रेलिया, मीरपुर, 2014
71 रन VSजिम्बाब्वे, मेलबर्न, 2022
68 रन VS इंग्लैंड, प्रोविडेंस, 2024
66 रन VSअफगानिस्तान, अबु धाबी, 2021

टी20 वर्ल्ड कप नॉकआउट में सबसे बड़ी जीत (रनों के आधार पर)

74 रन- वेस्टइंडीज VS ऑस्ट्रेलिया, कोलंबो आरपीएस, 2012 सेमीफाइनल
68 रन- भारत 1ह्य इंग्लैंड, प्रोविडेंस, 2024 सेमीफाइनल
57 रन- श्रीलंका 1ह्य वेस्टइंडीज, द ओवल, 2009 सेमीफाइनल
36 रन- वेस्टइंडीज 1ह्य श्रीलंका, कोलंबो, 2012 फाइनल

टी20 में भारत की सबसे लंबी जीत का सिलसिला

12- नवंबर 2021 से फरवरी 2022
11*- दिसंबर 2023 से जून 2024
9- जनवरी 2020 से दिसंबर 2020

टी20 वर्ल्ड कप में इंग्लैंड के लिए सर्वाधिक विकेट

31- आदिल राशिद (इकोनॉमी-6.9)
31- क्रिस जॉर्डन (इकोनॉमी-8.06)
30- स्टुअर्ट ब्रॉड (इकोनॉमी- 7.72)
22- ग्रीम स्वान (इकोनॉमी- 6.5

टी20 वर्ल्ड कप के एक सीजन में सर्वाधिक जीत

8*- साउथ अफ्रीका (2024)
7*- भारत (2024)
6- श्रीलंका (2009)
6- ऑस्ट्रेलिया (2010)
6- ऑस्ट्रेलिया (2021)

विराट कोहली ने अपना सर्वश्रेष्ठ फाइनल के लिए बचाकर रखा है

मैच के बाद प्रेजेंटेर द्वारा विराट की फॉर्म को लेकर सवाल पूछे जाने पर कप्तान रोहित ने कहा- कोहली एक क्वालिटी प्लेयर हैं। कोई भी खिलाड़ी इस दौर से गुजर सकता है। हम उनकी क्लास को समझते हैं और हम इन सभी बड़े मैच में उनके महत्व को समझते और जानते हैं। फॉर्म कभी कोई समस्या नहीं रही है। जब आपने 15 साल तक क्रिकेट खेला हो तो फॉर्म कभी कोई समस्या नहीं होती। वह अच्छे दिख रहे हैं। उनके इरादे वही हैं। वह शायद फाइनल के अपना सर्वश्रेष्ठ बचा कर रख रहे हैं। हम फाइनल के लिए बिल्कुल कोहली का समर्थन करेंगे।

हमें फाइनल में भी शांत रहना होगा

रोहित ने कहा- हम एक टीम के रूप में बहुत शांत रहे हैं। हम इस अंतिम अवसर को समझते हैं। यह एक बड़ा अवसर है। हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम शांत रहें। संयमित रहने से आपको अच्छे निर्णय लेने में मदद मिलती है और इसकी आवश्यकता होगी। हमें पूरे 40 ओवरों में अच्छे निर्णय लेते रहना होगा।

इससे हमें खेल को आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी। इस मैच में भी हम बहुत स्थिर और शांत थे। हम ज्यादा नहीं घबराए और यही हमारे लिए महत्वपूर्ण रहा। आपको अच्छी क्रिकेट खेलनी होगी और फाइनल में भी हम यही करना चाहते हैं। हम अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करेंगे, मैं बस इतना ही कह सकता हूं। टीम अच्छी स्थिति में है, अच्छा खेल रही है। मैं बस यही उम्मीद कर सकता हूं कि फाइनल में एक और अच्छा प्रदर्शन करूं।

भारतीय एथलीट किरण पहल ने ओलंपिक के लिए क्वालिफाई किया, 400 मीटर वर्ग में हासिल किया कोटा

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय महिला एथलीट किरण पहल ने गुरुवार को राष्ट्रीय अंतर राज्यीय एथलेटिक्स चैंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन करते हुए अगले महीने से होने वाले पेरिस ओलंपिक के लिए कोटा हासिल कर लिया है। किरण ने सेमीफाइनल में 50.92 सेकेंड का समय निकालकर महिलाओं की 400 मीटर स्पर्धा में पेरिस ओलंपिकके लिए क्वालिफाई किया। महिलाओं की 400 मीटर स्पर्धा में क्वालिफाइंग मार्क 50.95 सेकेंड था जिससे किरण अगले महीने होने वाले ओलंपिक के लिए कोटा हासिल करने में सफल रहीं।

यह इस सत्र में उनका सर्वश्रेष्ठ समय था और इसके साथ ही वह 51 सेकेंड से कम समय में रेस पूरी करने वाली दूसरी भारतीय महिला भी बनीं। वह गुजरात की देवी अनिबा जाला से आगे रहीं जिन्होंने 53.44 सेकेंड के समय से दूसरा स्थान प्राप्त किया। केरल की स्नेहा के 53.51 सेकेंड से तीसरे स्थान पर रहीं।

लंदन में होगा वैश्विक शतरंज लीग का आयोजन, एफआईडीई के अध्यक्ष ने की पुष्टि

नई दिल्ली, एजेंसी। दूसरी वैश्विक शतरंज लीग का आयोजन तीन से 12 अक्टूबर तक लंदन में किया जाएगा। आयोजकों ने गुरुवार को यह जानकारी दी। वैश्विक शतरंज लीग अंतरराष्ट्रीय शतरंज महासंघ (एफआईडीई) और टेक महिंद्रा की संयुक्त पहल है। दस दिन तक चलने वाली इस लीग का आयोजन सेंट्रल लंदन के फ्रेंड्स हाउस में किया जाएगा जिसमें दुनिया के चोटी के खिलाड़ी भाग लेंगे।

एफआईडीई के अध्यक्ष अर्कडी ड्वोर्कोविच ने बयान में कहा, इस प्रतियोगिता के पहले सत्र को मिली अपार सफलता के बाद हम शतरंज का दुनिया भर में विस्तार करने और शतरंज प्रेमियों को नया अनुभव दिलाने के अपने मिशन को आगे बढ़ाने को लेकर उत्साहित हैं। यह लीग टीम आधारित प्रारूप में खेली जाएगी जिसमें मौजूदा विश्व चैंपियन सहित कई युवा खिलाड़ी भी भाग लेंगे। प्रत्येक टीम में 6 खिलाड़ी होंगे, जिनमें दो शीर्ष महिला खिलाड़ी और एक उभरता हुआ खिलाड़ी शामिल हैं। प्रत्येक टीम डबल राउंड रोबिन प्रारूप में कुल 10 मैच खेलेगी। विजेता का फैसला बेस्ट ऑफ सिक्स बोर्ड स्कोरिंग प्रणाली से किया जाएगा।

भारतीय ग्रैंडमास्टर डी गुकेश की क्लासिक शतरंज टूर्नामेंट में विजयी शुरुआत

चेस

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय ग्रैंडमास्टर डी गुकेश ने शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए सुपरबेट क्लासिक शतरंज टूर्नामेंट के पहले दौर में जीत हासिल कर विजयी शुरुआत की। गुकेश ने रोमानिया के डेक बोगडान-डैनियल को हराया। इस साल के आखिर में मौजूदा विश्व चैंपियन चीन के डिंग लिरेन को चुनौती देने को तैयार गुकेश को इस मुकाबले के दौरान किस्मत का भी साथ मिला, जब उनकी गलती पर रोमानिया का खिलाड़ी फायदा उठाने में नाकाम रहा। गुकेश ने इसके बाद शानदार वापसी करते हुए जीत दर्ज की।

बोगडान-डैनियल ने निम्जो इंडियन डिफेंस चाल से शुरुआत की जिसने मुकाबला बीच में जटिल बना दिया। रोमानिया के खिलाड़ी के पास गुकेश पर बढ़त बनाने का मौका था, लेकिन उन्होंने प्यादा के मुकाबले अपने 'रूक (हाथी)' को गंवा दिया। गुकेश इसके बाद मजबूत वापसी करने में सफल रहे। उन्होंने विरोधी खिलाड़ी को कोई मौका नहीं देते हुए जीत दर्ज की। गुकेश कैंडिडेट्स टूर्नामेंट जीतने के बाद पहली बार क्लासिकल शतरंज की किसी प्रतियोगिता में भाग ले रहे हैं।

प्रज्ञानंद को अब्दुसात्तोरोव से मिली चुनौती

इस टूर्नामेंट में चुनौती पेश कर रहे एक अन्य भारतीय आर प्रज्ञानंद ने कड़ी मेहनत की, लेकिन उन्हें उज्बेकिस्तान के नोदिरबेक अब्दुसात्तोरोव के खिलाफ कड़े मुकाबले में ड्रॉ से संतोष करना पड़ा।

टेनिस स्टार एंडी मरे ने किया रिटायरमेंट का ऐलान

नईदिल्ली, एजेंसी। अनुभवी टेनिस खिलाड़ी एंडी मरे ने अपने रिटायरमेंट का ऐलान कर दिया है। ब्रिटेन का ये खिलाड़ी पिछले कुछ समय से लगातार चोटिल हो रहा है। एंडी मरे ने बता दिया है कि वह अपने करियर का आखिरी मैच कब खेलेंगे। इसके अलावा एंडी मरे ने आगामी विंबलडन 2024 में खेलने का फैसला भी लिया है और उन्होंने घोषणा की है कि वह यूएस ओपन 2024 में भाग नहीं लेंगे।

37 साल के एंडी मरे पिछले सप्ताह पीठ की सर्जरी से गुजरे थे। लेकिन उन्होंने फैसला लिया है कि 1 जुलाई से शुरू होने वाले सीजन के तीसरे ग्रैंड स्लैम में वह खेलने उतरेंगे। पूर्व नंबर 1 ने एंडी मरे ने इसी के साथ ये भी ऐलान किया कि वह पेरिस ओलंपिक 2024 के बाद संन्यास ले लेंगे। बता दें, तीन बार के ग्रैंड स्लैम विजेता ने पहले ही घोषणा कर दी थी कि वह 2024 सीजन से आगे पेशेवर रूप से नहीं खेलेंगे।

एंडी मरे ने दिया ये बड़ा बयान

एंडी मरे ने कहा कि मुझे लगता है कि मैं इस निर्णय को लेने के लिए आखिरी क्षण तक इंतजार करने का अवसर पाने का हकदार हूं। मैंने अपनी टीम के साथ जो भी चर्चा और बातचीत की है, उसमें मैंने यही तय किया है कि मैं इस गर्मी के बाद नहीं खेलूंगा। जाहिर है कि मैंने अपने परिवार के साथ इस बारे में बातचीत की है, और मैंने ओलंपिक के बाद एक सप्ताह के लिए पारिवारिक अवकाश बुक कर लिया है।

इंग्लैंड दौरे के लिए विंडीज टीम घोषित

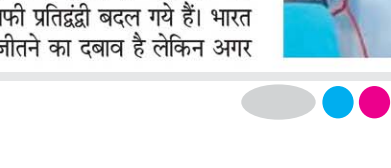

सेंट जॉन्स, एजेंसी। क्रिकेट वेस्टइंडीज (सीडब्ल्यूआई) ने इंग्लैंड में 10 जुलाई, 2024 से लॉर्ड्स में शुरू होने वाली तीन टेस्ट मैचों की रिचर्ड्स बॉथम श्रृंखला के लिए 15 सदस्यीय टीम की घोषणा कर दी है। टीम में एक महत्वपूर्ण बदलाव हुआ है- इंग्लैंड में काउंटी चैंपियनशिप के दौरान घुटने की चोट से रोच के पुनर्वास के कारण केमर रोच की जगह सेंट किट्स एंड नेविस के तेज गेंदबाज जेरेमिया लुइस को लिया गया है।

मुख्य चयनकर्ता डेसमंड हेन्स ने कहा कि अंग्रेजी परिस्थितियों में केमर के कौशल और अनुभव को याद किया जाएगा। उनके पास निश्चित रूप से इंग्लैंड में प्रभाव डालने का कौशल और अनुभव है। रिचर्ड्स बॉथम श्रृंखला, जिसका नाम वेस्टइंडीज के दिग्गज सर विवियन रिचर्ड्स और इंग्लैंड के महान लॉर्ड इयान बॉथम के नाम पर रखा गया है, 1928 से चली आ रही एक ऐतिहासिक प्रतिद्वंद्विता है, जब वेस्टइंडीज ने पहली बार इंग्लैंड का दौरा किया था। टीम टोनब्रिज स्कूल में एक प्रशिक्षण शिविर में है और 4 जुलाई से बेकेनहैम में इंग्लैंड लायंस के खिलाफ 3 दिवसीय अभ्यास मैच खेलेगी। 19 वर्षीय तेज गेंदबाज इसाई थॉर्न टीम में शामिल होंगे।

वेस्टइंडीज टेस्ट टीम: क्रैग ब्रैथवेट (कप्तान), एलिक अथानाज़े, जोशुआ दा सिल्वा, जेसन होल्डर, केवम हॉज, टेविन इमलाच, अल्जारी जोसेफ (उप-कप्तान), शमर जोसेफ, मिकाइल लुइस, ज़ाचरी मैकास्की, किर्क मैकेंज़ी, गुडाकेश मोती, जेरेमिया लुइस, जेडेन सील्स, केविन सिंक्लेयर, और इसाई थॉर्न (डेवलपमेंट प्लेयर)।

मीराबाई का लक्ष्य अपने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के साथ देश को पदक दिलाने का

नई दिल्ली, एजेंसी। मीराबाई चानू का स्नैच में व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ 88 किग्रा तथा क्लीन एवं जर्क में 119 किग्रा का है। वह चोटों से जूझती रही हैं और पीठ की समस्या तो हमेशा ही रहती है। एशियाई खेलों में वह कूल्हे की चोट से परेशान थीं जिससे वह पांच महीने तक खेल से दूर रहीं।

टोक्यो ओलंपिक की रजत पदक विजेता भारोत्तोलक मीराबाई चानू ने अगले महीने शुरू होने वाले पेरिस ओलंपिक में अपने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के साथ देश को एक और पदक दिलाने का लक्ष्य रखा है। मीराबाई पेरिस ओलंपिक का टिकट पक्का करने वाली भारत की इकलौती भारोत्तोलक है। 49 किग्रा वजन वर्ग में प्रतिस्पर्धा करने वाली यह खिलाड़ी पदक के सपने को पूरा करने के लिए चोट से बचने पर ध्यान दे रही है। तीसरी बार ओलंपिक खेलों में भाग लेने की तैयारी कर रही मीराबाई ने साइ (भारतीय खेल प्राधिकरण), आईओसी (भारतीय ओलंपिक संघ) और भारतीय भारोत्तोलक महासंघ (आईडब्ल्यूएलएफ) के सौजन्य से आयोजित ऑनलाइन संवाददाता सम्मेलन में पटियाला से कहा, पेरिस को लेकर रोमांचित हूं लेकिन थोड़ी घबराहट और तनाव भी है।

पिछले तीन साल (टोक्यो ओलंपिक के बाद) में मेरे काफी प्रतिद्वंद्वी बदल गये हैं। भारत के लिए पदक जीतने का दबाव है लेकिन अगर मैं अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने में सफल रही तो देश के लिए पदक जीत सकती हूं। मीराबाई चानू का स्नैच में व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ 88 किग्रा तथा क्लीन एवं जर्क में 119 किग्रा का है। वह चोटों से जूझती रही हैं और पीठ की समस्या तो हमेशा ही रहती है। एशियाई खेलों में वह कूल्हे की चोट से परेशान थीं जिससे वह पांच महीने तक खेल से दूर रहीं। अपने अमेरिकी फिजियो डॉ. आरोन हॉर्शिंग और कोच विजय शर्मा के साथ चोटों से उबरना उनकी बड़ी चुनौती रही है। उन्होंने कहा कि वह धीरे-धीरे वजन उठाने की क्षमता को बढ़ा रही है। मीराबाई ने कहा, मैं धीरे-धीरे वजन उठाने की अपनी क्षमता को बढ़ा रही हूं। अभी मैंने 80-85 प्रतिशत फिटनेस हासिल कर ली है और अभ्यास के दौरान स्नैच में 70 से 80 किग्रा तथा क्लीन एवं जर्क में 100 से 110 किग्रा का भार उठा रही हूं। हम इसे धीरे-धीरे बढ़ाएंगे। उन्होंने अपने भार उठाने के लक्ष्य के बारे में पूछे जाने पर कहा, इस बारे में कुछ कहना मुश्किल है लेकिन मेरी कोशिश स्नैच में 90 किग्रा और क्लीन एवं जर्क में पहले से बेहतर करने की होगी। मणिपुर की इस खिलाड़ी ने कहा कि अभी उनका पूरा ध्यान चोट से बचने पर है। उन्होंने हॉर्शिंग की तारीफ करते हुए कहा, उनकी मौजूदगी से काफी मदद मिली है। मैं 2020 से उनके साथ काम कर रही हूं और वह अच्छे से समझते है कि मेरे शरीर में कहां परेशानी है। वह जानते है कि चोट से कैसे जल्दी उबरना है और किस तरह से अभ्यास को आगे बढ़ाना है।

Paris Olympics

मीराबाई ने कहा, मैंने चोटिल होने के बाद काफी कुछ सीखा है। उससे निपटने और उबरने के साथ सही खान-पान और विश्राम पर ध्यान देना काफी जरूरी होता है। मीराबाई ओलंपिक की तैयारियों को दुरुस्त करने सात जुलाई को पेरिस जा रही है। वह वहां एक महीने तक अभ्यास करेंगे। ओलंपिक में उनकी स्पर्धा का आयोजन सात अगस्त को होगा। मीराबाई ने कहा, मैं सात जुलाई को पेरिस जा रही हूं। प्रतियोगिता से एक महीने पहले वहां पहुंचने से काफी फायदा मिलेगा।

शख्स ने नासा पर ठोका 80,000 डॉलर का मुकदमा, घर पर अंतरिक्ष से गिरा मलबा, छत से लेकर फर्श तक कर दिया छेद

वाशिंगटन । अमेरिका में एक शख्स को नासा बड़ा सदमा दे गया, जिसके बाद उक्त शख्स ने अंतरिक्ष एजेंसी के खिलाफ मुकदमा ठोक दिया है। यह शख्स अमेरिका के फ्लोरिडा स्थित नेपल्स का रहने वाला है। उसने नासा से 80,000 डॉलर यानी करीब 67 लाख रुपये मुआवजे की मांग की है। रिपोर्ट के मुताबिक, यह घटना इस साल 8 मार्च की है। नेपल्स में एलेयांद्रो ओटेरो के घर पर अंतरिक्ष से एक बड़ा सा मलबा आ गिर गया। इस मलबे ने उनके घर की छत से लेकर फर्श तक में छेद कर दिया। इस घटना के वक्त एलेयांद्रो अपने परिवार के साथ छुट्टी मनाने गए हुए थे। घर पर सिर्फ उनका बेटा डैनियल मौजूद था, जिसने उन्हें फोन करके इसके बारे में बताया। ओटेरा ने बताया, 'मैं यह सुनकर कांप रहा था। मैं पूरी तरह से हैरान था। मैं सोच रहा था कि आखिर हमारे घर पर इतनी ताकत से कौन सी चीज गिर गई, जिससे इतना नुकसान हो गया।' एलेयांद्रो ने घर पहुंचकर देखा तो उन्होंने 41.6 इंच का एक सिलेंडर दिखा, जिसका वजन करीब 1.6 पाउंड यानी करीब 700 ग्राम था। वह सोच रहे थे कि आखिर ये चीज़ कहां से आई, जिसने उनके घर को तबाह कर दिया। नासा ने बाद में पुष्टि की कि यह सिलेंडर उसके स्पेस स्टेशन से निकला था। उसने बताया कि इसका इस्तेमाल कार्गो पैलेट पर पुरानी बैटरियों को माउंट करने के लिए किया जाता था। इसे 2021 स्पेस स्टेशन से छोड़ा गया था। ऐसी चीज़े के पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करते ही पूरी तरह से जल जाती है, हालांकि यह एक टुकड़ा बच गया और अंतरिक्ष में करीब 3 साल मंडराने के बाद ओटेरो परिवार की प्रॉपर्टी पर गिर गया।वहीं ओटेरा परिवार के वकील मीका गुयेन वर्थी ने इस मुद्दे की गंभीरता पर जोर देते हुए कहा, 'मेरे मुवक्किल इस घटना से उनके जीवन पर पड़ने वाले तनाव और प्रभाव के लिए पर्याप्त मुआवजे की मांग कर रहे हैं। वे शुक्रगुजार हैं कि इस घटना से किसी को भी शारीरिक चोट नहीं लगी, लेकिन इस तरह की स्थिति भयावह हो सकती थी। अगर मलबा दूसरी दिशा में कुछ फीट दूर गिरता, तो गंभीर चोट या मौत हो सकती थी।' वर्थी ने यह भी बताया कि इस केस का मकसद निजी और सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों में अंतरिक्ष मलबे के दावों के लिए एक मिसाल कायम करना है। वहीं नासा को इस मामले ओटेरो परिवार की तरफ से मांगे गए मुआवजे का जवाब देने के लिए छह महीने का समय दिया गया है। बता दें कि अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के नाम पर कई रिकॉर्ड दर्ज हैं। अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में इस एजेंसी का नाम लोग बड़े सम्मान से लेते हैं।

प्रेमी ने तोडा वादा तो कोर्ट पहुंची लडकी , प्रेमी पर लगाया 'वर्बल कॉन्ट्रैक्ट' के उल्लंघन का आरोप

क्राइस्टचर्च । एक लडकी के ब्वॉयफ्रेंड ने उससे किया गया वादा नहीं निभाया, तो वह कोर्ट पहुंच गई और प्रेमी पर 'वर्बल कॉन्ट्रैक्ट' के उल्लंघन का आरोप लगाया। न्यूज़ीलैंड की रहने वाली एक प्रेमिका ये बर्दाश्त नहीं कर पाई कि उसके प्रेमी ने उससे जो वादा किया, वो पूरा नहीं किया। अब ये प्रॉमिस कोई शादी को लेकर नहीं था बल्कि बात इतनी सी थी कि उसने लड़की को एयरपोर्ट छोड़ने के लिए कहा था, लेकिन वो नहीं गया। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक न्यूज़ीलैंड की रहने वाली एक लड़की ने अपने लॉन्ग टाइम ब्वॉयफ्रेंड पर 'वर्बल कॉन्ट्रैक्ट' का उल्लंघन करने का केस ठोका है। पढ़ने में ये बात जितनी भारी-भरकम है, मामला उतना ही मज़ेदार है। दरअसल हुआ यूं कि लड़की को एक म्यूज़िक कॉन्सर्ट के लिए दूसरे शहर में जाना था। प्रेमी ने कहा था कि वो उसे एयरपोर्ट तक छोड़ देगा और उसकी गैर हाजिरी में दो दिन तक उसके दो पेट डॉग्स का भी ख्याल रखेगा। हालात ऐसे बने कि लड़का उसे छोड़ने नहीं आ सका और लड़की की फ्लाइट छूट गई। लड़की ने डिस्प्यूट ट्रिब्यूनल को बताया कि वो साढ़े 6 साल से रिलेशनशिप में है। ऐन वक्त पर ब्वॉयफ्रेंड ने मैसेज का रिप्लाई नहीं दिया और उसे अपनी ट्रिप कैंसिल करनी पड़ी। अगले दिन जाने पर उसके काफी पैसे खर्च हो गए और इसकी वजह सिर्फ उसका वादा न पूरा करना थी। मामले में अदालत ने फैसला सुनाते हुए कहा कि जब तक आप कानूनी रूप से बाध्यकारी किसी रिश्त में नहीं हैं, तब तक इस तरह का दबाव नहीं डाला जा सकता यानि लड़की को निराश होना पड़ा। बता दें प्रेमी-प्रेमिका का रिश्ता ही नोकझोंक से भरा होता है। कभी प्यार तो कभी तकरार से ही ये रिलेशनशिप आगे बढ़ता है।

ब्रिटेन में 4 जुलाई को वोटिंग

लंदन। ब्रिटेन में भारतवंशी पीएम ऋषि सुनक और उनकी कंजरवेटिव पार्टी का जल्द चुनाव का दांव फेल होता दिख रहा है। एक सप्ताह बाद 4 जुलाई को होने वाली वोटिंग से पहले अधिकांश सर्वे में कंजरवेटिव पार्टी के सफाए की भविष्यवाणी कर रहे हैं। सर्वे में सुनक की पार्टी को सबसे ज्यादा 117 सीटें मिलने का अनुमान जताया गया है। वहीं, सावंता-गार्जियन के सर्वे में दावा किया गया है कि कंजरवेटिव पार्टी 53 सीटों पर ही सिमट सकती है। जो 2019 के चुनाव की 365 सीटों की तुलना में बेहद कम है। वहीं, 650 सीटों वाले सदन में कीर स्टारमर की लेबर पार्टी को सबसे कम 425 और अधिकतम 516 सीटें मिलने का अनुमान है। 7 सर्वे के औसत में भी सुनक को 95 और स्टारमर को 453 सीटें मिलती दिख रही है।

रहने के हिसाब से सबसे खराब शहर में शामिल हुआ कराची

नई दिल्ली । पाकिस्तान के शहर कराची को दुनिया के सबसे कम रहने योग्य 5 शहरों में से एक का दर्जा मिला है। हाल ही में हुए वैश्विक सर्वे में कराची को बेहद खराब रैंकिंग मिली है। पाकिस्तान का बंदरगाह शहर कराची कभी अत्याधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर और आधुनिक शिक्षा के लिए मशहूर था लेकिन अब पाकिस्तान की तरह ही इसकी हालत भी बदतर हो गई है। रिपोर्ट के अनुसार, सर्वे एजेंसी ने स्वास्थ्य देखभाल, संस्कृति और पर्यावरण, स्थिरता, इंफ्रास्ट्रक्चर और शिक्षा सहित कई महत्वपूर्ण कारकों पर दुनिया भर के 173 शहरों की रैंकिंग की है। इस सूची में कराची 169वें स्थान पर है। कराची को कुल 42.7 स्कोर मिला है। स्थिरता संकेतक में कराची ने बेहद खराब प्रदर्शन करते हुए 100 में से महज 20 अंक हासिल किए। कराची को स्वास्थ्य के लिए 54.2, संस्कृति और पर्यावरण के लिए 35.9, शिक्षा के लिए 75 और इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए 51.8 अंक मिले। सर्वे में कराची को दुनिया के सबसे कम रहने योग्य 5 शहरों में रखा गया है। सीरिया की राजधानी दमिश्क को दुनिया में सबसे कम रहने योग्य शहर माना गया है। नीचे से दूसरे स्थान पर लीबिया की राजधानी त्रिपोली, तीसरे पर अल्जीरिया का शहर अल्जीयर्स, चौथे पर नाइजीरिया का लागोस और पांचवें स्थान पर कराची है। वहीं ऑस्ट्रिया की राजधानी पिछले कई सालों की तरह इस बार भी दुनिया का सबसे ज्यादा रहने योग्य शहर है। 98.4 अंकों के साथ यह लिस्ट में शीर्ष पर कायम है। डेनमार्क की राजधानी कोपेनहेगन ने भी अपना दूसरा स्थान कायम रखा है, जबकि स्विट्जरलैंड का ज्यूरिख पहले छठे स्थान पर था जो अब तीसरे स्थान पर पहुंच गया है।

खून देखकर मिलती है खुशी.....10 साल की उम्र में कर दिया मर्डर

लंदन । आप क्राइम थ्रिलर और मर्डर से जुड़ी खबरों में दिलचस्पी रखतें हैं, तब ये खबर आपके लिए है। इंग्लैंड की रहने वाली मैरी बेल ने 10 साल की उम्र में, चार साल की मार्टिन ब्राउन का गला घोंटकर हत्या कर दी थी और अपने परिवार को एक नोट लिखकर इसकी जानकारी दी।

इस मर्डर के दो माह बाद मैरी बेल ने तीन साल की ब्रायन होवे को मार डाला। मैरी ने कई अन्य बच्चों का गला घोंटने का प्रयास कर अपने नोट्स में हत्या जारी रखने की इच्छा व्यक्त की। लगातार कई हत्याओं में दोषी होने के बाद मैरी पर केस दर्ज हुआ और मुकदमा चला और ये माना गया कि मैरी सिर्फ अपनी खुशी के लिए खून करती है। जिसके बाद मैरी को 12 साल की सजा हुई। मैरी की मां बेट्टी मैकक्रिकेट एक 16 साल की सेक्स वर्कर थी। वे अक्सर मेरी बैल को छोड़कर घूमने निकल जाती थी। तब मैरी बैल के साथ किस तरह का बर्ताव होता था ये कहा नहीं जा सकता। उसकी मां ने ये कोशिश की थी कि कोई उसे कोई एडोप्ट कर ले। लेकिन बात नहीं बन सकी। बताया जाता है बचपन में ठीक से परवरिश न मिलने के कारण मैरी का व्यवहार ऐसा हुआ है। हत्या के मामले में मैरी और नोर्मा को स्कूल के बाहर पकड़ा गया था, लेकिन तुरंत रिहा कर दिया गया। मार्टिन की हत्या के बारे में मैरी के दावों को शुरू में ध्यान आकर्षित करने वाला बताकर खारिज कर दिया गया था। लेकिन मैरी की तरफ से हत्या की घटनाएं बंद नहीं हो रही थीं। इसके बाद मैरी के खतरनाक स्वभाव और बच्चों के प्रति उसके खतरे को देखते हुए, मैरी बेल को अनिश्चितकालीन कारावास की सजा सुनाई गई थी।

ताइवान की सैना में शामिल नये सैनिक निशाना लगाने का अभ्यास करते हुए।

अंतरिक्ष में अचानक टूटा सैटेलाइट, अंतरिक्ष यात्रियों ने स्पेसक्राफ्ट में छिपकर बचाई जान

मॉस्को। रूस का एक ऑब्जरेशन सैटलाइट अंतरिक्ष में अचानक टूटकर सैकड़ों टुकड़ों में बिखर गया। इसके मलबे से बचने के लिए इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन (आईएसएस) के अंतरिक्षयात्रियों ने स्पेसक्राफ्ट में छिपकर अपनी जान बचाई। हालांकि सैटलाइट के टूटने की वजह का पता नहीं चल पाया है। वहीं इस घटना पर रूस की अंतरिक्ष एजेंसी रोस्कोसमोस ने भी कोई टिप्पणी नहीं की है। अमेरिका के स्पेस कमांड का कहना है कि सैटलाइट के मलबे से फिलहाल किसी दूसरे सैटलाइट को नुकसान पहुंचने की आशंका नहीं है। बता दें कि रूस के इस रीसर्स पी-1 सैटलाइट को 2022 में ही मृत घोषित कर दिया गया था। अमेरिका की एक स्पेस ट्रैकिंग फर्म लियोलैब्स ने देखा था कि अंतरिक्ष में अचानक मृत सैटलाइट कम से कम 100 टुकड़ों में टूट गया। अब इसके बड़े-बड़े टुकड़े पृथ्वी की कक्षा में घूम रहे हैं। पृथ्वी की कक्षा में बढ़ते सैटलाइट और फिर उनकी वजह से बढ़ने वाला मलबा चिंता का कारण बन रहा है। साल 2021 में रूस ने अपने एक सैटलाइट को एंटी सैटलाइट मिसाइल द्वारा अंतरिक्ष में ही नष्ट कर दिया था। इसके बाद पश्चिमी देशों ने रूस की कड़ी आलोचना की थी। मिसाइल से सैटलाइट को नष्ट करने के बाद इसके हजारों बड़े-बड़े टुकड़े पृथ्वी की कक्षा में फैल गए। वहीं रीसर्स पी-1 को लेकर अभी इस तरह की बात पता नहीं चली है। रूस द्वारा किसी तरह के एंटी मिसाइल लॉन्च की खबर सामने नहीं आई है। दरअसल जब किसी सैटलाइट का आखिरी समय आता है तो या तो वह धीरे-धीरे पृथ्वी के वातावरण में प्रवेश करने लगता है और फिर जलकर राख हो जाता है। वहीं कई सैटलाइट पृथ्वी की ग्रेवयार्ड ऑर्बिट में चले जाते हैं। यह पृथ्वी से 36 हजार किलोमीटर की ऊंचाई की कक्षा है जिसमें दूसरे सैटलाइट से टकराने का खतरा कम हो जाता है।

कजाकिस्तान में एससीओ शिखर सम्मेलन में शामिल नहीं होंगे पीएम मोदी, जयशंकर करेंगे भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व

नईदिल्ली(एजेंसी)। विदेश मंत्रालय ने पुष्टि की है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 3-4 जुलाई को कजाकिस्तान में आगामी शंघाई सहयोग संगठन (एससी) शिखर सम्मेलन में भाग नहीं लेंगे और विदेश मंत्री एस जयशंकर बैठक में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करेंगे, जहां रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन होंगे। चीन के शी जिनपिंग के भाग लेने की उम्मीद है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जयसवाल ने गुरुवार को नई दिल्ली में अपनी साप्ताहिक प्रेस वार्ता के दौरान कहा कि एससीओ में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व विदेश मंत्री करेंगे। यह एससीओ शिखर सम्मेलन 3 से 4 जुलाई के बीच होना है। इसलिए विदेश मंत्री वहां हमारे प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करेंगे।

इससे पहले, कई रिपोर्टों में अनुमान लगाया गया था कि पीएम मोदी एससीओ शिखर सम्मेलन में भाग नहीं लेंगे, जबकि नई लोकसभा का पहला संसदीय सत्र चल रहा है। जयशंकर के शिखर सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व करने की उम्मीद थी जहां पुतिन, चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग और पाकिस्तान के पीएम शहबाज शरीफ के भाग लेने की संभावना है।

पिछले साल, भारत ने वस्तुतः एससीओ शिखर सम्मेलन की मेजबानी की थी, जहां विदेश मंत्री जयशंकर ने तत्कालीन पाकिस्तान के विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो की उपस्थिति में आतंकवाद पर चिंता

व्यक्त की थी। पुतिन ने शिखर सम्मेलन के आयोजन के लिए पीएम मोदी को धन्यवाद दिया और आतंकवाद, उग्रवाद और नशीली दवाओं की तस्करी से निपटने के लिए आपसी सहयोग पर नई दिल्ली घोषणा का समर्थन किया।

एससीओ क्या है?

शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) का गठन 2001 में चीन द्वारा किया गया था। इसके सदस्यों में भारत, रूस, चीन, पाकिस्तान और चार मध्य एशियाई देश - कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान और उज्बेकिस्तान शामिल हैं। 2017 में भारत और पाकिस्तान इसके स्थायी सदस्य बने। भारत को 2005 में एससीओ में पर्यवेक्षक बनाया गया था और उसने आम तौर पर समूह की मंत्री-स्तरीय बैठकों में भाग लिया है, जो मुख्य रूप से यूरेशियन क्षेत्र में सुरक्षा और आर्थिक सहयोग पर केंद्रित हैं। एससीओ एक प्रभावशाली आर्थिक और सुरक्षा ब्लॉक है और सबसे बड़े अंतरक्षेत्रीय अंतरराष्ट्रीय संगठनों में से एक के रूप में उभरा है।

भारतीय मजूदर की मौत पर...इटली की पीएम हुईं भावुक, खाई कसम

रोम (एजेंसी)। इटली में भारतीय नागरिक सतनाम की मौत से पूरे देश को हिलाकर रख दिया है। इस घटना से इटली को सबसे ज्यादा झटका लगा है। पूरी दुनिया में इटली की छवि धूमिल हुई है, क्योंकि देश में काम करने गए एक भारतीय मजदूर की मौत हो गई। इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी को इस बात से बड़ा गुस्सा है। जॉर्जिया मेलोनी का मन अशांत है। संसद में सिंह का नाम लेकर जिस तरीके से जॉर्जिया मेलोनी भावुक हुईं। उसके बाद पूरी दुनिया की निगाहें मानों इटली पर आकर रूक गई। रूंधे गले से न सिर्फ उस शख्स का नाम मेलोनी ने लिया बल्कि कुछ ऐसा कहा कि संसद में मौजूद हर सांसद सीट से खड़ा हो गया। फिर पूरी संसद में केवल तालियों की गड़गड़ाहट सुनाई पड़ने लगी। मेलोनी ने अमानवीय वजहों से मौत का शिकार हुए भारतीय सतनाम को संसद में श्रद्धांजलि दी और दोषियों को सख्त सजा देने का भरोसा दिया। मेलोनी ने जांच के आदेश दिए हैं। उन्होंने कहा, मामले में सख्त से सख्त कार्रवाई की जाएगी। इस दौरान मेलोनी काफी भावुक दिखाई दी। इतना ही नहीं, इटली के कई ट्रेड यूनियन ने घटना को क्रूर बताया है। वे सतनाम सिंह के परिवार को आर्थिक मदद देने की भी बात कह रहे हैं।

बता दें कि इटली उस वक्त सुर्खियों में आ गया जब पंजाब के भटिंडा जिले के रहने वाले सतनाम सिंह की इटली में मौत हो गई। सिंह का लातिना में स्ट्रॉबेरी की पैकिंग करने वाली मशीन से हाथ कट गया था जिसके बाद उनके नियोक्ता ने सिंह को बिना चिकित्सा उपचार के छोड़ दिया था।

भारत ने इटली से उस भारतीय श्रमिक की मौत के लिए जिम्मेदार लोगों के खिलाफ त्वरित कार्रवाई करने को कहा, जिसे भारी कृषि मशीनरी से उसका हाथ कट जाने के बाद उसके नियोक्ता ने उसे बिना चिकित्सकीय सहायता के सड़क पर फेंक दिया था, जिससे उसकी मौत हो गई थी।

चीन में दो पूर्व रक्षा मंत्रियों को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी से निष्कासित किया गया

बीजिंग । चीन के दो पूर्व रक्षा मंत्री ली शांगफू और वेई फेंगहे को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी से निष्कासित किया गया है। इन दोनों पर अवैध रूप से उपहार और पैसे लेने और रिश्वतखोरी का संदेह जताया गया है। ली शांगफू 12 मार्च 2023 से 24 अक्टूबर 2023 तक चीन के रक्षा मंत्री रहे। वहीं, वेई फेंगहे को 19 मार्च 2018 को रक्षा मंत्रालय की कमान सौंपी गई थी। वे 12 मार्च 2023 तक इस पद पर रहे। वेई फेंगहे पीएलए रॉकेट फोर्स के वरिष्ठ अधिकारी थे, जिनके कई शीर्ष कमांडरों को राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने भ्रष्टाचार के गंभीर आरोपों में बर्खास्त कर दिया था।

मंच पर हुए आमने-सामने : प्रेसिडेंशियल डिबेट में खूब बरसे ट्रंप

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन और डोनाल्ड ट्रंप एक बार फिर एक ही मंच पर आमने-सामने हुए हैं। नवंबर में होने वाले राष्ट्रपति चुनाव के लिए ट्रंप और बाइडन के बीच प्रेसिडेंशियल डिबेट हुई है। वोटरों को अपने पक्ष में करने के लिए दोनों अमेरिकी जनता के सामने अपनी बातें रख रहे हैं। अटलांटा स्थित दफ्तर में पहली प्रेसिडेंशियल बहस के दौरान डोनाल्ड ट्रंप ने जो बाइडन पर जमकर हमला बोला। डोनाल्ड ट्रंप ने दावा किया कि बाइडन चीन के साथ सौदा करने से डरते हैं क्योंकि उन्हें ड्रैगन से पैसा मिलता है। अब तक यह हमारे देश के इतिहास में सबसे बड़ा वित्तीय घाटा है। चीन के साथ हमारा सबसे बड़ा घाटा है। उन्हें चीन से पेमेंट मिलता है, वह एक मंचूरियन उम्मीदवार हैं।'

बता दें कि यहां कोई लाइव ऑडियंस नहीं है। जब बाइडन बोलते हैं तो ट्रंप का माइक म्यूट रहता है और जब ट्रंप बोलते हैं तो बाइडन का माइक म्यूट रहता है। जो बाइडन ने अपनी बहस की शुरुआत डोनाल्ड ट्रंप की तीखी आलोचना से की। हालांकि, बोलते वक्त वह कई बार लड़खड़ाए, जिसके बाद ट्रम्प ने तुरंत उनके शब्दों को पकड़ लिया। जो बाइडन और डोनाल्ड ट्रंप अमेरिकी राष्ट्रपति पद के लिए अब तक के दो सबसे उम्रदराज उम्मीदवार हैं। डेमोक्रेटिक की ओर से जो बाइडन अपनी बातें रख रहे हैं तो वहीं रिपब्लिकन की ओर से डोनाल्ड ट्रंप। यहां बताना जरूरी है कि समय से पहले इस बार यह डिबेट हो रही है। अब तक दोनों पार्टियों ने आधिकारिक तौर पर अपना उम्मीदवार घोषित नहीं किया है। लाइव डिबेट में दोनों एक-दूसरे पर वार-पलटवार कर रहे हैं।

चीन की धमकी के बाद ताइवान ने उठाया बड़ा कदम, अपने नागरिकों से की ये अपील

(एजेंसी)। ताइवान सरकार ने चीन और हांगकांग की यात्रा करने के इच्छुक नागरिकों के लिए अपनी यात्रा चेतावनी बढ़ा दी है और उनसे कहा है कि जब तक बहुत जरूरी न हो तब तक न जाएं, पिछले हफ्ते बीजिंग द्वारा उन लोगों को फांसी देने की कथित धमकी के बाद, जिन्हें वह ताइवान की स्वतंत्रता के कट्टर समर्थक मानते हैं। चीन की धमकी, जो ताइवान को अपना क्षेत्र मानता है। देश और स्वतंत्रता की वकालत करने वाले ताइवान के राष्ट्रपति लाई चिंग-ते के बीच पहले से ही तनावपूर्ण तनाव को और बढ़ा दिया है। चीन ने 21 जून को देश को विभाजित करने और कानून के अनुसार अलगाव अपराधों को उकसाने और चीन की राष्ट्रीय संप्रभुता की रक्षा के लिए ÷कट्टर÷ ताइवान स्वतंत्रता अलगाववादियों के लिए चरम मामलों में मौत की सजा देने की धमकी दी। उत्तेजक टिप्पणियों की लाई और उनकी सरकार के साथ-साथ अमेरिका ने भी निंदा की। ताइवान के मुख्यभूमि मामलों की परिषद के प्रवक्ता लियांग वेन-चीह ने संवाददाताओं से कहा कि बढ़ी हुई यात्रा

चेतावनी चीन द्वारा संचालित शहरों हांगकांग और मकाऊ पर भी लागू होती है। उन्होंने कहा कि दिशानिर्देश चीन जाने वाले ताइवानी लोगों की सुरक्षा के लिए एक गंभीर खतरा दर्शाते हैं, इसके अलावा चीन ने अपने राष्ट्रीय सुरक्षा कानूनों को मजबूत करने के लिए अन्य उपाय भी किए हैं। उन्होंने कहा कि अगर जाना ज़रूरी नहीं है, तो न जाएं। उन्होंने कहा कि यह यात्रा पर प्रतिबंध नहीं है और यह ताइवान के लोगों की रक्षा करने और उन्हें प्रति उपाय के बजाय जोखिम की याद दिलाने के बारे में है। चीन के ताइवान मामलों के कार्यालय ने टिप्पणी के अनुरोध का तुरंत जवाब नहीं दिया। इसने बुधवार को कहा कि दिशानिर्देश केवल बहुत कम संख्या में स्वतंत्रता के कट्टरपंथियों के बुरे शब्दों और कार्यों के लिए थे।

इस साल का दूसरा सूर्य ग्रहण दो अक्टूबर को पड़ेगा

-यह पूर्ण सूर्य ग्रहण नहीं होगा, आग के एक छल्ले के रुप आएगा नजर

वॉशिंगटनसैंटफ्रांसिस्को (एजेंसी)। इस साल हमें दो सूर्य ग्रहण देखने को मिलेंगे। पहला सूर्य ग्रहण एक पूर्ण सूर्य ग्रहण था, जो अमेरिका में अप्रैल महीने में देखा गया था। यह बेहद दुर्लभ नजारा था। वहीं अगले सूर्य ग्रहण का बेसब्री से इंतजार किया जा रहा है। अगला सूर्य ग्रहण हमें 2 अक्टूबर को दिखाई देगा। लेकिन यह पूर्ण सूर्य ग्रहण नहीं होगा। दो अक्टूबर को लगने वाला सूर्य ग्रहण एक वलयाकार सूर्य ग्रहण होगा, जिसे रिंग ऑफ फायर भी कहा जाता है। आसमान में आग का एक छल्ला दिखाई देता है। इसका कारण यह है कि अंतरिक्ष में सूर्य स्थिर रहता है। वहीं पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है। चंद्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करता है और इसके साथ चलते हुए सूर्य का चक्कर लगाता है। कई बार ऐसा होता है जब घूमते हुए चंद्रमा सूर्य और पृथ्वी के बीच में आ जाता है तब यह कुछ क्षण के लिए सूर्य के प्रकाश को रोक देता है, जो सूर्य ग्रहण कहलाता है। इस दौरान इसकी परछाई धरती पर पड़ती है। चंद्रमा जब धरती का चक्कर लगाता है तो इस दौरान उसकी दूरी भी बदलती रहती है। कभी वह पृथ्वी के नजदीक होता है तो कभी दूर। जब चंद्रमा पृथ्वी के करीब होता है तब इसका आकार बड़ा दिखता है। वहीं जब यह धरती से दूर होता है तो छोटा नजर आता है। सूर्य ग्रहण के दौरान अगर यह धरती के करीब होता है, तो आकार के कारण पृथ्वी से यह हमें सूर्य को पूरी तरह ढकता हुआ दिखाई देता है। लेकिन जब यह पृथ्वी से दूर होता है तो अपने छोटे आकार के कारण सूर्य के बीच के हिस्से को ही ढक पाता है। सूर्य का बाकी किनारा दिखाई देता है, जो आसमान में आग का छल्ले के रुप में नजर आता है। वलयाकार सूर्य ग्रहण को एन्यूलर सोलर इकलिप्स कहा जाता है। 2 अक्टूबर को लगने वाले सूर्य ग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा। यह वलयाकार सूर्य ग्रहण दक्षिण अमेरिका महाद्वीप और प्रशांत महासागर में दिखाई देगा। चंद्रमा इस दौरान सूर्य के 93 फीसदी हिस्से को कवर करेगा। आसमान में एक पूर्ण आग की रिंग 7 मिनट 25 सेकंड का होगा। अर्जेंटीना और चिली के कुछ जगहों पर इस सूर्य ग्रहण को देखा जा सकता है। महाद्वीप के बाकी हिस्सों में यह आंशिक रूप से दिखाई देगा।

साउथ अफ्रीका को सात रनों से टीम इंडिया ने दी शिकस्त, जीत ली जहां

T-20 WORLD CUP

17 साल बाद भारत का सपना हुआ पूरा, महेन्द्र सिंह धोनी के बाद रोहित शर्मा ने रचा इतिहास

भारत ने दक्षिण अफ्रीका को हराकर टी20 वर्ल्ड कप अपने नाम कर लिया। भारत ने दक्षिण अफ्रीका को फाइनल मुकाबले में 7 रन से हरा दिया और ट्रॉफी अपने नाम कर लिया। भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 7 विकेट के नुकसान पर 176 रन बनाया, फिर अफ्रीका को 20 ओवर में केवल 169 रन पर ही रोक दिया और मैच अपने नाम कर लिया। आखिरी ओवर में दक्षिण अफ्रीका को जीत के लिए 16 रन की जरूरत थी, लेकिन अफ्रीका केवल 8 रन की बना पाया। आखिरी ओवर हार्दिक पांड्या ने डाला, जिसमें उन्होंने पहली ही गेंद पर डेविड मिलर को अपना शिकार बनाया और भारत की जीत सुनिश्चित भारत की ओर से सबसे ज्यादा विकेट हार्दिक पांड्या ने चटकाए। उन्होंने 3 ओवर में 20 रन देकर तीन विकेट लिए, जबकि अर्शदीप सिंह और जसप्रीत बुमराह ने दो-दो विकेट चटकाए। अक्षर पटेल ने एक विकेट लिए। विराट कोहली को प्लेयर ऑफ दी मैच दिया गया। विराट ने फाइनल मुकाबले में शानदार बल्लेबाजी की।

टीम इंडिया को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दी बधाई

टी20 विश्वकप जीतने पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भारतीय टीम को बधाई दी। उन्होंने एक वीडियो संदेश जारी कर कहा कि इस भव्य विजय के लिए सभी देशवासियों की तरफ से बहुत-बहुत बधाई। आज 140 करोड़ देशवासी आपके शानदार प्रदर्शन को लेकर गर्व महसूस कर रहे हैं। खेल के मैदान में आपने वर्ल्ड कप जीता, लेकिन देश के गांव, गली महल्लों में आपने सबका दिल जीत लिया है। वहीं कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने विश्व चैम्पियन बनने पर टीम इंडिया को बधाई दी है। उन्होंने एक्स पोस्ट में कहा, रोमांचक फाइनल में टीम इंडिया ने 17 साल बाद विश्वकप का खिताब जीता। मैच में विराट कोहली, अक्षर पटेल और अर्शदीप सिंह चमके। इस अविश्वसनीय जीत पर हर भारतीय को गर्व है। आपकी उपलब्धियों का हमेशा जश्न मनाया जाएगा और उन्हें संजोया जाएगा। हम भविष्य के मैचों में आपका समर्थन और उत्साहवर्धन जारी रखने के लिए तत्पर हैं।

मेरा आखिरी टी-20 वर्ल्ड कप : विराट

विराट कोहली ने भारत की टी20 वर्ल्ड कप-2024 की खिताबी जीत के बाद बड़ा ऐलान कर दिया। विराट कोहली ने कहा है कि साउथ अफ्रीका के खिलाफ खेला गया फाइनल मैच उनके टी20 करियर का आखिरि मैच है और ये उनका आखिरी टी20 वर्ल्ड कप है। विराट कोहली ने साउथ अफ्रीका के खिलाफ खेले गए फाइनल में 76 रनों की पारी खेली। पूरे टूर्नामेंट में उनका बल्ला शांत था लेकिन फाइनल में कोहली ने अहम पारी खेली और भारत को मजबूत स्कोर तक पहुंचाया। उनकी इस पारी के लिए कोहली को प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया है। प्लेयर ऑफ दे मैच लेते समय ही कोहली ने संन्यास का ऐलान किया।

प्रति व्यक्ति आय में महाराष्ट्र पिछड़ा, विधानसभा चुनावों में बन सकता है मुद्दा

-तेलंगाना पहले नंबर पर तो कर्नाटक और हरियाणा भी आगे

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों से राज्य विधानमंडल के मानसून सत्र के पहले दिन आर्थिक सर्वेक्षण पेश किया गया। इसमें देश में प्रति व्यक्ति आय के मामले में तेलंगाना जहां शीर्ष पर है तो वहीं महाराष्ट्र छठें स्थान पर आ गया है, वहीं गुजरात, महाराष्ट्र से आगे है। आर्थिक सर्वेक्षण में सामने आई यह तस्वीर आगामी चुनावों में महायुति सरकार के घटक दलों के लिए सिरदर्द बन सकती है। लोकसभा चुनावों में महाविकास आघाडी ने महाराष्ट्र का विकास नहीं होने और राज्य से उद्योग-धंधे गुजरात जाने को मुद्दा बनाया था।

उद्धव ठाकरे की अगुवाई वाली शिवसेना ने हीरे का कारोबार सूरत शिफ्ट होने और सेमीकंडक्टर प्लांट को गुजरात जाने पर बीजेपी और एकनाथ शिंदे की शिवसेना को घेरा था। महाराष्ट्र आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24 में सामने आया है कि राज्य प्रति व्यक्ति आय में छठवें नंबर पर है। महाराष्ट्र में प्रति व्यक्ति की आय 2,52,389 रुपए बताई गई है। प्रति व्यक्ति आय के मामले में तेलंगाना पहले नंबर पर है तो वहीं दूसरी नंबर पर कर्नाटक और फिर हरियाणा है।

महाराष्ट्र के गुजरात के पीछे होने को महाविकास आघाडी मुद्दा बना सकती है। आर्थिक सर्वेक्षण में कहा गया है कि 2021-22 में बड़े उछाल के बाद महाराष्ट्र का विकास इंजन धीमा हो गया है। महामारी में अर्थव्यवस्था तो बनी लेकिन बची भी और कायम भी रही। इसके बाद इसके बढ़ने की उम्मीद थी, शुरुआत तो अच्छी हुई, लेकिन चीजें ठीक नहीं चल रही हैं। यह चिंता का कारण होना चाहिए। वित्तीय वर्ष 2021-2022 और पिछले आर्थिक सर्वेक्षण में महाराष्ट्र प्रति व्यक्ति आय के मामले में पांचवें नंबर पर था। तब कर्नाटक, तेलंगाना, हरियाणा और तमिलनाडु उससे आगे थे। पिछले सर्वेक्षण में महाराष्ट्र के लोगों की प्रति व्यक्ति आय में बढ़ोतरी हुई थी। यह वित्तीय वर्ष 2021-2022 के मुकाबले 2,15,233 रुपए से बढ़कर 2,42,247 रुपए हो गई थी। इस बार के सर्वेक्षण में भी प्रति व्यक्ति आय बढ़कर 2,52,389 रुपए हुई, लेकिन महाराष्ट्र, गुजरात से पीछे हो गया है।

तमिलनाडु विधानसभा ने नीट को रद्द करने का प्रस्ताव किया पारित, विपक्ष ने किया वॉकआउट

चेन्नई (एजेंसी)। सदन से विपक्ष के बहिर्गमन के बावजूद तमिलनाडु विधानसभा ने शुक्रवार को सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित कर केंद्र से राज्य से एनईईटी को खत्म करने और छात्रों को 12वीं कक्षा के अंकों के आधार पर मेडिकल पाठ्यक्रमों में प्रवेश की अनुमति देने का आग्रह किया। प्रस्ताव को आगे बढ़ाते हुए मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने कहा कि सत्तारूढ़ द्रमुक राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (एनटीए) द्वारा आयोजित एनईईटी के खिलाफ अपनी लड़ाई जारी रखेगी, जो स्नातक परीक्षाओं और अन्य कार्यक्रमों के संचालन में कथित अनियमितताओं को लेकर जांच के दायरे में है।

राहुल गांधी, अखिलेश यादव और तेजस्वी सूर्या समेत कई नेताओं ने पत्र लिखकर नीट पर रोक लगाने की मांग की है। स्टालिन ने कहा कि मैं विधानसभा से आग्रह करता हूं कि हमें एनईईटी से छूट दिलाने और देश भर में एनईईटी को हटाने के लिए इस प्रस्ताव को एक अग्रदूत के रूप में पारित किया जाए। प्रस्ताव के अनुसार, एनईईटी ने ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों की चिकित्सा की पढ़ाई की संभावनाओं को नुकसान पहुंचाया और स्कूली शिक्षा को बेकार कर दिया, और मेडिकल कॉलेजों में छात्रों के लिए सीटें आवंटित करने का अधिकार छीन लिया। स्टालिन ने कहा कि एनईईटी को हटाया जाना चाहिए। तमिलनाडु को छूट दी जानी चाहिए। केंद्र सरकार को विधानसभा द्वारा पारित विधेयक को मंजूरी देनी चाहिए, जिसमें चिकित्सा की पढ़ाई के लिए 12वीं कक्षा के अंकों को आवश्यक योग्यता के रूप में अनुमति दी गई है। उन्होंने कहा कि इसके अलावा, चूंकि कई राज्य परीक्षा प्रणाली का विरोध कर रहे हैं, जिसे कई विवादों का सामना करना पड़ा है, इसलिए एनईईटी को हटाने के लिए केंद्र द्वारा राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग अधिनियम में आवश्यक संशोधन किए जाने चाहिए। भाजपा विधायक नैनार नागेंद्रन ने प्रस्ताव का विरोध किया और दावा किया कि यह कांग्रेस ही थी जो नीट लेकर आई थी। विपक्ष के विधानसभा से बाहर जाने से पहले नागेंद्रन ने कहा कि एनईईटी जरूरी है और इसलिए हम इस प्रस्ताव का समर्थन नहीं कर सकते और हमने वॉकआउट करने का फैसला किया है।

हद हो गई... जेल जाते वक्त मेकअप करती दिखी पवित्रा गौड़ा , पुलिस ने महिला सब इंस्पेक्टर को नोटिस जारी किया

बेंगलुरु ।कर्नाटक पुलिस ने रेणुकास्वामी हत्याकांड की आरोपी और अभिनेत्री पवित्रा गौड़ा के मामले को लेकर महिला सब इंस्पेक्टर को नोटिस जारी कर दिया है। दरअसल कन्नड़ सुपरस्टार दर्शन थुगुदीपा की सहयोगी और अभिनेत्री पवित्रा को पुलिस हिरासत में मेकअप करते हुए देखा गया। बता दें कि 15 जून को, पवित्रा को बेंगलुरु में अपराध स्थल की जानकारी दर्ज करने के लिए उनके बेंगलुरु स्थित आवास पर ले जाया गया। इस दौरान, पवित्रा को अपने घर से जेल जाते समय लिपस्टिक और मेकअप लगाए और मुस्कुराते हुए देखा गया था। इस हरकत के बाद पवित्रा गौड़ा का नाम फिर से चर्चा में आ गया और मामले में बहस छिड़ गई। डीसीपी (पश्चिम) के कार्यालय से एसआई को नोटिस जारी कर स्पष्टीकरण मांगा गया है। पुलिस ने नोटिस में कहा है, उस दिन उन्होंने पवित्रा को मेकअप क्यों करने दिया गया। इस बीच, पवित्रा गौड़ा की मां और बेटी ने केंद्रीय जेल में मुलाकात की और इस दौरान वे रो पड़ीं। सूत्रों से पता चला कि दूसरी ओर, पुलिस अधिकारियों ने दर्शन के पास मौजूद दो अमेरिकी निर्मित पिस्तौल को जब्त करने का आदेश पारित किया है।

सुधांशु त्रिवेदी का विरोधियों पर तंज.... राम का अस्तित्व नकारने वाले आज सबूत दे रहे

नई दिल्ली (एजेंसी)। राज्यसभा में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पेश करते हुए भाजपा सांसद सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि हमारी सरकार ने नालंदा विश्वविद्यालय को पुनर्स्थापित करने का फैसला किया। नालंदा विश्वविद्यालय को लेकर राज्यसभा सांसद त्रिवेदी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने कहा है कि आप पुस्तकों को जला सकते हैं, इमारतों को जला सकते हैं, लेकिन भारत के ज्ञान और संस्कृति को नहीं जला सकते। उन्होंने कहा कि जब भारत की सांस्कृतिक चेतना की बात होती है, तब हमारे मन में भव्य राम मंदिर की बात भी आती है। इस बार अयोध्या सीट पर हमें वांछित सफलता नहीं मिली। इसके बाद विपक्ष के चेहरों पर चमक दिखाई पड़ती है। हमारे विरोधी बता रहे हैं कि आप अयोध्या हार गए, बस्ती हार गए, चित्रकूट हार गए, प्रयागराज हार गए, नासिक, रामटेक और रामेश्वरम हार गए।

जो लोग पहले कहते थे राम हुए थे, इसका सबूत दो, वे लोग आज उत्तर से लेकर दक्षिण तक राम से जुड़े सबूत दे रहे हैं। यूपी में 30 साल पहले कांग्रेस, समाजवादी पार्टी और बसपा ने मिलकर सरकार बनाई थी। तब एक नारा लगा था, 'मिले मुलायम कांशीराम, हवा में उड़ गए जय श्री राम। हम तभी हवा में नहीं उड़े थे और कुछ समय बाद ही अपनी सरकार बनाकर दिखा दी थी। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने लक्ष्य रखा था कि 2030 तक भारत की इंस्टॉल कैपेसिटी पावर जेनरेशन का 40 प्रतिशत तक ग्रीन एनर्जी से होगा। पहले हमेशा सरकारें देर से लक्ष्य हासिल करती थी, पहली बार भारत के इतिहास में यह लक्ष्य 8 साल पहले वर्ष 2022 में हासिल कर लिया गया।

उन्होंने कहा कि लोगों के घर पर सोलर रूफटॉप लग रहे है। यह एक ऐसी योजना होगी, जिससे पर्यावरण पर किसी भी प्रकार का प्रभाव नहीं होगा। मुफ्त की ऊर्जा मिल रही है, वह भी सरकारी खजाने पर प्रभाव डाले बिना। हम हाइड्रोजन एनर्जी मिशन की ओर बढ़ रहे हैं। इस दौरान नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने सत्ता पक्ष पर तंज कसते हुए कहा कि आप जो बोल रहे हैं, कौन सुन रहा है आपका भाषण, हम नहीं सुन रहे।

भविष्य में बीजेपी के साथ जाने का कोई औचित्य नहीं: दुष्यंत चौटाला

-जेजेपी के साथ मिलकर कांग्रेस राज्यसभा में उतारे उम्मीदवार, हम देंगे साथ

चंडीगढ़, (एजेंसी)। हरियाणा के पूर्व उपमुख्यमंत्री और जननायक जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता दुष्यंत चौटाला बीजेपी के साथ हुए गठबंधन को लेकर खुलकर बोले उन्होंने कहा है कि जेजेपी को बीजेपी के साथ गठबंधन करके भारी नुकसान हुआ है। दुष्यंत ने कहा कि भविष्य में बीजेपी के साथ जाने का कोई औचित्य नहीं है। उन्होंने कहा कि प्रदेश की जनता में बीजेपी के प्रति भारी रोष था, जिसका खमियाजा जेजेपी को उठाना पड़ा।

हरियाणा में राज्यसभा की एक सीट पर होने वाले चुनाव में कांग्रेस और बीजेपी मिलकर खेल रहे हैं। अगर कांग्रेस वाकई बीजेपी को टक्कर देना चाहती है तो सांझा सामाजिक राज्यसभा उम्मीदवार उतारे, हम साथ देने को तैयार हैं। कांग्रेस पहले ही मैदान छोड़ रही है, भूपेंद्र हुड्डा की ओर से नंबर न होने की बात कहना बीजेपी के साथ मैच फिक्सिंग जैसा दिखता है। कांग्रेस किसी भी सामाजिक व्यक्ति या किसी खिलाड़ी को राज्यसभा में भेजे, विपक्ष पूरी तरह से एकजुट होगा।

भविष्य की रणनीति पर दुष्यंत ने कहा कि 5 जुलाई से जेजेपी की ओर से जिलास्तर पर बैठकें की जाएंगी। सभी 22 जिलों में कार्यकर्ताओं से फीडबैक लेकर विधानसभा चुनाव की तैयारी की जाएगी। जेजेपी प्रदेश की सभी 90 विधानसभा सीटों पर अपना उम्मीदवार उतारेगी। लोकसभा में चुनाव का नारा मोदी हराओ या मोदी जिताओ था, लेकिन विधानसभा में परिणाम इसके उलट होंगे। हरियाणा में लगातार बढ़ रही आपरा के मुद्दे पर नायब सैनी सरकार को घेरते हुए दुष्यंत ने कहा कि पिछले एक सप्ताह में हत्या, लूट जैसी अनेक आपराधिक घटनाएं हुईं, जो 20 साल में एक सप्ताह में कभी नहीं हुई। सीएम नायब सैनी को गृह विभाग छोड़कर किसी अन्य मंत्री को देना चाहिए।

वहीं, राज्यसभा चुनाव के लिए संयुक्त उम्मीरवार उतारे जाने को लेकर दुष्यंत के बयान पर नेता प्रतिपक्ष भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने कहा कि इस चुनाव को लेकर कांग्रेस का स्टैंड साफ है। वे 14 विधायक एकत्र करके दें, कांग्रेस के सभी विधायक निर्दलीय उम्मीदवार को वोट देकर राज्यसभा पहुंचाएंगे। हुड्डा ने दुष्यंत का नाम लिए बिना कहा कि चाहें तो वह अपने प्रत्याशी उतार दें, लेकिन बीजेपी के खिलाफ अगर उनकी नियत है तो 14 विधायक एकजुट करें। अलग-अलग बयानों के बजाय विधायकों को एकजुट करने में अपनी ऊर्जा लगाएं ताकि बीजेपी को हरा सकें।

यूपी सरकार ने किया मेडिकल सीट लीविंग बॉन्ड पॉलिसी को खत्म

-अगले साल फिर से दाखिला लेने पर रोक रहेगी बरकरार

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी के मेडिकल कॉलेज से पढ़ाई कर रहे हैं या करने जाने वालों के लिए एक अच्छी खबर आई है। अब योगी सरकार ने उत्तरप्रदेश में मेडिकल सीट लीविंग बॉन्ड पॉलिसी को खत्म करने का फैसला लिया है। ये एमबीबीएस, बीडीएस या पीजी मेडिकल कोर्स करने वालों के लिए किसी बड़े बदलाव से कम नहीं, जिसका इंतजार वह सालों से करते थे।

अगर आप मेडिकल की सीट छोड़ते, यानी किसी भी कारण से पढ़ाई बीच में छोड़ते हैं तो आपको उस कॉलेज को एक मोटी रकम जुर्माने के तौर पर देनी पड़ती थी जहां से आप पढ़ाई कर रहे होते थे। एमबीबीएस, बीडीएस के लिए यूपी सरकार मेडिकल कॉलेजों में एक लाख रुपए और निजी मेडिकल कॉलेजों में पूरी फीस देनी पड़ती थी। जबकि पीजी की सीट छोड़ने पर पांच लाख रुपए का जुर्माना देना होता था।

अब यूपी की योगी सरकार ने मेडिकल की पढ़ाई बीच में छोड़ने वाले छात्रों पर लगाया जाने वाला जुर्माना हटा दिया है लेकिन, अगले साल फिर से दाखिला लेने पर रोक बरकरार रहेगी। हालांकि, इस बड़े फैसले के साथ ही मेडिकल सीट लिविंग बॉन्ड भरवाने का नियम खत्म करने वाला यूपी दूसरा राज्य बन गया है। इससे पहले मध्यप्रदेश ऐसा फैसला कर चुका है।

मेडिकल एजुकेशन महानिदेशक, किंजल सिंह ने बताया कि एमबीबीएस कोर्स छोड़ने वाले छात्र पहले से ही बहुत दबाव में होते हैं क्योंकि वे एक सुनहरा करियर छोड़ रहे होते हैं। वे ऐसा अंतिम विकल्प के रूप में करते हैं और उनके पास वाजिब कारण होते हैं, जिनमें आर्थिक कारण भी शामिल हैं। ऐसी स्थिति में, सरकार ने सोचा कि उनसे जुर्माने के रूप में पैसे लेना सही फैसला नहीं है। इसलिए जुर्माने के वित्तीय हिस्से को खत्म कर दिया है। किंजल ने नेशनल मेडिकल कमीशन (एनएमसी) के साथ बातचीत के आधार पर एक प्रस्ताव भेजा था। उन्होंने कहा कि जुर्माने का दूसरा हिस्सा वही रहेगा जहां एक उम्मीदवार को अगले साल नीट एग्जाम और काउंसलिंग में भाग लेने से रोक दिया जाएगा।

सिंह ने कहा कि हम यूपी में एमबीबीएस सीट्स और कॉलेजों की संख्या बढ़ा रहे हैं। हमारा ध्यान ज्यादा से ज्यादा उम्मीदवारों को डॉक्टर बनने में मदद करना है। इसलिए, छात्रों के हित में सीट छोड़ने के बॉन्ड में उल्लिखित वित्तीय दंड को खत्म करने का निर्णय लिया गया है लेकिन यहां पैसा महत्वपूर्ण नहीं है ऐसे में, हमें उम्मीदवार के साथ सहानुभूति रखने की जरूरत है, इस फैसले को ध्यान में रखते हुए कि वे

अपना पूरा करियर दांव पर लगा रहे हैं। यूपी में वर्तमान में 60 से ज्यादा मेडिकल कॉलेजों में 9278 एमबीबीएस और 2070 बीडीएस सीटें हैं। एक दर्जन से ज्यादा नए मेडिकल कॉलेजों के 2024 नीट काउंसलिंग में शामिल होने की उम्मीद है। यूपी में एमबीबीएस सीटों की संख्या 10,000 से ज्यादा होने की उम्मीद है।

जंगल में छुपे आतंकी... किसी बड़ी वारदात की फिराक में, पुलिस के अतिरिक्त महानिदेशक आनंद जैन का दावा

जम्मू । जम्मू संभाग में आतंकियों के सात दल सक्रिय हैं। ये दल अलग-अलग इलाकों में बड़े हमले को अंजाम देने की कोशिश में हैं। यह दावा पुलिस के अतिरिक्त महानिदेशक आनंद जैन ने किया। उन्होंने कहा कि राजौरी, पुंछ, डोडा और किश्तवाड़ में ये आतंकी सक्रिय हैं। तीन से चार दल डोडा, किश्तवाड़ में सक्रिय हैं। ये जंगल में छिपे हैं। आतंकियों को ढेर करने के लिए लगातार अलग-अलग इलाकों में सेना और पुलिस मिलकर तलाशी अभियान चल रही हैं। जैश के तीन पाकिस्तानी आतंकियों को मुठभेड़ के दौरान मार गिराना सुरक्षाबलों के लिए बड़ी सफलता है। सूत्रों का कहना है कि अभी यह स्पष्ट नहीं है कि मुठभेड़ में मारे गए आतंकी इलाके में सक्रिय छह से सात दहशतगर्दों के समूह का हिस्सा हैं अथवा कोई नया ग्रुप घुसपैठ करके आया है। इस बारे में अभी जांच चल रही है। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि गुरुवार को जिनकी संपत्ति जब्त की गई, वह सभी पट्टन तहसील के रहने वाले हैं। इसमें बशीर अहमद गनई निवासी तिलगाम, मेहराजुदीन लोन निवासी खारगाम, गुलाम मोहम्मद यत्तु निवासी तिलगाम, अब्दुल रहमान बट निवासी वनिगाम पायीन और अब्दुल रशीद लोन निवासी सतरीसीरन हैं। पुलिस ने बारामुला में आतंकियों के पांच सहयोगियों नौ कनाल (एक एकड़ से अधिक) जमीन कुर्क कर ली।

फ्लाइट के टॉयलेट में व्यक्ति ने जलाई सिगरेट.....फिर हुआ एक्शन

मुंबई। दिल्ली से मुंबई जाने वाली इंडिगो फ्लाइट के टॉयलेट में एक व्यक्ति सिगरेट पीने लगा। सिगरेट जलाते ही स्मोक सेंसर सक्रिय हो गया। यात्री के बाहर आने पर केबिन क्रू ने टॉयलेट चेक की तब वहां जली हुई सिगरेट मिली। विमान की मुंबई में लैंडिंग के बाद यात्री को थाने ले जाकर केस दर्ज कर लिया गया है। अधिकारी ने बताया कि यह घटना दिल्ली से मुंबई जाने वाली इंडिगो की फ्लाइट में हुई। 176 यात्रियों को लेकर फ्लाइट ने शाम करीब 5.15 बजे दिल्ली एयरपोर्ट से उड़ान भरी। मुंबई एयरपोर्ट पर लैंडिंग से करीब 50 मिनट पहले यूपी निवासी 38 वर्षीय खलील कजम्मुल खान नाम का यात्री टॉयलेट गया। तभी खान विमान के टॉयलेट के अंदर सिगरेट पीने लगा। जैसे ही सिगरेट चलाई, तभी स्मोक सेंसर ने केबिन क्रू को अलर्ट कर दिया। केबिन क्रू ने इस बारे में अपने वरिष्ठ अधिकारियों को सूचना दी। चालक दल के सदस्यों ने यात्री से पूछताछ की तब खान ने टॉयलेट के अंदर स्मोकिंग करने की बात भी स्वीकार की। विमान के लैंड होते ही खलील कजम्मुल खान को सहार पुलिस थाने ले जाया गया।

बस पर आतंकी हमले के बाद वैष्णो देवी के दर्शन करने कम पहुंच रहे श्रद्धालु

-सरकार ने किए सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम, सीसीटीवी कैमरों से रखी जा रही नजर

नई दिल्ली। पिछले दिनों श्रद्धालुओं की बस पर हुए आतंकी हमले के बाद माता वैष्णो देवी जाने वाले श्रद्धालुओं की संख्या में गिरावट आई है। पहले रोज करीब 50 से 55 हजार श्रद्धालु आते थे लेकिन कटरा में आतंकी हादसे के बाद से श्रद्धालुओं की संख्या घटकर 25 से 30 हजार रह गई है। वहीं, अब 29 जून से अमरनाथ यात्रा भी शुरू हो रही है। तीर्थ यात्रियों का पहला जत्था आज कश्मीर पहुंचेगा। यात्रा को लेकर सरकार ने सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए हैं। आतंकी गतिविधि पर कड़ी नजर रखने के लिए पूरे मार्ग पर सीसीटीवी कैमरे लगाए गए है। उधर, सरकार ने माता वैष्णो देवी जाने वाले मार्गों पर भी सुरक्षा बढ़ा दी है। इस बीच सरकार और श्राइन बोर्ड ने भी अपील की है कि वैष्णो देवी आने वाले श्रद्धालु बिना किसी डर के आएं। श्रद्धालुओं की संख्या में गिरावट के बाद कटरा मेन बाजार में ग्राहकी धीमी है। भक्तों की रौनक कम ही दिखाई दे रही है। एक दुकानदार का कहना है कि आतंकी हमलों के बाद दरबार में आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या काफी कम है। खरीदारी के लिए आने वाले लोग भी नहीं आ रहे हैं। जून माह में छुट्टियां होने के कारण हर साल लाखों श्रद्धालुओं बड़ी संख्या यहां पहुंचते थे लेकिन आंतकी हमले से लोग डरे हैं और इस कारण बाजार की रौनक खत्म हो गई है।

जलभराव के बाद सड़क पर भाजपा पार्षद ने चलाई नाव, सरकार पर लगाए आरोप

नई दिल्ली। दिल्ली-एनसीआर में शुक्रवार तड़के मूसलाधार बारिश से कई इलाके डूब गए। सड़कें तालाब बनी गई और इससे सड़क और वायु यातायात प्रभावित हुआ है। वहीं दिल्ली बीजेपी के पार्षद का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है जिसमें रविंद्र सिंह नेगी सड़क पर पानी में नाव चलाते नजर आ रहे हैं। पार्षद नेगी ने दिल्ली में जलभराव को लेकर कहा कि पीडब्ल्यूडी का नाला ओवरफ्लो है। दिल्ली की आम आदमी पार्टी (आप) सरकार ने मानसून से पहले नालों की सफाई नहीं करवाई। हम सदन में बार-बार इस मुद्दे को उठाते रहे हैं, लेकिन आप सरकार को शर्म तक नहीं आती। दिल्ली नगर निगम में आम आदमी पार्टी की सरकार है। दिल्ली के लोग बेहाल हैं, विनोद नगर पूरा डूब गया है लेकिन इनके कानों पर जूं तक नहीं रेंग रही है। बता दें कि दिल्ली-एनसीआर में बारिश लोगों के लिए राहत के साथ ही आफत बन गई है। भारी बारिश के बाद सड़कें तालाब की तरह नजर आ रही हैं। वहीं दिल्ली एयरपोर्ट टर्मिनल-1 पर पार्किंग की छत गिरने से एक व्यक्ति की मौत हो गई है जबकि चार लोग घायल हो गए हैं। बारिश के बाद दिल्ली और आसपास के कई इलाकों में पानी भर गया है। सफदरजंग में आज सुबह 8:30 बजे तक 228.1 मिमी बारिश दर्ज की गई।

बीमा की रकम के लिए मानसिक विक्षप्त को बेटे के कपड़े पहनाकर जिंदा जलाया, 18 साल बाद खुलासा

आगरा। कुकर्म कभी छिपता नहीं है। इसकी नजीर वो पाखंडी व्यक्ति बना है जिसने एक मानसिक रुप से विक्षिप्त व्यक्ति को खुद के बेटे के कपड़े पहनाकर कार में जिंदा जला दिया। उसकी मौत हो गई तो बीमा कंपनी से 56 लाख रुपए ले लिए। अंतत- 18 साल बाद यह पाप उजागर हो गया और आरोपी सलाखों के पीछे पहुंच गया। आगरा के थाना रकाबगंज पुलिस ने 18 साल पुराने हत्या के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी ने 18 साल पहले फर्जी मौत दिखा कर बीमा कंपनी से 56 लाख रुपए हड़पे थे। आरोपी ने अपने बेटे की जगह 18 साल के मानसिक विक्षिप्त को कार में जिंदा जलाकर मार दिया था और बीमा कंपनी से क्लेम लेकर गुजरात में पहचान छिपाकर कर रह रहा था। बिजनेस में नुकसान होने पर विजयपाल ने मौत की झूठी साजिश रची थी। विजयपाल ने अपने बेटे अनिल की झूठी मौत दिखा कर बीमा कंपनी से लाखों रुपए ऐंठ लिए और फरार हो गया। विजयपाल ने अपने बेटे अनिल की जगह एक मानसिक विक्षिप्त भिखारी को उसके कपड़े पहनाकर उसकी हत्या कर दी। इसके बाद बेटे के नाम से कराई गई बीमा पॉलिसी का 56 लाख रुपए लेकर गुजरात चला गया। इस सनसनीखेज मामले का नवंबर 2023 में अहमदाबाद की क्राइम ब्रांच ने मुख्य आरोपी को गिरफ्तार करके खुलासा किया था। अब आगरा की रकाबगंज पुलिस ने विजय पाल के दोस्त रामवीर को गिरफ्तार किया है। विजय पाल ने दोस्त रामवीर और अभय सिंह के साथ मिलकर यह खौफनाक साजिश रची थी।

आरबीएसई.....अगले साल फरवरी में होगी 10वीं और 12वीं बोर्ड परीक्षा

अजमेर । राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (आरबीएसई) ने 2024 सप्लीमेंट्री बोर्ड एग्जाम के साथ अगले साल होने वाले बोर्ड एग्जाम 2025 की तारीख भी जारी की है। राजस्थान बोर्ड 25 जुलाई से सप्लीमेंट्री परीक्षा के प्रैक्टिकल और अगस्त से थ्यौरी परीक्षा आयोजित करेगा, जबकि 10वीं और 12वीं बोर्ड परीक्षा 2025 फरवरी से शुरू होंगी। राजस्थान बोर्ड सचिव कैलाश चन्द्र शर्मा ने बताया कि राजस्थान बोर्ड परीक्षा 2025 के तहत सीनियर सेकेंडरी (कक्षा 12वीं) की परीक्षा 20 फरवरी और सेकेंडरी परीक्षा (कक्षा 10वीं) 27 फरवरी से आयोजित करेगा। इनके आवेदन की तिथियां भी निर्धारित की गई हैं। बोर्ड सचिव ने बताया कि प्रशासक महेश चन्द्र शर्मा के निर्देशानुसार परीक्षा तारीखें निर्धारित की गई हैं। उन्होंने बताया कि वर्ष 2024 की सप्लीमेंट्री एग्जाम (प्रैक्टिकल) 25 जुलाई से एवं सप्लीमेंट्री एग्जाम (थ्यौरी) एक अगस्त से शुरू होगी। सप्लीमेंट्री एग्जाम के लिए आवेदन करने की आखिरी तारीख ऑनलाइन सप्लीमेंट्री एग्जाम शुल्क के लिए सामान्य परीक्षा शुल्क एक से 10 जुलाई तक एवं एक अतिरिक्त परीक्षा शुल्क सहित 11 से 18 जुलाई तक होगी।